प्रज्वल

अंक-2 : 2023

इसरो isro

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार, श्रीहरिकोटा

ज्ञातिभि वर्ण्टयते नैव चोरेणापि न नीयते।
दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम्।।
ज्ञान का रत्न एक महान धन है जिसे विद्वान बांट नहीं सकते, जिसे चोर छीन नहीं सकते,
और जिसका दान क्षय नहीं होता है।

गृह पत्रिका – प्रज्वल : अंक-2

श्री ए राजराजन, निदेशक, एसडीएससी शार	संरक्षक
श्री एम श्रीनिवासुलु रेड्डी, नियंत्रक, एसडीएससी शार	सलाहकार
श्री गोपी कृष्णा पी, वैज्ञा./इंजी.-एसजी, पीपीईजी, एमएसए	मुख्य संपादक
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना, उ.नि., (रा.भा.)	संपादक

संपादक मंडल

श्री चंद्र प्रकाश कोतवाल, वैज्ञा./इंजी. - एसजी, एसएमपीसी	सदस्य
श्री राधा कृष्णन, वैज्ञा./इंजी. - एसएफ, एमएसए	सदस्य
श्री शांतनु कुमार शुक्ला, वैज्ञा./इंजी. - एसएफ, एलएसएसएफ	सदस्य
कु. माधुरी पी, वैज्ञा./इंजी. - एसएफ, एसवीएबी, वॉल्फ	सदस्य
श्री अमित कुमार सिंह, वैज्ञा./इंजी. - एसएफ, एसएमपीसी	सदस्य
श्री अनूप कुमार गुप्ता, वैज्ञा./इंजी. - एसई, स्केंड एवं एएसजी	सदस्य
श्री सेंथिल सेल्वन, वरि. क्र. एवं भं. अधिकारी	सदस्य
श्री सी एच सुधीर कुमार, वैज्ञा./इंजी. - एसडी, एमएसए	सदस्य
श्रीमती रमा देवी डी, वरि. अनु. अधिकारी	संयोजक

आवरण पृष्ठ में सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र की प्रमुख गतिविधि यथा प्रक्षेपण को प्रधानता देते हुए केन्द्र के प्राकृतिक सौंदर्य की आभा दर्शाने का भी प्रयास किया जा रहा है। पुलिकट झील से सटा यह केन्द्र प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध है। यहां हर वर्ष जनवरी के महीने में प्रवासी पक्षियों से झील का नज़ारा देखने लायक होता है। पार्श्व पृष्ठ में हमने ऑस्ट्रेलिया से आने वाले फ्लैमिंगो पक्षियों के चित्र दर्शाए हैं जो झील में एक अलग ही छटा बिखेरते नजर आते हैं। प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, आवश्यक नहीं कि संपादक मंडल की सहमति हो। पत्रिका पूर्ण रूप से हिन्दी अनुभाग द्वारा तैयार कर प्रकाशित की गई है।

आवरण एवं पत्रिका डिजाइन
श्री सीएच सुधीर कुमार

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार
श्रीहरिकोटा रेंज डा.घ. 524 124
श्री पोट्टि श्रीरामुलु नेल्लूर जिला, आं.प्र., भारत
दूरभाष : +91-8623 245060 (6 जं)
फैक्स : +91-8623 222099

Goverment of India
Department of Space
Satish Dhawan Space Centre SHAR
Shriharikota Range P.O. 524 124
SPSR Nellore Dist., AP., India
Telephone : +91-8623 245060 (6 Lines)
Fax : +91-8623 222099

ए. राजराजन
प्रतिष्ठित वैज्ञानिक
निदेशक

A. Rajarajan
Distinguished Scientist
Director

आमुख

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र शार की गृह पत्रिका प्रज्वल के विमोचन के साथ हम इस नए साल का स्वागत करते हैं। गत वर्ष इस पत्रिका ने लेखकों के ज्ञान और सृजनात्मक लेखन कला और तकनीकी साहित्य के संग्रह को बढ़ाने के साथ-साथ अगली पीढ़ी को अंतरिक्ष कार्यक्रमों के संबंध में जानकारी देने, उसके उत्तरोत्तर विकास का साक्षी बनने के लिए अपना पहला कदम रखा।

सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र शार मुख्य रूप से इसरो के प्रक्षेपण यान मिशनों यथा पीएसएलवी, जीएसएलवी, माक-III के प्रक्षेपण में प्रयुक्त ठोस मोटरों के उत्पादन के लिए उत्तरदायी है। वर्ष 2022 हमारे लिए काफी सफलताएं लेकर आया। जीएसएलवी-माक-III द्वारा सफलतापूर्वक प्रक्षेपित 36 उपग्रहों के साथ भारत एक सक्षम राष्ट्र बन गया है जहां हम न केवल अपने बल्कि अन्य देशों के संचार उपग्रहों का सफलता से प्रक्षेपण कर सकते हैं। इसी दिशा में प्रक्षेपण सुविधाओं के संवर्धन में भी लगे हैं। सॉलिड प्रोपलेंट स्पेस बूस्टर प्लांट (स्प्रॉब) वर्तमान में ठोस मोटरों की सभी सुविधाएं प्रदान करता है लेकिन इसके संवर्धन के लिए एएसएमपी परियोजना को लागू किया गया है ताकि प्रतिवर्ष 9 पीएसएलवी एवं 3 जीएसएलवी उड़ानों के लिए उत्पादन दर में वृद्धि हो सके।

पीएसएलवी एकीकरण सुविधा (पीआईएफ) हमारा एक और प्रयास है। यान के एकीकरण एवं प्रक्षेपण के लिए लगभग 35-40 दिनों का समय लगता है। इसके बाद अगले प्रक्षेपण के लिए मंच को पुनः तैयार करने में 21 दिनों का समय लग जाता है। चूंकि मंच को पुनः सज्जित करना एवं यान का एकीकरण एक क्रम में किया जाना है। एफएलपी से वर्ष में अधिकतम 6 प्रमोचन सीमित हो जाते हैं। अतः पीएसएलवी एकीकरण सुविधा (पीआईएफ) द्वारा संवर्धन की आवश्यक सुविधाएं नियोजित की जाती हैं। एकीकरण, अंतरण एवं प्रक्षेपण यथा इंटीग्रेट, ट्रांसफर तथा प्रक्षेपण (आईटीएल) परिकल्पना को अपनाते हुए एफएलपी का संवर्धन किया है ताकि प्रतिवर्ष अधिकतम 15 प्रक्षेपण किए जा सकें।

जिस प्रकार हम तकनीकी क्षेत्र में विकासोन्मुख रहते हैं उसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन को सुचारू बनाने के प्रयास भी करते हैं। प्रज्वल के द्वारा हम शार की गतिविधियों एवं राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयासों को आपके सामने प्रस्तुत करते हैं। मुझे विश्वास है कि प्रज्वल पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में प्रमुख भूमिका निभाएगी।

मैं प्रज्वल की संपूर्ण टीम तथा इसे तैयार करने के लिए अपने लेखों का योगदान करने वाले लेखकों को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं तथा भविष्य में इसकी निरंतर यात्रा को जारी रखने की कामना करता हूं।

राजराजन

(ए राजराजन)
निदेशक एवं अध्यक्ष
राजभाषा कार्यान्वयन समिति (एसडीएससी)

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र
शार
श्रीहरिकोटा रेंज डा.घ.524 124,
नेल्लूर जिल्ला, आंप्र., भारत
टेलिफोन:+91-8623-245060 (10 जं)
फेक्स:+91-8623-225160

Government of India
Department of Space
Satish Dhawan Space Centre
SHAR
Sriharikota Range P.O. 524 121,
Nellore Dist., A.P., India
Telephones : +91-8623-245060 (10 Lines)
Fax : +91-8623-225160

संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रभावी प्रचार-प्रसार प्रशासनिक क्षेत्रों में जितना अनिवार्य है उतना ही तकनीकी क्षेत्रों में इसे लागू करना जरूरी है क्योंकि हम शोध एवं विकास कार्यों से जुड़े एक संगठन का हिस्सा हैं। पत्रिकाओं के माध्यम से अत्यंत प्रभावी ढंग से हम लोगों को हिन्दी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। वर्ष 2022 में प्रकाशित हमारी गृह पत्रिका प्रज्वल के पक्ष में अच्छी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं।

पिछले साल हमने न केवल गृह पत्रिका का प्रवेशांक विमोचित किया बल्कि राजभाषा को केन्द्र में आगे बढ़ाने के लिए और भी कई कदम उठाए हैं। हमने केन्द्र के प्रभागों में राजभाषा लागू करने के लिए एंटिटि पुरस्कार यानि अवार्ड का शुभारंभ किया है जिसके लिए एक निशच्ति प्रक्रिया का पालन भी किया गया।

प्रशिक्षण के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से कर्मचारियों का डिजिटल डेटाबेस तैयार करने के लिए एक ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करवाया जिसमें लोग अपने विवरण भरते हुए पंजीकरण कर सकते हैं ताकि हम आगे की योजनाएं आसानी से बना सकें। हिन्दी में बात करने के लिए लोगों की झिझक मिटाने के उद्देश्य से हमने बोलचाल की हिन्दी की कक्षाओं का शुभारंभ भी किया है। एसडीएससी शार में हम राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए इसी प्रकार प्रयासरत रहेंगे।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के दौरान प्रकाशित होने वाली सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार की गृह पत्रिका प्रज्वल के दूसरे अंक के प्रकाशन के लिए मैं टीम प्रजवल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

मा. श्रीनिवासुलु रेड्डि
(एम. श्रीनिवासुलू रेड्डी)
नियंत्रक, एस.डी.एस.सी. शार

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र
शार
श्रीहरिकोटा रेंज डा.घ.524 124,
नेल्लूर जिल्ला, आंप्र., भारत
टेलिफोन:+91-8623-245060 (10 जं)
फेक्स:+91-8623-225160

Government of India
Department of Space
Satish Dhawan Space Centre
SHAR
Sriharikota Range P.O. 524 121,
Nellore Dist., A.P., India
Telephones : +91-8623-245060 (10 Lines)
Fax : +91-8623-225160

संपादक की कलम से

रुचिकर सामग्री को सरल भाषा में पिरोकर सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार की गृह पत्रिका प्रज्वल का दूसरा अंक आपके हाथों में सौंप रहा हूं। इसकी परिकल्पना राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए की गई। प्रज्वल के प्रवेशांक का प्रकाशन कर इसका विमोचन 29 जून 2022 को श्री एस सोमानाथ, अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग के करकमलों से किया गया।

प्रथम सफल प्रकाशन से हमारा उत्साह बढ़ा और हमने इसे और निखारने के लिए इसके दूसरे अंक को नए रूप में सजाकर आपके सामने प्रस्तुत किया है। इसरो एवं एसडीएससी शार की गतिविधियां, कर्मचारियों की उपलब्धियां, रचनात्मक लेख, प्रक्षेपण से जुड़ी जानकारियां आदि सभी कुछ साझा करने का प्रयास किया है।

हमारा प्रयास रहेगा कि हर वर्ष प्रज्वल से कुछ न कुछ नए लेखक जुड़ते रहें और इसकी सामग्री को हम आप सभी के लिए और भी उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक बनाएं। प्रवेशांक की प्रतिक्रियाओं से लगता है कि इसकी साज-सज्जा एवं सामग्री से लोग आकर्षित हुए हैं। अतः इस वर्ष हमने एक अतिथि लेख को भी शामिल किया है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हम अपने पंख हर ओर फैलाना चाहते हैं। इस वर्ष जो नई परिपाटी आरंभ की गई है, हम प्रयास करेंगे कि उसे हर अंक का हिस्सा बनाएं। आशा है कि आपको प्रजवल का यह अंक पसंद आएगा।

पी गोपीकृष्णा

(पी गोपी कृष्णा)
समूह निदेशक, एमएसजी एवं मुख्य संपादक

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351

तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,

केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि

अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से;

अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से

अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे,

उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे;

अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए;

अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल

और प्रभावशाली बनाते हुए

राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे।

हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

अंक-2 में ...

क्र.सं.	लेख	लेखक का नाम	
1.	प्रज्वल के प्रवेशांक का विमोचन		1
2.	राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियाँ		2
3.	सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से पिछले साल में हुए प्रमोचन		6
4.	अध्यक्ष, इसरो द्वारा एएसएमपी सुविधाओं का दौरा		9
5.	ठोस मोटर नोदक परिसर		11
6.	पीएसएलवी एकीकरण सुविधा (पीआईएफ)		13
7.	ठोस नोदक का विकास	चंद्रप्रकाश कोतवाल	14
8.	काइज़ेन प्रबंधन तकनीक	टी अनिल कुमार	16
9.	भारत में एक से अधिक समय क्षेत्र (टाइम ज़ोन)	विभांशु कुमार	18
10.	पेड़	आयति बलौनी	20
11.	एसटीपी - एक स्मृति	निधि सिंह	21
12.	एनेस्थीसिया : तथ्य एवं मिथ्य	डॉ. आरती कौल	22
13.	चुटकुला और पंक्तियाँ	तनिषा पंकज आनंद	25
14.	हो प्रज्ज्वल	जाधव दशरथ श्रीहरि	26
15.	श्रीहरिकोटा	एल आर मिथुना	27
16.	नौकरी	शिप्रा पोरवाल	28
17.	रूपांतरण	कमल दीप रस्तोगी	29
18.	भारतीय कला-संस्कृति: एक झलक	रिचा रानी	30
19.	आओ, कहानी से कुछ सीखें...	सदानंद हरिभाऊ पाटिल	32
20.	हिंन्दी	प्रो. पी. सी. कोतवाल	33
21.	फल कृषि और युवा पीढ़ी	सुश्री सौजन्या	34
22.	सोच !!!	सुसांत कुमार साबत	35
23.	मानसिक स्वास्थ्य	सागर चौधरी	36
24.	यात्रा का अनुभव	सीएच उजेषा	37
25.	गुरु	ब्रायन एम	37

क्र.सं.	लेख	लेखक का नाम	
26.	मेरी उदयपुर की यात्रा	कुलदीप शाक्य	38
27.	स्वतंत्रता संग्राम की सबसे छोटी सैनानी - मैना	हितेश बाबू	40
28.	हौसलों की उड़ान	नम्या गुप्ता	41
29.	परमात्मा का साथ	अनुप कुमार गुप्ता	42
30.	अनोखी शक्ति	शिप्रा प्रसाद	43
31.	मगर	चिंगाखम प्रताप सिंह	44
32.	दृष्टिकोण	सीएच गायत्री	45
33.	हमारी विरासत	रमेश चंद्र प्रसाद	46
34.	पानी	संतोष तुपसैंदर	48
35.	हमने देखा	डॉ. अतुल कुमार दूबे	49
36.	सुविचार	रमा देवी दूड़ला	49
37.	एक कप चाय	मीनाक्षी सक्सेना	50
38.	सकारात्मकता - सफलता की कुंजी	डॉ. ए रामलिंगेश्वर राव	52
39.	याद आता है बचपन	तेजस रस्तोगी	53
40.	अपना देश-भारत	पंकज आनंद	54
41.	माँ का प्यार	पी. यश्विनी	55
42.	एक खूबसूरत शहर हैदराबाद की मेरी यात्रा	दीपशिखा पात्र	56
43.	ताजमहल की सैर	अभिलाषिनी के	57
44.	आभार	शेक ज़रीना	58
45.	सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार की गतिविधियाँ		59
46.	2021-स्वच्छता पखवाड़ा पुरस्कार		67
47.	प्रज्वल के प्रवेशांक के श्रेष्ठ 3 पुरस्कृत लेख		68
48.	वार्षिक हिंदी प्रोत्साहन योजना (सोलिस)		68
49.	सायोनारा		69
50.	हमारे प्रशंसक		71

प्रज्वल के प्रवेशांक का विमोचन

"गुरु महिमा
में डूब कर प्रगाढ़ तू बुद्धि कर"
सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र शार की गृह पत्रिका प्रज्वल के प्रवेशांक का प्रकाशन वर्ष 2022 में किया गया। इसका विमोचन अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग के करकमलों द्वारा 29 जून, 2022 को किया गया।

प्रज्वल ने कर्मचारियों के मन में अपनी ओर से हिन्दी में लेख लिखने की ज्वलंत इच्छा पैदा कर दी है। परिणामस्वरूप हमें इस वर्ष दूसरे अंक के लिए ढेर सारे लेख प्राप्त हुए हैं। प्रज्वल का प्रकाशन नियमित रूप से किया जाता रहेगा।

प्रज्वल के विमोचन का दृश्य

विमोचन के पश्चात पत्रिका का गहन अवलोकन करते हुए अध्यक्ष, इसरो की ओर से एक सवाल "पत्रिका का नाम प्रज्वल ही क्यों रखा गया?" पत्रिका का अवलोकन करते हुए श्री एस सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो एवं श्री ए राजराजन, निदेशक, एसडीएससी शार

विश्व हिन्दी दिवस

प्रदर्शनी में पुस्तकालय में उपलब्ध कुछ पुस्तकें रखी गयीं तो कुछ नई पुस्तकें भी रखी गयीं। पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर उनकी सिफारिश के अनुसार कुछ नई पुस्तकें खरीदी गईं।

हर वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र शार में कुछ प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम एवं एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताएं कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गईं। पुस्तक प्रदर्शनी भी ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों में आयोजित की गई।

कर्मचारियों के लिए कार्यगोष्ठी

वर्ष के दौरान हर तिमाही में कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर चयनित समूह के लोगों को उनके कार्य स्थल में राजभाषा के उपयोग के संबंध में कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। इतना ही नहीं इन कार्यगोष्ठियों के दौरान उन्हें प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में भी जागरूक किया गया।

वैज्ञानिकों के लिए आयोजित कार्यगोष्ठी में अंतरिक्ष विभाग से आमंत्रित अतिथि वक्ता द्वारा राजभाषा के उपयोग एवं उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक सत्र का आयोजन किया गया।

कर्मचारियों के लिए कार्यगोष्ठी

सहायक वर्ग के कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यगोष्ठी में उनके कार्य स्थल में दिन-प्रतिदिन राजभाषा का उपयोग कर कार्यान्वयन को और प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है। इस पर विशेष सत्र के लिए सैक, अहमदाबाद से अतिथि वक्ता के साथ प्रतिभागी गण।

राजभाषा कार्यक्रम

हर वर्ष सितंबर माह में हिन्दी कार्यक्रमों के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया जाता है। वर्ष 2022 में यह कार्यक्रम सूरत, अहमदाबाद से आरंभ हुआ। लेकिन, एसडीएससी शार में अधिकारियों ने सभी कर्मचारियों को 14.09.2022 को राजभाषा शपथ दिलवाई। इस शपथ ग्रहण समारोह में प्रत्येक एंटिटि के प्रधान द्वारा शपथ दिलवाई गई। कुछ एंटिटि द्वारा हमें इसकी झलकियां भेजी गईं।

14 सितंबर, 2022 को एसडीएससी के वाल्फ (VALF) में शपथ ग्रहण करते वैज्ञानिक।

14 सितंबर को LSSF में शपथ ग्रहण करने की एक झलक

14 सितंबर को SMP & ETF में शपथ ग्रहण करने की एक झलक

राजभाषा कार्यक्रम

सितंबर माह में कर्मचारियों के लिए विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल के बच्चों के लिए भी कुछ प्रतियोगिताएं विशेष रूप से आयोजित की गईं। इन सबकी एक झलक यहां प्रस्तुत की जा रही है।

कर्मचारियों के लिए आयोजित विविध कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम महसूस करो और लिखो की एक झलक।

बच्चों के लिए वर्ग पहेली प्रतियोगिता, अंतरिक्ष केंद्रीय विध्यालय (एससीएस), पुलिकट नगर (पीसीएन) में

वर्ग पहेली प्रतियोगिता, अंतरिक्ष केंद्रीय विध्यालय (एससीएस) शार में

पेंटिंग प्रतियोगिता, पीसीएन के विद्यालय में

पेंटिंग प्रतियोगिता, डीओएस के विद्यालय में

वीएसएससी द्वारा आयोजित अंतर केन्द्र तकनीकी संगोष्ठी जिसे ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया था। राजभाषा सत्र के दौरान प्रस्तुत लेखों में श्री दशरथ जाधव श्रीहरि, अंतरिक्ष केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापक द्वारा प्रस्तुत लेख को श्रेष्ठ लेख का पुरस्कार दिया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण

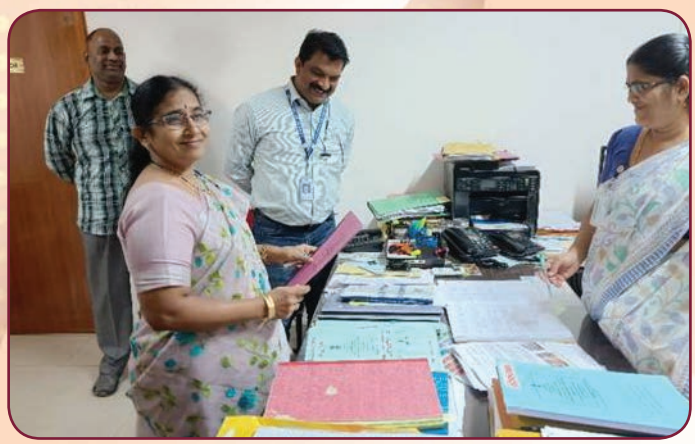

निरीक्षण समिति के सदस्यों द्वारा एंटिटि का निरीक्षण, चित्र में श्री मार्टिन एवं सुश्री जयलक्ष्मी एलएसएसएफ में राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण करते हुए

निरीक्षण समिति के सदस्य सुश्री पी माधुरी एवं श्री जी वी महेश द्वारा एसएमपी एवं ईटीएफ में राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण

निरीक्षण समिति के सदस्य श्री चन्द्र प्रकाश कोतवाल एवं श्री नीलेश जैन द्वारा कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन के अनुभागों का निरीक्षण

निरीक्षण समिति के सदस्य श्री चन्द्र प्रकाश कोतवाल एवं श्री नीलेश जैन द्वारा कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन के अनुभागों का निरीक्षण

निरीक्षण समिति के सदस्य श्री सीएच सुधीर कुमार एवं श्री जी वी महेश द्वारा वाल्फ का निरीक्षण

सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से पिछले साल हुए प्रमोचन

पीएसएलवी-सी 52

पीएसएलवी - सी52 का प्रथम प्रमोचन मंच से 14 फरवरी, 2022 को सफल प्रमोचन किया गया। इस मिशन में ईओएस-04 सहित INS-2TD एवं INSPIRE Sat-1 नामक उपग्रहों को 529 कि.मी. वृत्ताकार कक्षा में स्थापित किया गया। पीएसएलवी में इस मिशन में पहली बार सुपरकैपेटरी का पिग्गीबैक मोड में प्रयोग किया गया। EOS-04 कृषि, वन संपदा तथा वृक्षारोपण, बाढ़ मैपिंग, मृदा आर्द्रता एवं हैड्रॉलजी संबंधी गतिविधियों का हर मौसम में प्रतिबिंबन करने के लिए इसरो द्वारा निर्मित उपग्रह है। INS-2TD भविष्य में निर्मित किए जाने वाले भारत-भूटान संयुक्त उपग्रह INS – 2B का तकनीकी अग्रगामि है। INSPIRE Sat-1 छात्रों द्वारा निर्मित उपग्रह है।

पीएसएलवी-सी 53

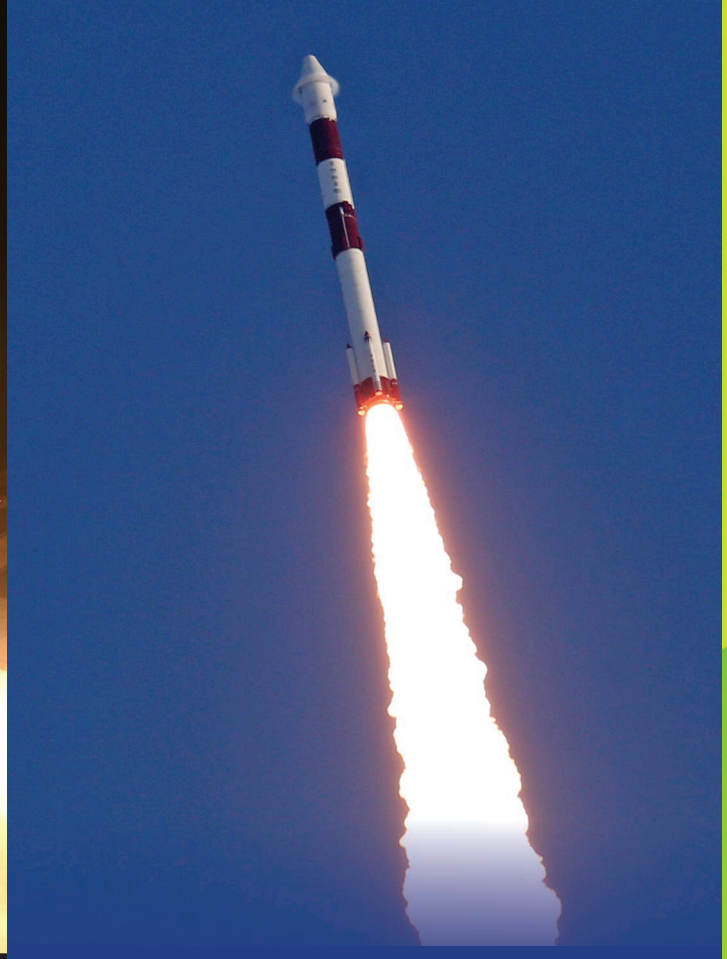

पीएसएलवी - सी53 ने 365 किलोग्राम वजन वाले DS EO एवं Neusar तथा Scoob-1 सहित 30 जून, 2022 को सायंकाल 6:02 बजे द्वितीय प्रमोचन मंच से उड़ान भरी। इस प्रमोचन के लिए पीएसएलवी के 'कोर-एलोन' संस्करण का प्रयोग किया गया। तीनों उपग्रह सिंगापुर से वाणिज्यिक समझौते के अंतर्गत NSIL द्वारा प्रायोजित किए गए हैं। इस मिशन की एक विशेषता यह भी है कि चौथे चरण को पीएसएलवी कक्षीय प्रयोगात्मक मॉड्यूल (POEM) के रूप में विकसित किया गया। यह मॉड्यूल अभिवृत्ति स्थायीकृत है तथा इसके स्वायत्त विद्युत जनन, नौवहन, दूरमिति, दूरादेश ऐवियनिकी आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से पिछले साल हुए प्रमोचन

एसएसएलवी-डी-1

07 अगस्त, 2022 को एसएसएलवी-डी 1 का प्रथम प्रमोचन, केन्द्र के प्रथम प्रमोचन मंच से किया गया। यह प्रमोचन यान तीन ठोस नोदक चरणों से निर्मित है जिसके अंतिम चरण में वेग नियंत्रण के लिए द्रव प्रणोदन चरण का प्रयोग किया जाता है। यान के तीन चरणों में त्रुटि रहित निष्पादन किया किंतु द्वितीय तथा तृतीय चरण के पृथक्करण के दौरान हुए अनपेक्षित असंगति के कारण यान EOS-02 उपग्रह को उसके गंतव्य कक्षा तक नहीं पहुंचा सका।

एसवीएम 3 - एम 2

इसरो का विशालकाय रॉकेट एलवीएम 3 ने अपनी मात्र चौथी उड़ान में वाणिज्यिक मिशन को साकार किया। NSIL द्वारा करार किए गए समझौते के अंतर्गत एलवीएम3-एम2 यान ने 36 वन वेब इंडिया-1 उपग्रहों को लेकर 23 अक्टूबर, 2022 को प्रात: 7:40 बजे द्वितीय प्रमोचन मंच से उड़ान भरी। 90 मिनट से भी अधिक लंबे इस प्रमोचन के लिए इसरो ने क्रायो चरण में तब्दीलियों सहित पोत वहित दूरमिति टर्मिनल का प्रयोग किया।

सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से पिछले साल हुए प्रमोचन

पीएसएलवी-सी 54

पीएसएलवी C54 जो कि यान का XL संस्करण है, 26 नवंबर, 2022 को प्रथम प्रमोचन मंच से मध्यरात्री के 07 मिनट बाद 117 किलोग्राम वजन वाले EOS-06 सहित आठ अन्य उपग्रहों को प्रमोचित किया। उड़ान की पहली कक्षा में EOS-06 का पृथक्करण हुआ। यह उपग्रह इसरो द्वारा निर्मित ओशनसैट श्रेणी का तीसरी पीढ़ी का भूप्रेक्षण उपग्रह है। पीएसएलवी के चौथे चरण पर लगाए गए कक्षा परिवर्तन प्रणोदित्र (OCT) द्वारा निचली कक्षा में पहुंचने के बाद आनंद, INS-2B, थैबोल्ट (2 संख्या) आस्ट्रोकैस्ट (4 संख्या) को निर्धारित वेग एवं अभिमुख पर पृथक किया गया। INS-2B भारत-भूटान संयुक्त उपग्रह है जो बहु स्पेक्ट्रमी प्रतिबिंबन के लिए निर्मित किया गया है।

गैर सरकारी संस्थाओं के लिए एसडीएससी शार की गतिविधियां (एनजीई)

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में संवर्धित प्रतिभागिता के लिए भारत सरकार गैर सरकारी संस्थाओं को प्रोत्साहित कर रही है। एसडीएससी शार एनजीई की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रक्षेपण आधारित ढांचागत संरचनाएं जैसे ठोस मोटर का उत्पादन एवं परीक्षण, एकीकरण, सेवा तथा उप-कक्षीय उड़ानें, प्रक्षेपण यान आदि उपलब्ध कराता है।

हाल ही में, एसडीएससी शार ने मैसर्स स्काईरूट के उप-कक्षीय उड़ान के लिए आवश्यक ढांचागत संरचनाएं उपलब्ध कराईं। इसी प्रकार एसडीएससी शार ने मैसर्स अग्निकुल प्रा. लिमिटेड के लिए भी प्रक्षेपण आधार को साकार करने के लिए आवश्यक सूचना निवेश उपलब्ध कराए।

विशेष आवश्यकताओं के आधार पर एसडीएससी शार की टीम ने मैसर्स स्काईरूप को अध्ययन कर ठोस मोटर उत्पादन के संबंध में आवश्यक सूचना निवेश उपलब्ध कराए।

विक्रम - एस / मिशन

भारत सरकार ने अपनी नवीन नीति के अंतर्गत अन्तरिक्ष संबन्धित कार्यकलापों के लिए निजी संस्थाओं के हित में अपने द्वार खोल दिये हैं। हैदराबाद स्थित निजी कंपनी मैसर्स स्काईरूट एरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 18 नवंबर, 2022 को 11:30 बजे साउंडिंग रॉकेट प्रमोचन परिसर से हुए उपकक्षीय प्रमोचन यान विक्रम-एस के सफल प्रमोचन ने इस संधि की पहल की। इस प्रमोचन को इन-स्पेस द्वारा अधिकृत किया गया। इसरो द्वारा एकीकरण सुविधा, प्रमोचन परिसर, ट्रैकिंग तंत्र एवं सुरक्षा तंत्रों को प्रायोजित किया गया।

इन-स्पेस के अध्यक्ष श्री पवन गोएंका एवं माननीय राज मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह प्रमोचन के साक्षी बने।

अध्यक्ष, इसरो द्वारा एएसएमपी सुविधाओं का दौरा

30-06-2022 को पीएसएलवी-सी53 प्रमोचन के सुअवसर पर इसरो के अध्यक्ष ने एएसएमपी सुविधाओं का दौरा किया। उन्होनें एचआईएल, रोधन मशीनिंग, कच्ची सामग्रियों, प्रठोसन भट्टी, नोदक मशीनिंग, संदमन, एनडीटी एवं संचकन सुविधाओं को देखा। श्री सैय्यद हमीद, परियोजना निदेशक, एएसएमपी ने परियोजना कि समग्र प्रगति के बारें में बताया और कहा कि सिविल कार्य पूर्णता के करीब है और अधिकांश सुविधाओं के लिए उपकरण प्रक्रमण का कार्य पूरा कर लिया गया है।

परियोजना टीम ने संबंधित सुविधाओं में विभिन्न उपकरणों के लिए किए गए प्रक्रम उपकरण विन्यास एवं मुख्य सुधारों के बारें में बताया। सभी एएसएमपी सुविधाओं के लिए तकनीकी सेवा गतिविधियों जैसे विद्युत प्रणाली, यंत्रीकरण प्रणालियों एवं सुरक्षा प्रणालियों के कार्यान्वयन के बारें में अध्यक्ष महोदय को जानकारी दी गई। अध्यक्ष, इसरो ने अभिस्वीकृति प्रदान करते हुए एएसएमपी सुविधाओं के कार्यान्वयन में एएसएमपी परियोजना टीम द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की।

नोदक मशीनिंग सुविधा-2 का उद्घाटन

निदेशक, सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार द्वारा दिनांक 05-08-2022 को एसएमपीसी यूनिट 1 में नई सुविधा नोदक मशीनिंग सुविधा-2 का उद्घाटन किया गया। निदेशक ने पीएसएलवी-सी54 उड़ान के लिए एचईएस-1063 खंड की संदमन मशीनिंग को शुरू करने लिए मशीन को स्विच ऑन कर सुविधा का उद्घाटन किया।

इस सुविधा का उपयोग एस139 खंड/एचपीएस3 मोटरों की नोदक मशीनिंग और एस139 खंडों की संदमन मशीनिंग के लिए किया जाता है। उपकरण एवं मशीन, एलवीएम3/एचएलवीएम3 मिशन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संशोधित अंत रिंग सहित एस200 एचईएस की नोदक एवं संदमन मशीनिंग के लिए सक्षम है। मौजूदा सुविधा में 3.6 मीटर व्यास एवं 40 टन भार क्षमता की तुलना में नई सुविधा में कार्यान्वित घूर्णी पटल का व्यास 4 मीटर एवं भार क्षमता 50 टन है। मौजूदा सुविधा में 5 मीटर की तुलना में नई सुविधा में 5.5 मीटर की कार्य तुंगता को समायोजित किया जा सकता है और नई मशीन को नवीनतम सीमेंस 840 टीएसएल नियंत्रण प्रणालियों के साथ कार्यान्वित किया गया है।

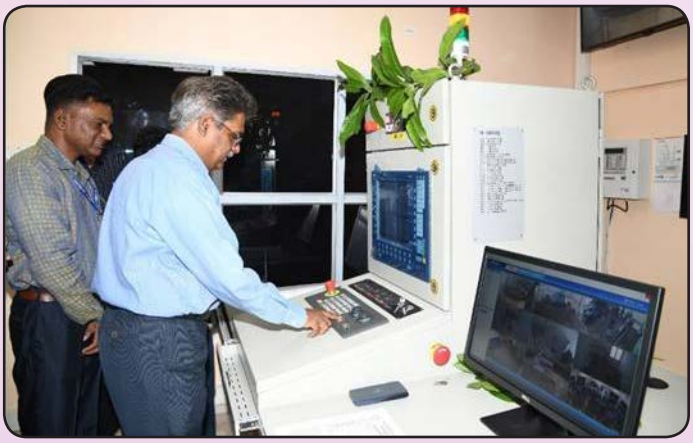

एसएमपीसी इकाई1 में भाप विसंक्रामक सुविधा का उद्घाटन

निदेशक, एसडीएससी शार द्वारा 22-09-2022 को एसएमपीसी यूनिट 1 में नई भाप विसंक्रामक सुविधा का उद्घाटन किया गया। निदेशक ने भाप विसंक्रामक मशीन को स्विच ऑन कर इस सुविधा का उद्घाटन किया और एलवीएम3 यान के चिन्हित एस200-एसएसए-1106 का वल्कनीकरण प्रारंभ किया।

इस सुविधा का उपयोग एस139 हार्डवेयर, एचपीएस3/एसएस2/एसएस3 मोटरों के वल्कनीकरण और एस200,

एचपीएस3/एसएस2 मोटरों की बाल्टी फ्लैंज के लिए किया जाता है। नई भाप विसंक्रामक को पहली बार नेशनल एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एनएएल) द्वारा देश में ही डिजाइन एवं विकसित किया गया है। यह पुराने भाप विसंक्रामक जो 3.4 मीटर व्यास एवं 5.2 मीटर दैर्घ्य कार्यों को समायोजित कर सकता है की तुलना में 3.6 मीटर व्यास एवं 5.5 मीटर दैर्घ्य कार्यों का समायोजित कर सकता है। यह भाप विसंक्रामक एलवीएम3/एचएलवीएम3 मिशन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संशोधित अंत रिंग सहित एस200 एचईएस को प्रक्रम करने के लिए सक्षम है। इसे उन्नत एससीएडीए एवं पीएलसी नियंत्रित प्रणालियों द्वारा विकसित किया गया है।

ठोस मोटर नोदक परिसर

ठोस मोटर नोदक परिसर ने एलवीएम3/एम2 उड़ान के लिए एस200 मोटर खंड और एसएसएलवी/डी1 उड़ान के लिए एसएस1, एसएस2, एसएस3 खंड/मोटर प्रदान किया गया

- ठोस मोटर नोदक परिसर ने सभी 6 खंड आईआर1 मशीनिंग के पश्चात एलवीएम3/एम2 उड़ान के लिए प्रदान किया (23-10-2022 को प्रमोचन)।
- ठोस मोटर नोदक परिसर ने सभी तीनों खंड प्रसंस्करण के पश्चात एसएसएलवी-डी1 उड़ान के लिए प्रदान किया (07-08-2022 को प्रमोचन)।
- ठोस मोटर नोदक परिसर ने सभी एस139 खंड और एचपीएस3 मोटर पीएसएलवी-सी52, पीएसएलवी-सी53 एवं पीएसएलवी-सी54 के लिए प्रदान किया।

ठोस मोटर नोदक परिसर ने जी1 उड़ान के लिए मानव निर्धारित एस200 (एचएस200) मोटर खंड, एम3 उड़ान हेतु एस200 मोटर खंड और एसएसएलवी/डी2 उड़ान के लिए एसएस1, एसएस2 एवं एसएस3 खंडों/मोटरों का प्रसंस्करण किया।

ठोस मोटर नोदक परिसर ने गगनयान उड़ान के लिए 6 एचएस200 खंडों (युग्म नोजल अंत खंड, मध्य खंड एवं ऊपरी खंड) का सफलतापूर्वक प्रसंस्करण किया। प्राप्त यांत्रिक व अंतरफलक गुण, सभी छह खंडों का ज्वलन दर विनिर्देशित मानदंडों के अनुरूप हैं। ऊपरी खंड के लिए आईआर1 मशीनिंग पूर्ण हो चुकी है, नोजल खंड व मध्य खंड के लिए आईआर1 मशीनिंग की प्रक्रिया प्रगति पर है।

एचएस200 / एचईएस का ग्रिट ब्लास्टिंग

एसएस1-एचईएस एवं एमएस

एचएस200/एनईएस की रोधन मशीनिंग

ठोस मोटर नोदक परिसर ने एसएसएलवी-डी2 उड़ान के लिए एसएस1 खंड, एसएस2 एवं एसएस3 मोटर का सफलतापूर्वक प्रसंस्करण किया। प्राप्त यांत्रिक व अंतरफलक गुण, सभी तीन खंडों का ज्वलन दर विनिर्देशित मानदंडों के अनुरूप हैं।

एलवीएम3/एम4 उड़ान के लिए एस200 हार्डवेयर के सभी 6 खंडों का संचकन पूर्ण हो चुका है। प्राप्त यांत्रिक व अंतरफलक गुण, सभी छह खंडों का ज्वलन दर विनिर्देशित मानदंडों के अनुरूप हैं। युग्म नोजल खंड एवं मध्य खंड1 का रेडियोग्राफी पूर्ण हो चुका है। मध्य खंड2, युग्म ऊपरी खंडों के संचकन के पश्चात् की गतिविधियां प्रगति पर हैं। इसके अतिरिक्त, एस139 के 7 खंड, 3 एचपीएस-3 मोटर भी इस अवधि के दौरान पूर्ण किए गय।

एसएसएलवी एसएस1-एमएस खंड की डी-कोरिंग

खंड परिवहन

एचएस200/एनईएस का संचकन

एचएस200/एमएस की रोधन लाइनिंग

एस139 खंडों का संचकन

एस139 खंड का संचकन

वर्तमान में, ठोस मोटर नोदक परिसर एलवीएम3/एम5 उड़ान के लिए एस200 हार्डवेयर के सभी 6 खंडों (युग्म नोजल खंड, मध्य खंड एवं ऊपरी खंड) के प्रसंस्करण के लिए अग्रसरित है। युग्म मध्य खंड, ऊपरी खंड-1 के लिए हार्डवेयर तैयार करने की गतिविधियाँ प्रगति पर हैं। एस200 युग्म मध्य खंडों के संचकन के लिए सामग्री प्रसंस्करण एवं पूर्व मिश्रण गतिविधियाँ प्रगति पर हैं और खंडों का अंतिम मिश्रण व संचकन क्रमश: दिसम्बर 2022 एवं जनवरी 2023 में निर्धारित की गयी हैं।

एसएसएलवी डी3 उड़ान के लिए भी उत्पादन, वर्ष 2023 के प्रथम तिमाही में नियोजित किया गया है।

पीएसएलवी एकीकरण सुविधा (पीआईएफ)

इसरो के कार्यकारी अश्व-पीएसएलवी की आवृत्ति आगामी वर्षों में प्रतिवर्ष छः से बढ़कर पंद्रह तक होने की संभावना है। प्रथम प्रमोचन मंच में अनुसरण होने वाले 'मंच-पर-समुच्चयन' संकल्पना के कारण प्रमोचनों के बीच मंच तथा अंबिलिकल टावर का नवीनीकरण करने के लिए कुछ हफ्तों का अंतराल लेना पड़ता है जब समुच्चयन नहीं किया जा सकता है। पीएसएलवी एकीकरण सुविधा परियोजना के अंतर्गत प्रथम प्रमोचन मंच एवं परिसर में कुछ मूलभूत परिवर्तन करके 'समुच्चयन-स्थानांतरण-प्रमोचन' संकल्पना को लागू करने का प्रावधान है। परियोजना के उद्देश्य में निम्नलिखित पहलू सम्मिलित हैं:

- पीएसएलवी प्रमोचन यान को चौथे चरण तक एकीकृत करने के लिए प्रमोचन मंच से दूर स्थायी भवन का निर्माण।
- तीन चलनशील प्रमोचन मंच जिनके कारण तीन गतिविधियां एकीकृत हो - एक प्रमोचन मंच पर दूसरा एकीकरण भवन में और तीसरा नवीनीकरण के अंतर्गत।
- चलनशील प्रमोचन मंच का प्रमोचन के पश्चात् पुन: नवीनीकरण करने हेतु भवन।
- चलनशील प्रमोचन मंच एवं प्रमोचन यान को वहन करने के लिए बोगी:बोगी को चलित करने के लिए रेल पटरी तथा हॉलर।
- प्रमोचन यान संबंधी परीक्षणों के लिए वातिक तंत्र तथा सुदूर जांच प्रणाली का नियोजन किया गया है।

परियोजना का आरंभ नवंबर, 2017 में हुआ तथा अभिकल्पना के पश्चात् निर्माण-कार्य प्रारंभ हुआ।

देश-विदेश के कई नामी निजी कंपनियों की प्रतिभागिता से परियोजना के सभी तंत्रों एवं निकायों को तैयार किया गया। निर्माण कार्य 2022 के उत्तरार्ध में लगभग पूर्ण हो जाने के बाद, वलन प्लैटफार्म, क्षैतिज स्खलन द्वारों, 125/25टी शिरोपरि क्रेन आदि को भवन में संयोजित किया गया। यूँ तो चलनशील प्रमोचन मंच का पहला निकाय दिसंबर, 2019 में हुए पीएसएलवी सी 48 के लिए तैयार कर दिया गया था। अन्य दो चलनशील प्रमोचन मंचों को 2022 में परीक्षण कर कमीशन कर दिया गया। सिविल, विद्युत एवं वातानुकूलन सहित पूर्णतया तैयार हो जाने के कारण पीएसएलवी समुच्चयन भवन अब जल्द कहीं इसरो के आगामी प्रमोचन मैनिफेस्ट के लिए सेवाएँ उपलब्ध कराने लगेगा।

ठोस नोदक का विकास

चंद्रप्रकाश कोतवाल

अंतिरक्ष हमेशा से मानव मन को आकर्षित करता है। गगन की ऊँचाईयों को छूना किसे अच्छा नहीं लगता जब 4 अक्टूबर 1957 को प्रथम कृत्रिम उपग्रह स्पूतनिक गुरुत्वाकर्षण के बंधन को तोड़कर अंतरिक्ष में पहुँचा, तब से अंतरिक्ष अन्वेषण (Space Exploration) के नए युग की शुरुआत हुई। उसके बाद 12 अप्रैल 1961 को सोवियत नागरिक यूरी गागरिन भी अंतरिक्ष में पहुँच गया, तब से अंतरिक्ष में जाने की होड़ सी लग गई। तभी 1962 में त्रिवेंद्रम के पास थुँबा रॉकेट केन्द्र की स्थापना हुई। फिर 21 नवंबर 1963 को इसी केन्द्र से पहली बार नाइक अपाचे नामक छोटा रॉकेट वायुमंडल में छोड़ा गया और भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान का श्री गणेश हुआ। शुरुआती दौर में जो रॉकेट छोड़े गए वो हमारे देश में नहीं बने थे, फिर त्रिवेंद्रम के पास ही रॉकेट निर्माण के लिए एक नये केन्द्र की स्थापना हुई जहाँ ठोस नोदक पर आधारित रॉकेट का निर्माण शुरू हुआ।

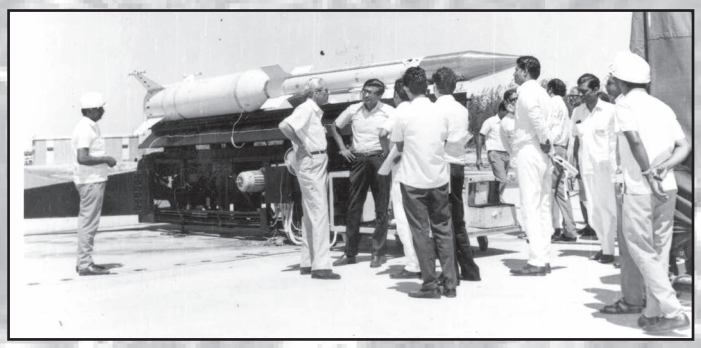

भारत में बने पहले रॉकेट का सफल परीक्षण थुंबा केन्द्र से फरवरी 1969 को किया गया था। शुरुआत में रोहिणी नाम के छोटे ठोस नोदक वाले रॉकेट का निर्माण हुआ।

फिर जब भारत ने अपना कृत्रिम उपग्रह "आर्यभट्ट" बनाया जिसका भार 360 किलो का था, तब उसे अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित करने के लिए हमारे पास इतना शक्तिशाली रॉकेट नहीं था। फिर 10 अक्टूबर 1971 को आँध्रप्रदेश के श्रीहरिकोटा द्वीप पर 'शार' केन्द्र की स्थापना हुई। शार

केन्द्र में एसपीआरओबी (SPROB) संयंत्र की स्थापना हुई। त्रिवेंद्रम में भी ठोस नोदक संयत्र (RPP) की स्थापना हुई। इसरो के प्रमोचन यानों में ठोस नोदक की अहम भूमिका रही है। 30 मि.मी. व्यास एवं 450 ग्राम के छोटे से नोदक से लेकर 320 मि.मी. व्यास एवं 207 टन के भारी बूस्टर तक ठोस नोदक के विकास ने एक लंबा सफर तय किया है। पहले डबल बेस चार्ज वाले 75 मि.मी. व्यास की कैलिबर मोटर को विकसित किया गया। इसका आंतरिक प्रोफाइल 7 प्वॉइंटर स्टार का था और एक्शन समय काल 2 सेकण्ड का था। इसके बाद PVC बेस वाले नोदक पर कार्य शुरू हुआ और 125 मि.मी.से लेकर 560मि.मी. व्यास वाले साउण्डिंग रॉकेट का विकास हुआ।

पीवीसी प्लास्टीसोल बेस का क्यूरिंग तापमान अधिक होता है इसलिए केस बॉडिंग तकनीक का उपयोग नहीं किया जा सका। बड़े प्रमोचन यान के लिए पीबीएएन (PBAN) बेस वाले ठोस नोदक का इस्तेमाल हुआ। सर्वप्रथम SLV-3 रॉकेट का उद्भव हुआ, इसमें प्रथम चरण 1मी.व्यास, 8600 किलो नोदक द्वितीय चरण 0.8 मी. व्यास 300 किलो के थे। तीसरे और चौथे चरण में क्रमश: 1100 किलो और 275 किलो ठोस नोदक भरा पाया। प्रथम और द्वितीय चरण में PBAN बेस नोदक था, और तृतीय एवं चतुर्थ चरण में CTPB बेस नोदक का इस्तेमाल हुआ। SLV3 और ALSV की आंशिक सफलता के बाद, 1984 में बड़े S125 बूस्टर मोटर को बनाने का कार्य शुरू हुआ जिसका व्यास 2.8 मी.तथा ठोस नोदक का भार 125 टन था। बाद में तकनीकी सुधार के बाद नोदक का भार 139 टन किया गया। इसमें HTPB बेस वाले ठोस नोदक का इस्तेमाल किया गया। यह ठोस नोदक आज भी पीएसएलवी (PSLV) और जीएसएलवी मार्क -II रॉकेट का प्रथम चरण है। जो रॉकेट को प्रारंभिक गति और उच्च दाब Thrust प्रदान करता है।

इसके बाद एक नए ठोस मोटर S-200 पर कार्य आरंभ हुआ। ठोस नोदक को बनाने के लिए चरणबद्ध तरीके से कई प्रक्रियाएँ पूरी की जाती हैं। ठोस नोदक निर्माण क्रिया के दो मुख्य भाग हैं। पहला ठोस नोदक पदार्थ की प्रोसेसिंग। विभिन्न पदार्थों को सुखाना, उनका भार मापन, उन्हें पैक करने के बाद मिक्सिंग के लिए भेजा जाता है। यहाँ 2.5 टन के batch साइज के बाउल में प्रीमिक्स प्रक्रिया पूरी की जाती है। प्रीमिक्स बाउल को एक महीने तक इस्तेमाल किया जाता है। दूसरी तरफ हार्डवेयर में रबड़ की लाइनिंग की प्रक्रिया की जाती है। इसके बाद सिरे के रबड़ लाइनिंग पर सीएनसी मशीन द्वारा टंग एवं ग्रूव अंशाकन तैयार किए जाते हैं।

इसके बाद रेसिन लाइनिंग की प्रक्रिया होती है फिर संचकन fixtures समाकलन (Casting fixtures assembly) किया जाता है। इसके बाद प्रीमिक्स बाउल में क्यूरेटर मिलाया जाता है जिसके 4 घंटे के भीतर नोदक को नियंत्रित स्थिति में हार्डवेयर के अंदर भरा जाता है, जिसे संचकन क्रिया कहते हैं। फिर नोदक युक्त हार्डवेयर खंड को क्यूरिंग ओवन (curing oven) में लगभग 10-12 दिन तक क्यूर किया जाता है। इसके बाद डीकोरिंग प्रक्रिया में संचकन fixtures को निकाला जाता है। फिर नोदक को CNC मशीन आदि प्रक्रिया के बाद एक्स-रे तकनीक द्वारा NDT किया जाता है। इसमें सफल होने पर नोदक खंड को मैगज़ीन में भंडारण या प्रमोचन यान के लिए भेजा जाता है। उपरोक्त प्रक्रियाएँ अत्यंत संक्षिप्त में बताई गई है लेकिन वास्तविकता में अत्यंत जटिल प्रक्रिया और कड़ी सुरक्षा एवं गुणवत्ता मानदंड़ो के बाद एक एक कर ठोस नोदक खंड का निर्माण किया जाता है।

समय के साथ ठोस नोदक उत्पादन प्रक्रिया में गुणवत्ता और सुरक्षा के नियमों के साथ अभूतपूर्व प्रगति हुई है। जहाँ पहले हमें एक छोटे से खंड की संचकन क्रिया के लिए 2-3 लगते थे वहाँ अब हम S-200 मोटर का एक खंड जिसमें लगभग 100 टनठोस नोदक भरा जाता है, 20 मी.के अंदर अंदर संचकन क्रिया पूरी हो जाती है। ठोस नोदक एक विस्फोटक पदार्थ है अत: अत्यधिक सावधानी एवं सुरक्षा के साथ इसका उत्पादन किया जा रहा है। ठोस नोदक इसरो सभी रॉकेट में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। और आगे भी ठोस मोटर नोदक संयंत्र (SMPC) देश की प्रगति और उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

काइज़ेन प्रबंधन तकनीक

टी अनिल कुमार

काइज़ेन एक जापानी शब्द है। यह दो जापानी शब्दों से मिल कर बना हुआ है - काइ ज़ेन जिसका अर्थ होता है अच्छा बदलाव अर्थात ऐसा बदलाव जिसे सुधार के लिए किया जा सकता है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसके उपयोग से हम बेहतर सुधार कर सकते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हमारी उत्पादक क्षमता बढ़ जाती है। इतना ही नहीं उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ती है और उसमें त्रुटि की गुंजाइश कम हो जाती है ताकि प्रयोक्ता उसे अस्वीकर न करें और उत्पाद को तैयार करने के लिए लगाया जाने वाला श्रम बर्बाद न हो। इसका सीधा अर्थ निरंतर सुधार से है जो कम पद्धतियों एवं सिद्धांतों के साथ बेहतर परिणाम दे सके। इसकी उत्पत्ति विश्व युद्ध-2 के बाद जापानी गुणवत्ता घेरे में आयी।

किसी भी संगठन में काम करने वाला वह हर व्यक्ति चाहे वह गृह व्यवस्था करता हो या स्टाफ का कोई व्यक्ति हो। वह जो भी काम कर रहा है उसमें निजी रूप से अपने आप छोटे-छोटे सुधार करके उसमें बदलाव लाने की कोशिश करे, काइज़ेन कहलाता है। यदि ऐसा हो तो कोई भी कंपनी दिन प्रतिदिन प्रगति कर सकती है।

काइज़ेन चक्र की गतिविधि को परिभाषित किया जा सकता है योजना कार्य करें जांच करें निष्पादन। इसे शेव्हार्ट चक्र, डेमिंग चक्र अथवा पीडीसीए के नाम से भी जाना जाता है।

काइज़ेन की अभिकल्पना में काम करने के वातावरण को और भी अनुकूल एक अधिक प्रभावी बनाने पर बल दिया जाता है जिसमें दिन प्रतिदिन की प्रक्रिया में सुधार करते हुए, कर्मचारियों को काम में बराबर से शामिल करते हुए काम को रूचिकर, श्रमसाध्य एवं सुरक्षित बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

किसी भी संगठन में दो तरह से गतिविधियां होती हैं। मूल्यवर्धित एवं गैर मूल्यवर्धित अर्थात हम जो काम करते हैं उसमें से काम का बड़ा हिस्सा 90% माना गया है। शेष वह हिस्सा है जो मूल्यवर्धित नहीं माना जाता है। इसमें भी गैर मूल्यवर्धित गतिविधि के दो प्रकार होते हैं। प्रकार-1 व्यर्थ करना तथा प्रकार-2 भी व्यर्थ करना कहलाता है। किसी भी संगठन में तीन प्रकार से व्यर्थता की जाती है।

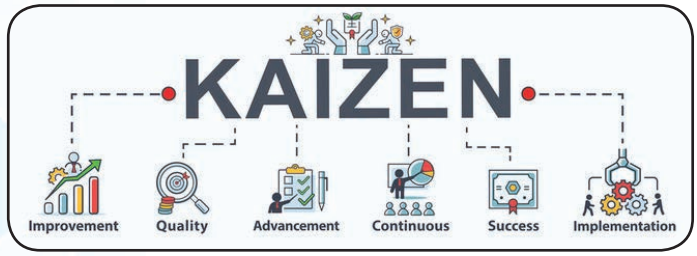

1. जनशक्ति की व्यर्थता
2. मात्रा की व्यर्थता
3. गुणवत्ता की जांच की व्यर्थता

जनशक्ति की व्यर्थताः किसी भी संयंत्र में वस्तु के उत्पादन के लिए आवश्यकता से अधिक जनशक्ति लगा देना ही जनशक्ति की बर्बादी कहलाता है। इतना ही नहीं कहीं-कहीं उत्पाद की गुणवत्ता की जांच के लिए अधिक समय एवं जनशक्ति का उपयोग किया जाता है, वहां भी इसकी बर्बादी ही कहलाता है। जनशक्ति की बर्बादी भी तीन प्रकार से की जाती है।

1. अधिक संसाधन
2. अनावश्यक गति
3. प्रतीक्षा करना

अधिक संसाधनः कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि प्रत्येक वस्तु की गुणवत्ता की जांच की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन समय एवं जनशक्ति का दुरूपयोग करते हुए प्रत्येक वस्तु की जांच के लिए उनका उपयोग किया जाता है तो इसे एक प्रकार की बर्बादी ही कहा जाता है। जहां बार-बार जांच करने की आवश्यकता ही नहीं हो

लेकिन बार बार एक ही उत्पाद का निरीक्षण किया जाए उसे भी संसाधन का दुरूपयोग ही माना जाता है।

अनावश्यक गतिः बिना कारण के कार्यालय के एक स्थल से दूसरे स्थल के बीच चहलकदमी करना, बिना कारण के प्रणालियों या तंत्र की जांच के लिए इधर-उधर जाना, आना। अनावश्यक रूप से जब किसी कंप्यूटर में रखी फाइलों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने ले जाने की प्रक्रिया पर अधिक ध्यान दिया जाए तो उसे अनावश्यक गति कहा जाता है और इसे भी एक प्रकार की बर्बादी की श्रेणी में ही रखा जाता है।

प्रतीक्षा करनाः किसी भी तरह की रोक, बर्बादी के अंतर्गत ही आती है। यदि आपके कार्यालय की कोई मशीन मरम्मत के लिए पड़ी हो और आपके मजदूर काम के लिए प्रतीक्षा कर रहे हों तो इसे भी बर्बादी ही माना जाता है क्योंकि आपका उत्पादन तंत्र रूका हुआ है। आप यदि मशीन की मरम्मत के लिए खर्च नहीं करना चाहते हैं तो आपके मजदूर अन्यत्र प्रतीक्षा करते रहेंगे।

कई बार ऐसा होता है कि उत्पादन बाजार की मांग से अधिक हो गया है। ऐसी स्थिति को मात्रा अपशिष्ट की श्रेणी में रखा जाता है और इसे तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

1. भंडार
2. अधिक उत्पादन
3. परिवहन

भंडारः भंडार प्रबंधन एक ऐसी गतिविधि है जिसमें भंडार में सभी प्रचालनों को चलाने एवं उनके मानीटरन का कार्य किया जाता है। इसकी प्रमुख जिम्मेदारी कर्मचारियों के साथ काम करना, कार्यसूची तैयार करना, आपूर्तिकर्ताओं के साथ आपसी संपर्क रखना तथा उपभोक्ताओं की शिकायतों का समयानुसार निदान करना शामिल है। ऐसे में यदि इनमें से किसी एक भी गतिविधि का सुचारू निष्पादन न हो तो सारी उत्पादन प्रक्रिया पर असर पड़ता है।

अधिक उत्पादनः यह बर्बादी का सबसे बड़ा रूप माना गया है। यदि बाजार में मांग के अनुसार उत्पादन न करते हुए उससे अधिक उत्पादन कर माल बाजार में भेजा जाता है तो इसे संसाधन की पूर्णतः बर्बादी माना जाता है। इतना ही नहीं इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है क्योंकि मांग के अनुसार उत्पादन न करने पर कच्चे माल पर लगाए गए पैसे वसूल नही किए जा सकते, जनशक्ति के उपयोग पर होने वाला व्यय व्यर्थ हो जाता है। इतना ही नहीं उत्पादन के लिए प्रयुक्त जगह भी बर्बाद हो जाती है।

गुणवत्ता की व्यर्थताः यदि उत्पादन के समय उसकी गुणवत्ता को ध्यान में न रखा जाए तो इसे बहुत बड़ी बर्बादी माना जाता है। इसके कई कारण हो सकते हैं। आदमी, मशीन, सामग्री, तरीका, माप और वातावरण, इनमें से किसी भी कारण से उत्पाद की गुणवत्ता बर्बाद हो सकती है। ऐसे में उत्पाद की गुणवत्ता की बार-बार जांच करने की संभावना बढ़ जाती है। अनावश्यक रूप से बार-बार गुणवत्ता की जांच करते रहने से भी उत्पादन पर गहरा असर पड़ता है। यदि बिना जांच किए उत्पाद ग्राहक तक पहुंचा दिया जाता है तो उससे लागत भी बढ़ जाती है और ग्राहक भी संतुष्ट नहीं रहता।

हमें काइज़ेन क्यों करना चाहिएः

1. इससे उत्पादन की क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
2. कच्चे माल और ईंधन की बढ़ती हुई कीमत
3. कम कीमत में अच्छी गुणवत्ता का उत्पाद तैयार किया जा सकता है।
4. ग्राहक की जरूरत के अनुसार अच्छी गुणवत्ता का उत्पादन करना

काइज़ेन के लाभः

1. कार्यप्रणाली में सुधार आएगा।
2. काम आसाना हो जाएगा।
3. सुरक्षित काम होगा।
4. अनावश्यक काम समाप्त हो जाएगा।
5. गुणवत्ता में सुधार आएगा।
6. उत्पादन में सुधार आएगा।
7. उत्पादन का मूल्य कम हो जाएगा।

भारत में एक से अधिक समय क्षेत्र (टाईम ज़ोन)

विभांशु कुमार

क्या आपको पता है दुनिया के छठे सबसे बडे देश आस्ट्रेलिया के तीन समय क्षेत्र हैं, सबसे बड़ा देश रूस ग्यारह समय क्षेत्र का पालन करता है और फ्रांस जो दुनिया के दस सबसे बड़े देशो में भी शामिल नही हैं,12 समय क्षेत्र का पालन करता है जो दुनिया में किसी भी और देशो में सबसे ज्यादा हैं पर भारत में मामला थोड़ा अलग हैं भारत दुनिया में सातवां सबसे बड़ा देश है इतना विशाल देश होने के बाद भी भारत के सभी हिस्से एक ही समय क्षेत्र का पालन करते हैं।

पहले ग्रीनवीच समय क्षेत्र (UTC-समन्वित सार्वभौमिक समय) के बारे में थोड़ा समझते हैं-पृथ्वी गोल है जिससे हम समझ सकते हैं पृथ्वी के प्रत्येक भाग को एक निश्चित समय में निश्चित मात्रा में सूर्य का प्रकाश प्राप्त नहीं होता। पृथ्वी के घूमने और सूर्य के चारों ओर घूमने के कारण दुनिया भर के देश अलग-अलग समय रखते हैं। इस समस्या को सुलझाने के लिये पृथ्वी को 24 काल्पनिक समय रेखाओ से विभाजित किया गया हैं जिन्हे देशांतर कहते हैं देशांतर रेखा एक दूसरे से 15° के अंतर पर हैं इन रेखाओ का उपयोग किसी स्थान का समय पता करने के लिये किया जाता हैं जैसे ही पृथ्वी अपनी धुरी के चारों ओर 15° घूमती है, समय एक घंटे में बदल जाता है, जिससे 360º घूमने से 24 घंटे मिलते हैं। नतीजतन, दुनिया को 24 समय क्षेत्रों में विभाजित किया गया है जो एक घंटे में स्थानांतरित हो गए हैं।

इस सब को सरल करने के लिये इन सभी देशांतर रेखाओं को एक प्रारम्भिक रेखा से मापा जाता हैं जिसे प्राइम मेरिडियन कहा जाता है प्राइम मेरिडियन पर समय को UTC सार्वभौमिक समय कहा जाता है जो लंदन, युनाइटेड किंगडम से होकर गुजरती है।

भारतीय मानक समय - भारतीय मानक समय (IST) 82.5° के देशांतर पर आधारित है , जो उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के पास मिर्जापुर से होकर गुजरता है। यह ग्रीनविच मीन टाइम (GMT) से 5 घंटे 30 मिनट आगे है, जिसे अब को-ऑर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम (UTC-समन्वित सार्वभौमिक समय) कहा जाता है। CSIR-NPL सीएसआईआर-एनआईपीएल (नई दिल्ली) भारत में समय का रक्षक है।

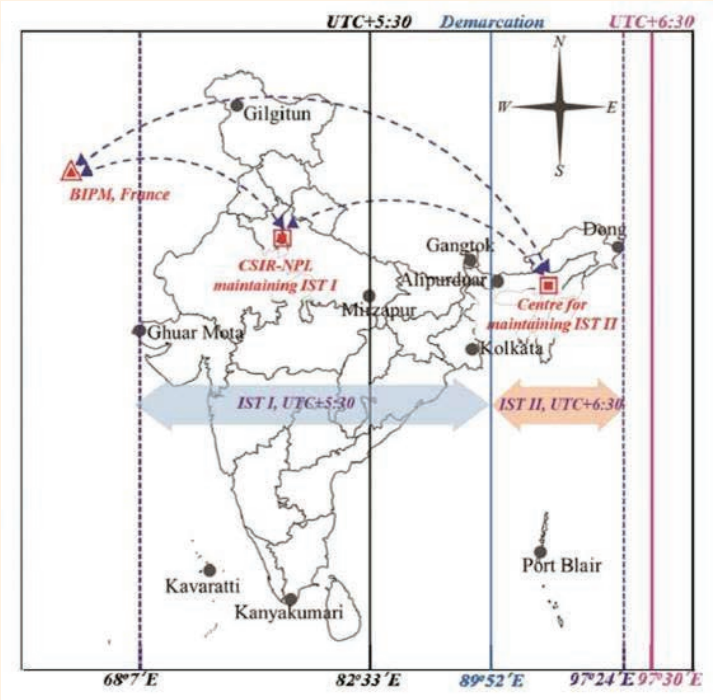

भारत में टाइम जोन पहली बार 1884 में ब्रिटिश राज के दौरान स्थापित किया गया था। स्वतंत्रता से पहले, भारत ने तीन प्रमुख समय क्षेत्रों का पालन किया - मुंबई, कोलकता और मद्रास समय। उस समय अगर कोई व्यक्ति मुंबई से कोलकता तक सफर करता था तो उसे अपनी घड़ी को लगभग एक घन्टा सही करना पडता था।

क्या भारत में दो समय क्षेत्रों की आवश्यकता है?

भारत भौगोलिक रूप से दूसरा सबसे बड़ा देश है (चीन के बाद) जिसके पास कई समय-क्षेत्र नहीं हैं। भारत अरुणाचल में 97°25' पूर्व से गुजरात में 68°7' पूर्व तक फैला हुआ है -लगभग 30 डिग्री देशांतर जो दो समय-क्षेत्रों के लिए पर्याप्त से अधिक है।

भारत के भौगोलिक रूप के कारण दो समय क्षेत्रों की मांग बढ़ी क्योंकि पूर्वोत्तर भारत और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, उनके भूगोल के कारण, देश के बाकी हिस्सों के सापेक्ष जल्दी सूर्योदय और सूर्यास्त देखते हैं। एनईआर ने लंबे समय से उनके जीवन और उनकी अर्थव्यवस्थाओं पर एकल समय क्षेत्र के प्रभाव के बारे में शिकायत की है, वे महत्वपूर्ण दिन के उजाले को खो देते हैं जिसका उपयोग उत्पादक रूप से किया जा सकता है क्योंकि गर्मियों में सुबह 4 बजे सूरज उगता है जबकि सरकारी कार्यालय सुबह 10 बजे खुलते हैं। इन सब कारको का प्रभाव स्वास्थ्य पर भी पड़ता है हमारे शरीर की आंतरिक बॉडी क्लॉक सूर्य के प्रकाश और तापमान जैसे पर्यावरणीय संकेतों से प्रभावित होती है, जो हमारे शरीर को बताती है कि कब सोना है, उठना है और खाना है व अन्य कई शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करती है और यह निर्धारित करती है कि कोई व्यापक रूप से जाग्रत और ऊर्जावान या थका हुआ महसूस करता है या नहीं।

सीएसआईआर के सुझाव: 2006 में तत्कालीन योजना आयोग ने देश को दो टाइम जोन में बांटने की सिफारिश की थी। सीएसआईआर-एनपीएल ने लंबे समय से चली आ रही मांग का समर्थन किया है और दो आईएसटी को एक घंटे के अंतर से अलग करने का सुझाव दिया है:

अधिकांश भारत के लिए IST-I (68°7'E और 89°52'E देशांतर के बीच पड़ने वाले क्षेत्रों को कवर करते हुए)। पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए IST-II (89°52'E और 97°25'E के बीच के क्षेत्रों को कवर करते हुए)।

दो टाइम जोन होने के प्रभाव- लाभ:

दक्षता: इससे कार्यबल और ऊर्जा खपत में अधिक दक्षता आएगी। दो अलग-अलग समय क्षेत्र होने के आर्थिक लाभ हैं, लोग अपने प्राकृतिक चक्रों के अनुसार बेहतर काम करने और बेहतर योजना बनाने में सक्षम होंगे। वास्तव में, असम के चाय बागानों ने अपनी घड़ियों को आईएसटी से एक घंटा आगे कर दिया है, जिससे उनका अपना अनौपचारिक समय क्षेत्र (चायबागान समय) बन गया है।

पर्यावरण संरक्षण: आईएसटी को केवल आधे घंटे तक आगे बढ़ाने से दिन के उजाले के घंटों का उपयोग करके हर साल 2.7 बिलियन यूनिट बिजली की बचत होगी। बिजली की कमी से जूझ रही भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बिजली का संरक्षण महत्वपूर्ण है। सीएसआईआर-एनपीएल के अनुसार, भारत प्रति वर्ष ₹1,000 करोड़ की बचत कर सकता है यदि वह दो समय क्षेत्रों को लागू करके बिजली का संरक्षण कर सकता है।

ऊर्जा की खपत में कमी से भारत के कार्बन फुटप्रिंट में काफी कमी आएगी और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के भारत के संकल्प को बढ़ावा मिलेगा।

सामाजिक लाभ: दो समय क्षेत्रों जैसे सड़क दुर्घटनाओं को कम करने और महिलाओं की सुरक्षा में सुधार किया जा सकता है। इसके अलावा, शोध के अनुसार, एक से अधिक समय क्षेत्र वाले देशों में लोग अपनी ताकत और कमियों पर बेहतर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम थे, जिसके परिणामस्वरूप सर्वोत्तम परिणाम सामने आए। समय क्षेत्र बदलने से कर्मचारियों को स्वस्थ खाने, सोने और काम करने की आदतों को विकसित करने की अनुमति मिली, जिसके सकारात्मक परिणाम थे।

नुकसान: बेमेल समय: कार्यालय समय में बेमेल, बैंकों के लिए अलग-अलग काम के घंटे और एक संभावना है कि रेल दुर्घटनाएं अधिक हो सकती हैं। दो टाइम जोन को लागू करने के लिए रेलवे ट्रैफिक को सिंक्रोनाइज़ करने की आवश्यकता होगी। यह यात्रा के कार्यक्रम में भ्रम पैदा करेगा क्योंकि लोग ज्यादातर सड़क मार्ग से यात्रा करते हैं न कि पश्चिम में जहां उन्हें केवल अपनी घड़ियों को ठीक करने की आवश्यकता होती है।

समय क्षेत्रों की सीमा पर अराजकता: महत्वपूर्ण निरक्षरता के स्तर और कम जागरूकता के साथ, यदि देश को दो समय क्षेत्रों में विभाजित किया गया, तो दो क्षेत्रों के बीच की सीमा पर अराजकता होगी। इसका अर्थ होगा समय क्षेत्र के प्रत्येक क्रॉसिंग के साथ घड़ियों को रीसेट करना।दोनों जोन की डिवाइडिंग लाइन मार्क करने में भी दिक्कत होगी।

विभाजन बढ़ने की संभावना: दो समय क्षेत्रों के प्रतिकूल राजनीतिक परिणाम हो सकते हैं क्योंकि भारत धर्म, जाति, नस्ल, भाषा आदि के आधार पर विभाजित होने के अलावा अब समय क्षेत्र की तर्ज पर विभाजित हो जाएगा।

पेड़

आयति बलोनी
सुपुत्री
श्री देवदत्त बलोनी

पेड़ अच्छे लगते हरे-भरे
फल-फूलों से लदे-लदे
अभिमान इसे छू न पाए
रहते सदा झुके-झुके।
हर दम ये देना ही जाने
कभी न कुछ लेना जाने
कभी फल और कभी फूल

सच्चे हैं ये दोस्त हमारे
आओ मिलकर संकल्प करें
पृथ्वी को पेड़ों से भरें
फिर न होगा दूषित वातावरण
सुन्दर जीवन सुन्दर पर्यावरण।

अतिथि की जुबानी....

एसटीपी - एक स्मृति

निधि सिंह
अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र
(सैक), अहमदाबाद

सौभाग्य हमारा जब हम STP के लिए नामित हुए
आतुरता के साथ इस सुहाने सफर के लिए रवाना हुए।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र आकर हमारा जो सत्कार हुआ
शब्दों में उसका बयान करना मेरे लिए बड़ा दुष्कर हुआ।

उत्सुक मन से हमने श्रीहरिकोटा में प्रवेश किया
हरियाली से भरपूर इस जगह ने मन को मोह लिया।

रोहिणी अतिथि गृह गुणवत्ता और विश्वसनीयता का प्रतीक है।

साथ ही साथ बेहतर सुरक्षा, आराम और रखरखाव का प्रतिरूप है।

योगाभ्यास व प्राणायाम से दिन की शुरुआत होती है,
पूरे दिन चेहरे पर मुस्कान और शरीर में स्फूर्ति रहती है।

विभिन्न अंतरिक्ष केंद्रों के प्रतिनिधि यहां आकर मिले,
अनेकता में एकता के साक्षात् दर्शन दिखे।

विभिन्न केंद्रों के अनुभवी महानुभावों ने
गुणवत्ता और विश्वसनीयता का पाठ पढ़ाया

अंतरिक्ष संबंधी कार्यों की बारिकियों को भी समझाया।

हमने भी पूरे मन से आपके बताए दिशा-निर्देशों का ध्यान रखा,

काम की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में कमी न हो, इसका भरोसा दिलाया।

इसरो की सहयोगी निजी कंपनियों का भ्रमण किया, अंतरिक्ष के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ज़रूरत को महसूस किया।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के कार्यों को करीब से जाना, मिशन नियंत्रण केन्द्र को देख प्रक्षेपण यान की उल्टी गिनती को याद किया।

न जाने,MCC कितनी ही सफल अंतरिक्ष उड़ानों का साक्षी है,

देश के विकास में इससे अपार सहयोग मिला है।

एनेस्थीसिया : तथ्य एवं मिथ्य

डॉ. आरती कौल

गैस मैन/वूमैन के बारे में हमेशा से ही एक रहस्य बना रहा है जो कि पर्दे के पीछे जादू करते हैं। कई लोग एनेस्थीसिया के दौरान नहीं जानते हैं कि किस तरह डॉक्टर उनकी देखभाल करते हैं। कई लोग तो यह भी नहीं जानते हैं कि एनेस्थीसियोलॉजिस्ट डॉक्टर भी होते हैं।

जब आप किसी शल्य चिकित्सा या सर्जरी से गुजरने वाले होते हैं तो आपके मन में कई सवाल आते होंगे:

- सर्जन ने यह प्रक्रिया कितनी बार की होगी?
- रिकवरी के दौरान क्या मुझे दर्द होगा?
- क्या कोई गड़बड़ हो सकती है?

लेकिन क्या आपको लगने वाले एनेस्थीसिया के बारे में आप सोचना बंद करते हैं? शल्य प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा एनेस्थीसिया है जिसे हर रोगी को दिया जाता है। नीचे एनेस्थीसिया से जुड़े कुछ तथ्य एवं मिथ्य दिए गए हैं।

मिथ्या:
एनेस्थीसिया एक आसान एवं सुरक्षित प्रक्रिया है जिसके दुष्प्रभाव बड़े कम होते हैं।

तथ्य:
आसान शब्दों में कहें तो, एनेस्थीसिया की प्रक्रिया दर्दमुक्त है। यद्यपि, इसकी प्रक्रिया काफी जटिल होती है। एनेस्थीसियाविद् रोगी के सभी प्रमुख अंगों को नियंत्रित रखते हुए शल्य चिकित्सा के दौरान एवं उसके बाद किसी प्रकार के दर्द को संभालने के लिए उत्तरदायी होता है। जबकि रोगी की सुरक्षा में सुधार के लिए कई प्रयास किए गए हैं, सभी दवाइयां किसी न किसी जोखिम में रहती ही हैं।

मिथ्या:
एनेस्थीसिया के बारे में जागरूकता लाने की आवश्यकता है। इसकी जागरूकता सामान्य है। जब आपको बेहोशी का इंजेक्शन दिया जाता है तो इसके बारे में आपको पहले से ही चौकस कर दिया जाता है। आप तब मंद-मंद नींद के आगोश में जा रहे होते हैं लेकिन फिर भी थोड़ी जागृत अवस्था में रहते हैं। आपको किसी प्रकार का दर्द महसूस नहीं होता है।

तथ्य:
एनेस्थीसिया के बारे में जानकारी को अकस्मात रूप से इंट्राऑपरेटिव जानकारी के रूप में देखा जाता है। जब रोगी को जनरल एनेस्थीसिया दिया गया हो अथवा वह शल्य चिकित्सा के दौरान होश में आ जाए लेकिन वह हिल नहीं पाता है या बात नहीं कर पाता है क्योंकि पैरालिटिक दवाइयों का असर होता है। यह इंट्रावेनस इंजैक्शन (आईवी) के दौरान नहीं होता है।

एक आईवी के द्वारा, आपको दर्द के लिए दवाई दी जाती है जिसमें हल्की बेहोशी की दवा होती है जिससे कुछ समय के लिए आप चीजों को भूल जाते हैं। ऐसी अवस्था यानि जागरूक सिडेशन के दौरान जो भी घटित होता है वह आपको याद नहीं रहता है। उस समय आप अचेत अवस्थामें रहते हैं, आप सवालों के जवाब भी दे पाते हैं और अपनी सुरक्षा के संबंध में हरकत भी करते हैं।

मिथ्या :
एनेस्थीसिया के बारे में जानकारी के लिए क्या ऐसा उपकरण है जिससे मॉनीटर करने में सहायता मिले।

तथ्य:
नई प्रौद्योगिकियां उपलब्ध हैं जो पारंपरिक एनेस्थीसिया नियंत्रण मानीटर की टक्कर में काम करती हैं। ये प्रौद्योगिकी होश का स्तर यानि लेवल ऑफ कॉन्शियसनेस (एलओसी) मानीटर के नाम से जानी जाती है। एलओसी मॉनीटर मस्तिष्क की तरंग गतिविधि का उपयोग करते हैं जिससे रोगी के होश में रहने की स्थिति का पता लगया जा सके। इसमें रोगी के मस्तिष्क की प्रक्रियाओं का एक संवेदनशील मापन किया जाता है तथा होश में रहने की स्थितियों मे होने वाले द्रुत परिवर्तनों यानि बदलावों के प्रति उत्तर देता है।

एलओसी मानीटर मानक का अधिक उपयोग किया जाने लगा है क्योंकि व्यावसायिक लोग उनकी मानीटरन तकनीकों को उन्नत बनाने में लगे हैं तथा रोगी के आउटकम को बढ़ाने के लिए वे हर संभव प्रयास करना चाहते हैं।

प्रतिदिन, हर प्रकार की शल्य चिकित्सा अथवा प्रक्रियाएं की जाती हैं। गैस्ट्रिक शल्य चिकित्सा तथा स्पाइन की शल्य चिकित्सा, घुटने की शल्य चिकित्सा अथवा कंधे की, चाहे वह मिनटों तक चलने वाली हो या घंटों तक चलने वाली हो, हर केस के आधार पर उसी दिन, कुछ दिनों बाद अथवा एक सप्ताह के बाद आप घर जा सकते हैं। हर उम्र के रोगी की शल्य चिकित्सा की जाती है। यहां तक कि भ्रूण की भी होती है। दिन या रात के समय कभी भी आपातकालीन शल्य चिकित्सा की जाती है।

शल्य चिकित्सा के दिन आपसे क्या अपेक्षा की जाती है?

सबसे पहली आवश्यकता होती है इस बात की कि आप शल्य चिकित्सा के दिन न कुछ खाएं न कुछ पीएं। इसे एनपीओ/शून्य प्रति मौखिक स्थिति कहा जाता है। इसके पीछे का कारण यह है कि उस दिन कुछ न खाने या पीने से आपको गैस्ट्रिक के जोखिम से दूर रखा जाए ताकि आपके पेट का सामान किसी वजह से गुर्दे में प्रवेश न कर पाए जिससे निमोनिया की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इस सवाल के बारे में पूरी तरह से ईमानदार होना अति आवश्यक है। शल्य चिकित्सा के दिन आपको जल्दी पहुंचना होता है ताकि लैब संबंधित सभी काम समय से पूरे किए जा सकें, आवश्यक कागजी काम पूरे किए जा सकें एवं आपकी चिकित्सकीय सूचनाएं अद्यदित की जा सकें।

शल्य चिकित्सा के बाद की व्यवस्थाएं भी करने की आवश्यकता होती है।

जब आप अस्पताल पहुंचते हैं तो आपको पहले प्रक्रिया पूर्व क्षेत्र तक ले जाया जाता है। यहां पर आपको असप्ताल द्वारा दी गई पोशाक पहनने को कहा जाता है। प्रक्रिया के आधार पर आपको अपने सभी वस्त्र, जेवर एवं अंतर्वस्त्र उतार देने होंगे। यह सब आपकी सुरक्षा के लिए किया जाता है। शल्य चिकित्सा के दौरान आपके पहने हुए जेवर

अधिक गर्म होकर अचानक आपको चोट पहुंचा सकते हैं।

आपके चिकित्सा संबंधित इतिहास के बारे में जानकारी जुटाने के लिए आपसे टीम के अलग-अलग सदस्य मिलेंगे। आपसे एक ही तरह के सवाल बार-बार या कई बार पूछे जाएंगे। लेकिन इस सबसे आपको हतोत्साहित नहीं होना है। यह सब आपको अधिकतम रूप में सुरक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता है। नर्स द्वारा आपके प्रमुख चिह्न (वाइटल साइन) की जांच की जाती है जिसमें आपका रक्तचाप, दिल की धड़कन, श्वसन दर, ऑक्सीजन सांद्रता, तापमान, लंबाई एवं भार की जांच की जाती है।

प्रक्रिया पूर्व क्षेत्र में आपसे सर्जिकल तकनीशियन, एवं सर्जिकल सहायक, सर्कुलेटिंग एवं ऑपरेटिंग नर्स, ऐनेस्थीसिया सहायक जो कि सर्जन के साथ काम करने वाले हो तथा एनेस्थीसियाविद आपसे बात करेंगे।

आपके हाथ या बाजू में एक आईवी यानि इंट्रावेनस इंजक्शेन दिया जाता है। यह एक छोटा सा ट्यूब होता है जिसके द्वारा तरल दवाई आपको सीधे दी जाती है। अधिकांश लोग आईवी लगाने से डर जाते हैं या घबरा जाते हैं।

आप एनेस्थीसियाविद से मिलेंगे जो कि संपूर्ण शल्य चिकित्सा के दौरान आपकी देखभाल करने के लिए एक अति प्रशिक्षित डॉक्टर होता है। वही आपको एनेस्थीसिया देते हैं। सर्कुलेटिंग नर्स या एनेस्थीसियाविद तब आपको एक ऑपरेशन कक्ष में ले जाएंगे। आपको ऑपरेशन थिएटर की टेबल तक पहुंचने में सहायता की जाएगी जहां पर शल्य चिकित्सा की जानी है।

एक बार जब प्रक्रिया का कक्ष, सर्जन तथा आप सभी तैयार हो जाएं तो बस फिर शल्य चिकित्सा का समय आ जाता है। शल्य चिकित्सा की किस्म के आधार पर, एनेस्थीसियाविद आईवी द्वारा बेहोशी की दवाइयां देते हैं। तब आपको चिकित्सा कक्ष में जाने की बात याद नहीं रहती है। यदि आपकी आंख पर शल्य चिकित्सा की जानी हो तो केवल उतने ही हिस्से को सुन्न किया जाता है ताकि आपको वहां पर कोई भी दर्द का अनुभव न हो। पित्त की थैली की शल्य चिकित्सा में आपको जनरल एनेस्थीसिया दिया जाता है। किसी भी मामले में प्रमुख चिह्नों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है।

शल्य चिकित्सा एवं एनेस्थीसिया के आधार पर, आप हर समय जागृत अवस्था में रहे हों अथवा जनरल एनेस्थीसिया के अंतर्गत संभवतः आपको ऐसी दवा दी हो जिससे आप एक अच्छी या दर्दमुक्त नींद ले सकें।

शल्य चिकित्सा के बाद प्रक्रिया कक्ष से आपको एक रिकवरी कक्ष या इंटेसिव केयर यूनिट में ले जाया जाता है जहां नर्सें आपका मानीटरिंग करती हैं जब तक आप एनेस्थीसिया से बाहर नहीं आ जाते हैं।

आप सामान्य एनेस्थीसिया में किस प्रकार के दुष्प्रभावों का अनुभव करेंगे?

- मतली / उल्टी
- गले में खराश अथवा खरखरी आवाज़ - मैं न तो चीख सकता हूं, न गा सकता हूं अथवा बोल सकता हूं।
- थोड़ेसे खून को थूकना
- दिमागी प्रक्रिया का गिरना, नींद आना

- खुजली
- मुंह के पीछे दर्द, कभी नलिका नहीं डाली गई।
- गले में स्पर्श करने, निगलने या सांस लेने में तकलीफ़
- दांत एवं होठों में तेज़ दर्द। होठों का हैमबर्गर की तरह नम हो जाना, सूजा हुआ चेहरा ....क्यों ??
- छिली हुई जीभ
- कान में दर्द
- पेशाब करने में समस्या या बार बार पेशाब का आना
- खांसते समय छाती में दर्द
- हृदय गति का धीमा होना
- छाती में जलन
- कुछ भी नहीं। मुझे जबरदस्त नींद आई

सहायक सुरक्षा एवं दवाइयों के साथ इन सभी शिकायतों पर ध्यान दिया जाता है जो समय रहते धीरे-धीरे कम होने लगती हैं जैसे-जैसे आप शल्य चिकित्सा के प्रभावों से बाहर आने लगते हैं। अपने सर्जन एवं एनेस्थीसियाविद से इन शिकायतों के बारे में बात करने से न झिझकें। किसी भी सूरत में, आपको करीब से देखा जाएगा या तो सीधे या एनेस्थीसियाविद के द्वारा। शल्य चिकित्सा के आधार पर आपको या तो उसी दिन घर भेज दिया जाएगा या फिर रात भर अस्पताल में रखा जाएगा।

आशा है कि आप सभी ने आमतौर पर सामान्य शल्य चिकित्सा के दौरान होने वाली प्रक्रिया के बारे में कुछ जानकारी हासिल की है। हम चाहते हैं कि जहां तक संभव हो आप सभी स्वयं को सुरक्षित महसूस करें।

चुटकुला और पंक्तियाँ

तनिषा पंकज आनंद
सुपुत्री
श्री पंकज आनंद

"रोहन और मैं गाय एवं घास का चित्र बना रहे थे,
जब तक चित्र पूरा होता गाय घास खाकर अपने घर चली गई।"

"कुछ है कुछ की जरूरत है, दुनियाँ बहुत खूबसूरत है।"
"मंजिल चाहे कितनी भी ऊँची क्यों न हो उसका रास्ता हमेश पैरों के नीचे से ही होता है।"

हो प्रज्ज्वल

जाधव दशरथ श्रीहरि

ज्ञान की पुकार है ये, विज्ञान की पुकार है।
फिर भी न बढ़ा तू तो जीवन तेरा धिक्कार है।।

अनंत रहस्य हैं छिपे शोधक की तलाश में
हो सके तो मार छलांग तू असीम आकाश में
धरती से अंतरिक्ष तक हर स्वप्न साकार है
फिर भी न उठा तू तो जीवन तेरा धिक्कार है।।1।।

कुदरत ने दिए उपहार जो, उनका सम्मान कर
रक्षा में ही सबके बस, जीवन तेरा कुर्बान कर
धरती पर हर जीव का एक-सा अधिकार है
फिर भी न समझा तू तो जीवन तेरा धिक्कार है।।2।।

ज्ञान का भंडार भरा पड़ा है ग्रंथ रूपी सागर में
भर ले अमृत तू अपने मस्तिष्क रूपी गागर में
'सरस्वती का अपमान' यह सबसे बड़ा विकार है
फिर भी न पढ़ा तू तो जीवन तेरा धिक्कार है।।3।।

गुरु महिमा में डूब कर प्रगाढ़ तू बुद्धि कर
दुर्गुणों को दूर कर विचारों में तू शुद्धि कर
'मैं ही अकेला बलवान हूं' यह कल्पना ही निराधार है
फिर भी न समझा तू तो जीवन तेरा धिक्कार है।।4।।

हर सितारे में है चमक पर, कुछ ही टिमटिमा रहे
विक्रम, कलाम जैसे ज्ञानी आज भी जगमगा रहे
ले इनसे प्रेरणा हो प्रज्ज्वल! जीवंत उनका विचार है
फिर भी न जगा तू तो जीवन तेरा धिक्कार है।।5।।

एल आर मिथुना
सुपुत्री
श्री एल रुपेश बाबु

श्रीहरिकोटा

"श्रीहरिकोटा" भारत के दक्षिणी राज्य आंध्र प्रदेश के तट पर बसा एक द्वीप है, भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र जो सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (जिसे शार / SHAR के रूप में भी जाना जाता है) में है जहाँ बहुचरण रॉकेट जैसे ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेप्रण यान और भूतुल्यकाली उपग्रह प्रक्षेपण यान का उपयोग कर प्रक्षेपित किये जाते हैं।

श्रीहरिकोटा पुलीकट झील को बंगाल की खाड़ी से अलग करता है और पुलीकट शहर के लिए घर है। यह जैविक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है। यह झील कई प्रकार के पक्षियों का आवास भी है। यहां पर ऑस्ट्रेलिया के प्रवासी फ्लैमिंगो पक्षी अक्सर नवंबर से दिसंबर माह के बीच देखे जाते हैं। उन दिनों झील का नजारा अत्यंत सुंदर लगता है। इससे निकटतम शहर सुल्लूरुपेटा है जो कि निकटतम रेलवे स्टेशन भी है। चैन्नई से इसकी दूरी अस्सी किलोमीटर (पचास मील) है यह चैन्नई एक्सप्रेसवेज से भी जुड़ा हुआ है। भारत का स्पेसपोर्ट देखने में अत्यंत सुंदर है। इसका गौरव अंतरिक्ष खोज एवं उससे जुड़े कई कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ है।

'नौकरी'

शिप्रा पोरवाल
पत्नी-श्री सुमित कुमार

'बड़ी हसीन होगी तू ऐ! नौकरी,
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं |
सुख-चैन खोकर चटाई पर सोकर,
सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं |
दिन में तहरी और रात को मैगी,
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते हैं |
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं ||
अंजान शहर में छोटा सस्ता कमरा लेकर,
किचन, बेडरूम सब उसी में सहेज कर,
चाहत में तेरी अपने मां बाप और,
दोस्तों से दूर रहते हैं ||

सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं,
राशन की गठरी सिर पे उठाए,
अपनी मायूसी और मजबूरियाँ खुद ही,
छिपाए खचाखच भरी ट्रेन में बिना,
टिकट के जोखिम लेके आज सफर करते हैं |
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं ||
इंटरनट, अखबारों में तुझको तलाशते,
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते-पढ़ते,
बत्तीस साल तक के जवान कुंवारे फिरते हैं,
तू कितनी हसीन है ऐ! नौकरी |
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं.....'

रूपांतरण

कमल दीप रस्तोगी

गलियों चौबारों में उछलता बचपन
खेल-खेल में लड़ाई और आलिंगन
बड़े से हाते में सपेरे का खेल
मुंह से बोलकर चलती छुक-छुक रेल
अब सब खो सा गया है।

कुश्ती के जोर आजमाता कि शोर
वो हाट और मेलों का शोर
जुड़वाँ चोटी और आँख में सुरमा
सुबह नाश्ते में बासी रोटी का चूरमा
अब सब खो सा गया है।

किशोरियों के मधुर टेसू के गीत
होलिका पूजन की वो पुरानी रीत
रामलीला मैदान में रावण दहन
लड़ते-लड़ते राखी बांधती बहन
अब सब खो सा गया है।

दादा के कंधे पर बाजार जाना
छोटी बहन को कपड़े की गुड़िया लाना
जेब में पड़े रुप्पइये को खर्च करने का जुनून
समय से खा लेने पर अम्मा का सुकून
अब सब खो सा गया है।

दिन भर सवार बाप की दहशत
रात में बगिया के भूत की वहशत
बूढे दादा के हुक्के की जिम्मेदारी
बात बेबात हमारी होशियारी
अब सब खो सा गया है।

आज सर्वत्र गाड़ियों का शोर
दूसरे से आगे निकलने का जोर
फिजाओं में फैला जहर ही जहर
भीड़ में भी सुनसान सा शहर
सब बदलने सा लगा है।

एक छत के नीचे सब बेगाने से
कल्पना की दुनियां में खोए दीवाने से
खेलों में खेल,पबजी का खेल
सालों में कभी रिश्तेदारों से मेल
सब बदलने सा लगा है।

आम और खास मोबाइल चलाता है
बर्गर और पिज्जा ताकत बढ़ाता है
हर पोस्ट पर लाइक की चाहत
कोई शेयर करे तो मिले राहत
सब बदलने सा लगा है।

कबूतर खाने जैसे छोटे से घर
हंसने पर पड़ोसी से टोके जाने का डर
फैशन में आधे-अधूरे कपड़े
हर घर के पारिवारिकलफड़े
सब बदलने सा लगा है।

भारतीय कला-संस्कृति: एक झलक

रिचा रानी
पत्नी- श्री हितेश बाबू

हमारा देश प्राकृतिक और भौतिक दोनों ही प्रकार से विश्व का एक अद्भुत एवं अनोखा राष्ट्र है। इस देश की संस्कृति और कला, सभ्यता और आचरण इसकी विशेषता को उच्चकोटि का देश बनाने में सफल और सहायक हैं। हमारे देश की संस्कृति और कला विश्व की प्राचीन संस्कृति और कलाओं में से एक है।

हमारे देश की कला-संस्कृति से मोहित हो करके ही विदेशियों ने हमारे देश पर हमला किया। हमारे देश की कला की यह विशेषता रही है कि हमने अपनी परम्परा को अपनाते हुए नवीनता का समर्थन भी किया। इस प्रकार से हमारी कलाकृतियाँ आज भी इस रूप में दिखाई पड़ती है। हमारी कलाएँ ही इस तथ्य का प्रमाण देती हैं कि हमारे शासक और राष्ट्रनायक भी अपनी संस्कृति और सभ्यता के ही समर्थक और हिमायती रहे हैं। देश भर में ऐसे कई स्मारक देखने को मिलेंगे जो हमारे इतिहास की गाथा सुनाते हैं कि हमारे राजघराने अपनी परंपराओं से जुड़े रहते थे। संस्कृति की जड़ें इतनी मजबूत कर रखी थीं कि उन्हें कोई विदेशी ताकत आसानी से हिला नहीं पाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगाने में तनिक देर नहीं लगाई। उन्होंने अपने अखण्ड राज वैभव को मिटाने या धूल धूसरित होने की तनिक भी चिन्ता नहीं की। इस तरह उन्होंने अपनी कला संस्कृति की सबसे अधिक चिन्ता की।

हम यह देखते हैं कि हमारे देश पर मुगलों ने जब हमला किया, तब उनके मन में इस देश की संस्कृति और कला के प्रति एक विशेष आकर्षण की भावना ही तो थी। मुगलों के धीरे धीरे जमते हुए प्रभाव के फलस्वरूप हमारी भारतीय

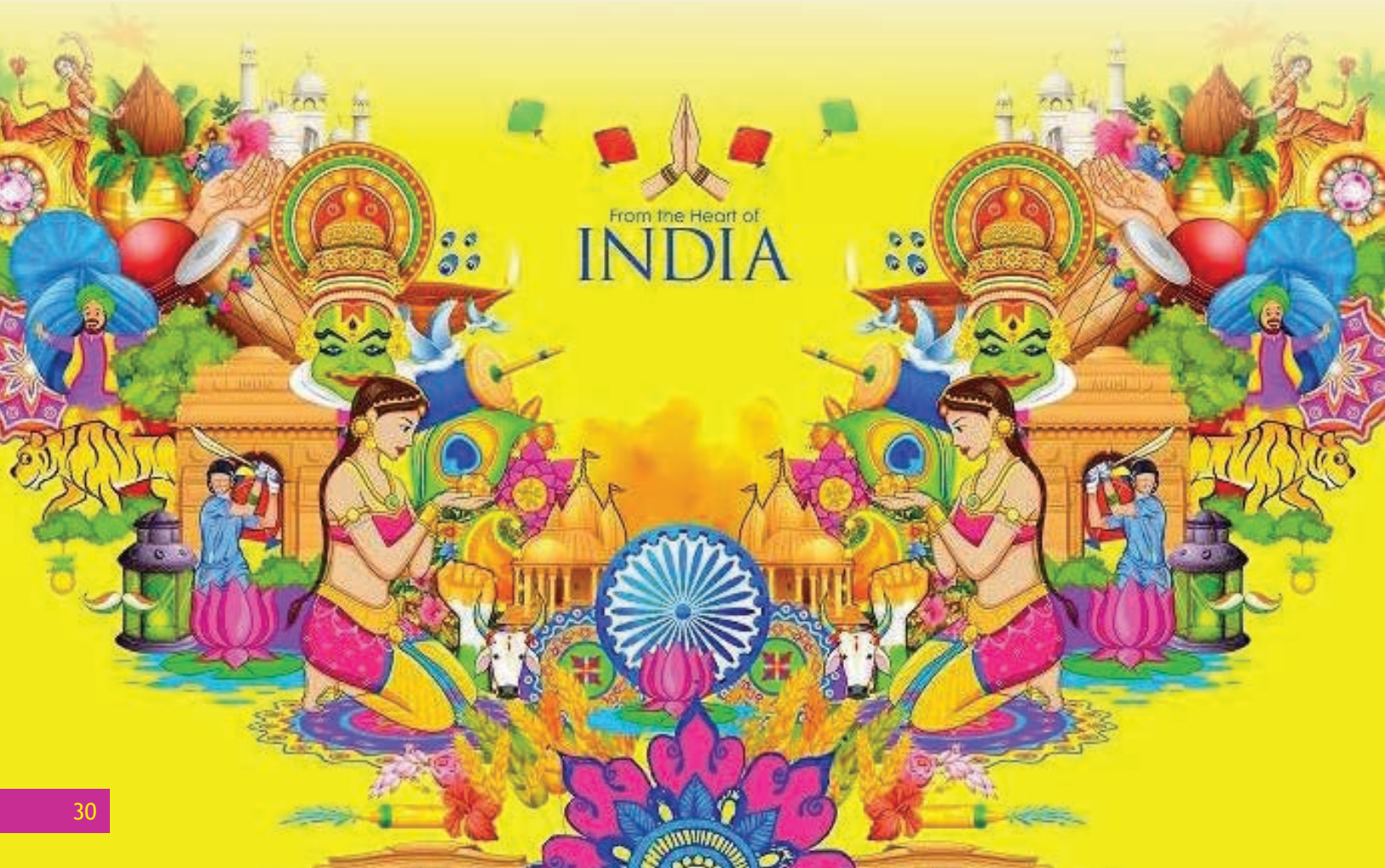

कला ने अपनी प्राचीनता की छाप तो छोड़ी नहीं। इसके साथ ही साथ इसने मुगलों की कला को अपनाकर अपनी संस्कृति को और भी समृद्ध बना लिया। उसे ऐसा अद्भुत रूप दिया कि यह हर विदेशी के लिए एक मनमोहक विषय का केन्द्र बन गया। फतेहपुर सीकरी की मनमोहक इमारतें, आगरा का ताजमहल, माण्डू के प्रसिद्ध किले में स्थित हिंडोला महल, जहाज महल, जबलपुर, खजुराहो, उज्जैन, पंचमढ़ी, अजन्ता एलोरा की गुफा में स्थापित मूर्तियाँ आदि हमारी भारतीय कला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। यही नहीं हमारे देश के कोने-कोने में बिखरे मंदिरों की कलाकृतियाँ भी हमारी भारतीय कला के अच्छे नमूने हैं। भारतीय कला के अन्तर्गत आने वाली नृत्य-संगीत, नाटक, साहित्य, प्रदर्शनी, खेल तमाशे आदि हैं। इनमें से भारतीय नृत्य-कला का प्रभाव भारतीय कला को अत्यधिक रूप में प्रभावित करने वाला है।

भारतीय नृत्य कला के अन्तर्गत ताँडव नृत्य भगवान शिव द्वारा क्रोध प्रकट करने की ऐसी कला है जिसे नृत्य प्रेमियों ने नटराज का रूप मानते हुए नृत्य के देव के रूप में उनकी उपासना की। नृत्य की विभिन्न शैलियाँ आज विकसित होकर न केवल विदेशियों को आकर्षित करती हैं, अपितु नृत्य कला के क्षेत्र में अपना अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आज विदेशी भारतीय नृत्य कला से इतने प्रभावित हैं कि वे भी कत्थक नृत्य, भरत नाट्यम, मणिपुर नृत्य, पंजाब के भांगड़ा नृत्य, राज्स्थान के घूमर, गुजरात के गर्भा नृत्य, नौटंकी आदि भारतीय नृत्य कला की विशिष्ट कोटियाँ हैं जो हमें गर्वित और स्वाभिमानी होने का सुअवसर प्रदान करती हैं।

नृत्य और नाटक का परस्पर अभिन्न सम्बन्ध है। नाट्य नृत्य का विकास इसी आधार पर हुआ है। आज हमारे देश में नाट्य नृत्य की जितनी कलाएँ विकसित हुई हैं, उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। नृत्य का नाटय को महत्वपूर्ण बनाने में अद्भुत योगदान है। नाट्य नृत्य के द्वारा हमारे कलाकार हमारे देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का ऊँचा और अमर गान गाया करते हैं इसे विदेशों के अनेकानेक हमलों ने समाप्त करने की अपनी हार स्वीकार कर ली थी। इस तथ्य को किसी शायर ने बड़े ही आकर्षक रूप से व्यक्त किया था-

यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमा सब मिट गए जहाँ से,
बाक़ी मगर है अब तक नाम-ओ-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा

अर्थात् हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति विश्व के सर्वाधिक प्राचीन देशों यूनान, मिस्र, रोम से कम नहीं थी। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि ये सभी देश अपनी पराधीनता के कारण अपनी अपनी सभ्यता और संस्कृति को आज खो चुके हैं जबकि हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति बार बार विदेशी हमले के बावजूद भी ज्यों की त्यों आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि हमारी संस्कृति और विभिन्नता में होती हुई भी जितना एकता का आधार लिए हुए है उतना और कोई संस्कृति कला नहीं।

हमारी भारतीय कला नकलनवीस न होती हुई भी नकलनवीस से मजबूत है। यहाँ का नागरिक विदेशी खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल, दर्शन आदि को अपनाने की कला में जितना तेज और कुशल है। इतनी और कोई विदेशी कला नहीं हो सकती है, उदाहरण के लिए एक भारतीय जितनी साफ और आसानी से विदेशी भाषा को बोल सकता है, अनुकरण कर सकता है और रूप धारण कर सकता है, उतनी कोई विदेशी भारतीयता का नकलनवीस नहीं बन सकता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भारतीय कला चाहे वह नृत्यकला हो, चित्रकला हो, मूर्तिकला हो, जीवन की कोई भी कला हो, सब की सब अनुपम और अद्भुत हैं। इसके परिणास्वरूप यह विश्व को आकर्षित करती रही है।

आओ, कहानी से कुछ सीखें...

सदानंद हरिभाऊ पाटिल

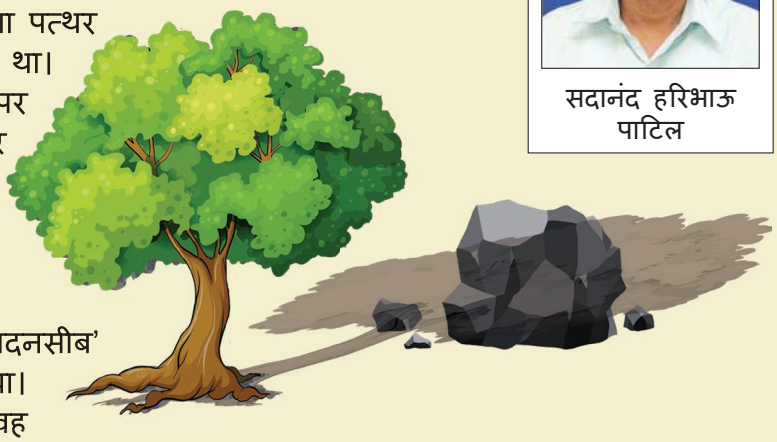

एक नगर के पास, घना जंगल था। उस जंगल में एक सागवान का ऊँचा और बड़ा पेड़ था। उस पेड़ के तले एक बड़ा काला पत्थर था। पेड़ ऊँचा होने के कारण, हवा के साथ झूमता था। सागवान का पेड़ सूरज की किरणों को अपने बदन पर लेता था। बड़ा ही खुश था पेड़। पेड़ के नीचे जो पत्थर था, उसकी जिंदगी में अंधेरा था। आस-पास होने वाले अन्य पेड़ों के कारण, सूरज की रोशनी, पत्थर को कभी भी महसूस करने को नहीं मिलती थी।

पत्थर खुद की अंधकारमय जिंदगी के कारण खुद को 'बदनसीब' समझता था। इधर, पेड़ अपनी जिंदगी पर खुश था। लेकिन, पेड़ अपनी इस जिंदगी पर गर्व करता था। वह पत्थर को ताने मारता था। "अरे पत्थर, तेरी इस अंधेरों भरी जिंदगी पर मुझे बहुत दु:ख होता है। तेरी जिंदगी का कोई अर्थ ही नहीं है। मैं देख, हवा के साथ मस्त झूमता हूँ। आसमान में लहराता हूँ। मैं तुझसे कई गुना श्रेष्ठ हूँ।" पेड़ की इस तरह की भाषा सुनकर पत्थर खुद के नसीब को कोसता था। मन ही मन वह कहता था, "सचमुच मेरी जिंदगी का कोई अर्थ ही नहीं है।"

कुछ दिनों बाद.....

उस जंगल के पास वाले नगर में एक धनवान आदमी रहता था जिसकी मौत हो गई। उस आदमी को दफनाने के लिए, उसके परिवार ने नयी शव पेटी बनानी चाही। शवपेटी बनाने के लिए, एक पेड़ कटवाने के लिए, उस परिवार के नौकर नगर के पास के जंगल में गये। उनकी नजर में बड़ा ऊँचा पेड़ आया। उन्होंने तुरंत साथ में लाए आरी से वह पेड़ काटना शुरू किया, तब पेड़ के मन में विचार आया, "हाय रे मेरे नसीब ! मेरी जिंदगी ऐसे ही बीच में खतम होनी थी?" मैंने बेवजह खुद पर गर्व किया। उसने मन ही मन उस काले पत्थर से माफी माँगी।

इधर, पत्थर को पेड़ के ऊपर दया आयी। पेड़ को कटते देखकर उसे बहुत दु:ख हो रहा था।

पेड़ को काटकर नौकर उसे नगर में लाये। उस पेड़ से कुशल कारीगरों ने नगर में एक अच्छी शवपेटी बनायी। उस धनवान आदमी को शवपेटी में डालकर, दो गज जमीन के नीचे दफनाया गया।

इस घटना के कुछ दिनों बाद...!!

उस घने जंगल से एक मूर्तिकार यात्रा कर रहा था। मूर्तिकार की नजर में वह 'काला पत्थर' आया। उस बड़े काले पत्थर के पास जाकर, उस मूर्तिकार ने, अपने हाथ में लिए हुये, हथौड़े से पत्थर की परीक्षा की। वह बहुत ही खुश हुआ। उसने मन ही मन सोचा कि, इस काले पत्थर से एक अच्छी मूरत बनायी जा सकती है।

उस नगर के एक रईस आदमी ने, उसकी माँ की याद में एक मंदिर बनाया था। उस मंदिर में बिठाने के लिए, उस श्रीमंत आदमी ने, मूर्तिकार को एक अच्छी भगवान श्रीकृष्ण की मूरत बनाने को कहा था। मूर्तिकार ने मन में तय किया कि, इस काले पत्थर से उस मंदिर में बिठाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण की मूरत बनायेंगे। मूर्तिकार ने मजदूरों की सहायता से, वह बड़ा पत्थर अपनी कार्यशाला में मंगवाया। कुछ महीनों के बाद मूर्तिकार ने उस पत्थर से एक अच्छी सी भगवान श्रीकृष्ण की मूरत बनाई और उस रईस आदमी को सौंप दी। एक अच्छे से मुहूर्त पर, उस आदमी ने अपनी माँ याद में बनाये मंदिर में उस भगवान श्रीकृष्ण की मूरत की स्थापना की। उस दिन के बाद, उस मंदिर में हर रोज सुबह और शाम भगवान श्रीकृष्ण की मूरत के दर्शन के लिए भक्तगण आने लगे। हर रोज मंदिर में पूजा-पाठ होने लगे।

दोस्तो अब सोचो, क्या हो गया...जंगल में घटी हुई इस कहानी में क्या हो गया।

"खुद पर गर्व करने वाला बड़ा पेड़ कालस्वरूप शवपेटी के रूप में दो गज जमीन के नीचे दफनाया गया ... और अँधेरे में रहने वाला खुद के नसीब पे दु:खी होने वाला काला पत्थर भगवान के रूप में मंदिर में पूजा जाने लगा।"

इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है...

1. कभी भी अपनी अच्छी परिस्थिति
   पर घमंड नहीं करनी चाहिए या बुरी स्थिति पर दु:ख नहीं करना चाहिए। परिस्थिति समय के साथ कभी भी बदली जा सकती है।
2. खुद को कभी भी कम नहीं समझना चाहिए। हर कोई अपनी-अपनी जगह पर श्रेष्ठ साबित होता है।

हिंदी

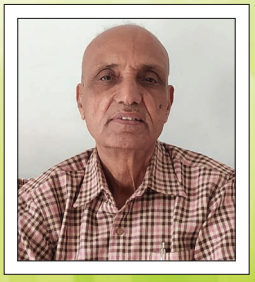

प्रो. पी. सी. कोतवाल
पिता श्री चन्द्रप्रकाश कोतवाल

हिंदी केवल भाषा मात्र नहीं है।
यह भाषाओं की माता भी है।
ना उसकी है ना इसकी है।
यह भाषा हमारी सबकी है।
यह मन, मस्तिष्क की गहराइयों में है
हृदय की धड़कनों और श्वासों में है।
हमारी आन बान और शान है।
यह हमारी संस्कृति का आधार है।
इसके व्याकरण में ज्ञान और विज्ञान है।
इसमें स्वर, व्यंजन और काव्य है।
इसमें रस, छंद और तरंग है।

इसमें सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति का विधान है।
यह ब्रह्म का नाम है, ईश्वरीय अलहाद है।
यह संसार की सकल भाषाओं का संबल है।
सशक्त, सरस, सटीक, अभिव्यक्ति का आधार है।
हिंदी हमारी महतारी है।
ना उसकी है ना इसकी है।
यह भाषा हमारी सब की है।

फल कृषि और युवा पीढ़ी

पी लक्ष्मी सौजन्या
पत्नी श्री टी अनिल

भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण की चपेट में हमारी संस्कृति की यह मूल धारा भी आती जा रही है। जहां चारों ओर खेती करते किसानों की खुशहाल जिंदगी दिखाई देती थी आज हर तरफ से किसानों के आत्महत्या की खबरों से मेरा मन व्यथित हो जाता है। इन सभी विचारों के साथ मैंने कृषि की ओर इशारा करते हुए यह लेख लिखा है। कृषि एक नौकरी ही नहीं है, यह एक सेवा है, जिम्मेदारी है। आजकल एक किसान का बेटा किसान नहीं बन रहा है, अगर भविष्य में भी यही स्थिति बनी रही, तो किसानों के अस्तित्व की कमी के कारण भोजन की कमी होने की संभावना है।

इस परिदृश्य में, कुछ युवा किसान जो पेशेवर/तकनीकी नौकरियों में काम कर रहे हैं, कुछ कृषि फार्म जैसे फल, सब्जियां आदि का रखरखाव/खेती कर रहे हैं और सफल हो रहे हैं। इसके अलावा वे भविष्य को ध्यान में रखकर पेशेवर और कृषि जीवन को सुचारू रूप से संतुलित कर रहे हैं। विशेष रूप से हाल के दिनों में पेशेवर रूप से काम करने वाले कई इंजीनियर फल उत्पादन के तरीके से कृषि के प्रबंधन में सफलता पूर्वक लाभ प्राप्त कर रहे हैं। भारत में फल किसानों की वृद्धि हो रही है क्योंकि भारतीय जलवायु और भूमि विभिन्न अपनाई गई संकर तकनीकों का उपयोग करके अधिकांश फलों, विशेष रूप से अमरूद को उगाने के लिए अनुकूल है। फल हमें ऊर्जा, उच्च स्तर के विटामिन, कैल्शियम, फास्फोरस आदि प्राप्त करने में मदद करते हैं और ये हमारे लिए बहुत सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होते हैं। प्रौद्योगिकीकरण के कारण लोगों के पास घर से काम करने की संभावना है (यानि, कार्यालय से संवाद करना और कार्यों को तेजी से पूरा करना) और सौंपे गए कर्त्तव्यों को पूरा करने के साथ-साथ खेती, कृषि आदि जैसे अन्य कार्यों को करने की संभावना है। समय प्रबंधन और क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का कुशल उपयोग दोनों क्षेत्रों का प्रबंधन करते समय सब कुछ सिर पर लेने के बजाय बहुत महत्वपूर्ण है। पुरूषों, मशीन, सामग्री और विधियों के उपयोग सहित प्रबंधकीय / प्रौद्योगिकी पहलुओं के उपयोग का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए (यानि, सही समय पर सही जगह पर सही कार्रवाई), ताकि उत्पाद की अंतिम कीमत में कमी को कम करके प्राप्त किया जा सके। समय और अवांछित कार्य। इससे अधिक मुनाफा होता है। उत्पादन के साधनों का यही सिद्धांत यहाँ भी लागू होता है।

हरीश धनदेव, सचिन काले और भव्यदीपेश जैसे कुछ पेशेवर इंजीनियरों ने दोनों को संतुलित किया और अपनी पेशेवर नौकरी छोड़ कर फल कृषि में लग गए। उन्होंने अपने पूर्वजों की परिपाटी को जारी रखा और उच्च अंत लाभ प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। इससे हमें जनता को रोजगार देने का भी मौका मिलेगा। वे किसान जो शहरी चमकधमक के कारण गांव से प्रयाण कर शहरों में आकर बस गए हैं। उनके कौशल का लाभ उठाते हुए फल कृषि को आगे बढ़ाया जा सकेगा। जहां गांव शहर की ओर बढ़ रहे हैं। वहीं शहरों को भी कहीं न कहीं गांव की ओर कदम बढ़ाने के प्रयास करने होंगे। आधुनिक तकनीक और कृषि के समागम को शहरों से जोड़ते हुए ये इंजीनियर फल कृषि को आगे ले जा सकते हैं। किसान वे हैं जो हमें खाने के लिए उत्पादन और भोजन प्रदान करते हैं। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवनयापन के लिए उचित भोजन की आवश्यकता होती है, इसलिए ये किसान समाज की एक आवश्यकता है। तो आइए हम जाग्रत हों और लोगों को कृषि के प्रति भी प्रोत्साहित करें, किसानों के अस्तित्व की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्यथा, हमें उन्हीं वस्तुओं को उच्च अंत दर के साथ खरीदना होगा, उदाहरण के लिए 1 लीटर सूरजमुखी तेल की दर भारत में खाना पकाने के तेल का उत्पादन न होने के कारण खाना पकाने के लिए 200 रूपए से अधिक हो गयी है। इसलिए हम सभी को आगे आना चाहिए और युवाओं में जागरूकता लाना चाहिए और कृषि के मामले में अपने देश के विकास के लिए कृषि पर विशेषत: फल कृषि पर ध्यान देना चाहिए।

सुसांत कुमार साबत

सोच !!!

सोच क्या है?
मनुष्य का विकास है
सोच ही जीवन है : सोच ही जीवनी है।

अगर गाँधी जी की सेवा सोच न होती
तो देश की आजादी ना होती
अगर तेरेसा की उदार सोच न होती
तो बेघरों को घर न मिलता
सोच ही जीवन है, सोच ही जीवनी है।

सोच से ही संसार का पुर्नउत्थान होगा
समस्या भी सोच की ही मामा है
सोच ही हर वर्तमान की छाया है
सोच ही जीवन है, सोच ही जीवनी है।

सोच से, ही जीवन में सुकून है
सोच है, जीवन में सफलता है
सोच से ही जीवन में कई रंग हैं
सोच ही जीवन है, सोच ही जीवनी है।

क्या सोच एक धर्म है या फिर मन की दुर्बलता
सोच ही तुम हो तुमसे ही सोच है
सोच मन का गहरा समुद्र है
सोच ही जीवन है, सोच ही जीवनी है।

सागर चौधरी

मानसिक स्वास्थ्य

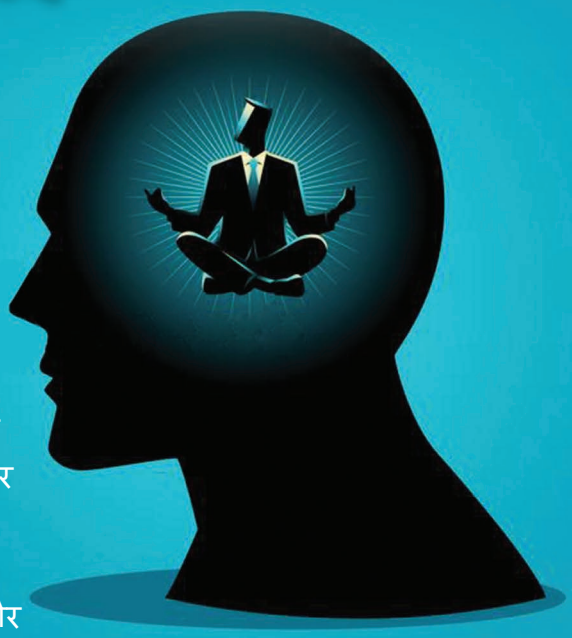

मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसा विषय है, जिसके बारे में हमारे समाज में बहुत कम चर्चा की जाती है| इसका मुख्य कारण है, जागरूकता की कमी| मानसिक स्वास्थ्य की कोई औपचारिक परिभाषा नहीं है| मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य किसी व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण से है |

यह प्रभावित करता है कि वे क्या महसूस करते हैं और कैसे सोचते हैं और व्यवहार करते हैं| मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है अपने मन को स्वस्थ रखना जिसका सरल अर्थ है खुश और तनावमुक्त रहना। हमें अपना जीवन अच्छा और निरोगी व्यतीत करने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना होगा|

मानव जाति आमतौर पर अपने शारीरिक फिटनेस को बनाए रखने पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है और मन की स्थिति जो कि सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है; उसे नजरअंदाज करती हैं। मानसिक बीमारी किसी के स्वास्थ्य की अस्थिरता है, जिसमें भावना, सोच और व्यवहार में परिवर्तन शामिल हैं। मानसिक बीमारी तनाव या किसी खास घटना की प्रतिक्रिया के कारण हो सकती है। यह जैव रासायनिक असंतुलन, बालशोषण या आघात, सामाजिक नुकसान, खराब शारीरिक स्वास्थ्य स्थिति आदि के कारण भी उत्पन्न हो सकता है। आजकल लोग अपना ज्यादा से ज्यादा समय मोबाइल या इंटरनेट पर व्यतीत करते हैं जिस कारण वो अपने दोस्तों या परिवार के साथ बातचीत कम करने लगे है। हमें जीवन आनंद दायी व्यतीत करने के लिए हमेशा किसी ना किसी के साथ मन खोल के बातें करनी चाहिए कि हम क्या महसूस कर रहे है।

मानसिक बीमारी का इलाज संभव है। कोई इस विशेष क्षेत्र के (विशेषज्ञों) की मदद ले सकता है या सकारात्मक सोच और अपनी जीवनशैली में बदलाव करके इस बीमारी को दूर कर सकता है।

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा कि ये जीवन बड़ा ही छोटा है। हमें इसे ख़ुशी से व्यतीत करना चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि हम सभी जगह हमेशा ख़ुशी भरा और तनावमुक्त वातावरण बनाये रखें।

क्योंकि जब कोई व्यक्ति ख़ुशी से और तनावमुक्त होकर पूरी क्षमता और उत्साह से काम करता है तो वो बहुत अच्छा परिणाम देगा। इसलिए, सभी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम सभी को अपना और हमारे अपनों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रखने की दिशा में काम करें और जरुरत होने पर आवश्यक सहायता करें।

यात्रा का अनुभव

सीएच उजेषा
सुपुत्री
श्री सी एच भास्कर राव

मैं अपनी गर्मी की छुट्टियों में हैदराबाद गयी थी। मुझे लगता है कि आप सभी अपनी छुट्टियों में अपने पैतृक स्थान जाते होंगे। हैदराबाद में मेरे चाचाजी रहते हैं। इस शहर के बारे में मैंने बहुत सुना था तो मन में इच्छा हुई कि मैं इस द्वयनगर को देखूं। सिकंदराबाद-हैदराबाद के बीच में बसा है टैंकबंड जिसके बारे में कहा जाता है कि इसके एक ओर सिकंदराबाद शहर है तो दूसरी ओर हैदराबाद शहर बसा है। गर्मियों की पूरी छुट्टियां मैंने अपने चाचा के घर बिताई। मैं अपने चाचा के घर में पचास दिन रहा। इन पचास दिनों में मैंने बहुत मजे किए। वहां मैं चिड़ियाघर, चारमीनार, संग्रहालय, रामोजी फिल्म सिटी सभी देखे। शहर में स्थित कई सारे मॉल में हमने बहुत सारी शॉपिंग की। चिड़ियाघर में हमने बहुत सारे जानवर देखे, चारमीनार जिसे हैदराबाद की शान व पहचान माना जाता है, देखने में भी बहुत सुंदर था। हम चाचा जी के गांव भी गए और वहां खेतों के मजे लिए। खेत में हमने बहुत सारे खेल खेले और और हम बहुत सी चीजें लेकर आए। अंत में जब हम हैदराबाद छोड़ रहे थे तो मुझे वहां से वापिस आने का मन ही नहीं कर रही थी। हैदराबाद छोड़ने का बहुत दुख हो रहा था। लेकिन, इन छुट्टियों में बिताए वे 50 दिन मेरे लिए यादगार रहे। मेरी यात्रा का अनुभव बहुत अच्छा और सुंदर रहा। मैं अपनी छुट्टियों में हैदराबाद की यात्रा करके संतुष्ट हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप अपनी अगली छुट्टियों में हैदराबाद जाएंगे। हैदराबाद में और भी कई दर्शनीय स्थल हैं जिन्हें मैं अगली छुट्टियों में देखने अवश्य जाऊंगी।

गुरू

डैनिन ब्रायन एम
सुपुत्र
श्री मार्टिन स्टैनली

गुरु के बिना क्या पढ़ना-लिखना
गुरू के बिना कैसे ऊपर चढ़ना,
हर कामयाब विद्यार्थी के पीछे,
गुरू का हाथ रहता है नीचे।
गुरू भगवान की ऐसी सृष्टि है,\
जिसे कोई मिटा नहीं सकता,
गुरू का ऐसा स्थान है,
जिसे कोई हटा नहीं सकता।
गुरू यह है, गुरू वह है
सबसे पहले गुरू है
गुरू की महिमा अपार है।

मेरी उदयपुर की यात्रा

कुलदीप शाक्य

राजस्थान भारत गणराज्य का एक ऐसा राज्य है, जहॉ पर अनेक राजाओं ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर शासन किया है। राजस्थान का शाब्दिक अर्थ है- "राजाओं का स्थान अर्थात जहॉ पर राजाओं ने वास किया"। मैंने इसी वर्ष की गर्मी की छुटिटयों में राजस्थान में घूमने का खाका तैयार किया और मैंने एक ऐसे शहर को चुना। जिसे भारत में की "पूर्व का वेनिस" एवं "झीलों का शहर" के नाम से जाना जाता है, जिसका नाम है उदयपुर। जिसे राजा उदयसिंह द्वितीय ने बसाया था और उन्हीं के नाम पर इसका नाम उदयपुर पडा। उदयपुर शहर को झीलों का शहर इस लिए कहा जाता है क्योंकि इस शहर के चारों-ओर मुख्य सात झीलें बनीं हुईं हैं। जो इस प्रकार हैं-

1-पिछोला झील, 2-दूधतलाई झील, 3-फतेहसागर झील, 4-उदयसागर झील, 5-राजसमंद झील, 6-जयसमंद झील, 7-स्वरूपसागर झील।

मैंने उदयपुर तक की यात्रा अपने परिवार के साथ रेलगाडी के द्वारा तय की और रेलगाडी से जाते समय रास्ते में बहुत सारी रेलसुरंग एवं ऊंचे-ऊंचे पर्वतों का नज़ारा देखने को मिला जो वास्तव में अत्यंत ही सुंदर था। उदयपुर पहुंचने के बाद हम सभी लोगों ने नहा धोकर एवं तैयार होकर किराये पर एक कार ले ली। इसी कार से हम सभी लोगों ने सर्वप्रथम इस शहर के पर्वत पर स्थित करणी माता का मंदिर के दर्शन किए मंदिर तक की दूरी तारों के द्वारा चलने वाली कार (केबिलकार) पर बैठकर की जिसमें अत्यधिक आनंद आया। इस के बाद कार से इस शहर की खूबसूरती को देखने के लिये निकल पडे। उदयपुर शहर के चारों-ओर मुख्य सात झीलें हैं, जो इस शहर की सुंदरता एवं सभ्यता को दर्शातीं हैं। इस शहर की सभ्यता लगभग पाँच हजार साल पुरानी है जो आज तक वैसी की वैसी ही चली आ रही है।

उदयपुर शहर (झीलों का शहर) में घूमने के लिये कुछ प्रमुख स्थान

पिछोला झील- (ऐतिहासिक) दृष्टि से इस झील के बारे में कहा जाता है कि महाराणा लाखा के काल में इस झील का निर्माण एक बंजारे द्वारा करवाया गया। इस झील के बीचों बीच एक नटनी का चबूतरा बना हुआ है। महाराणा उदयसिंह द्वितीय ने इस शहर की खोज के बाद इस झील का विस्तार कराया था। झील में दो द्वीप हैं और दोनों ही द्वीपों पर महल बने हुए हैं। एक है जगनिवास, जो अब लेकपैलेस होटल बन चुका है और दूसरा है जग मंदिर। दोनों ही महल राजस्थानी शिल्प कला के बेहतरीन उदाहरण हैं, बोट द्वारा जाकर इनकी खूबसूरती को देखा जा सकता है।

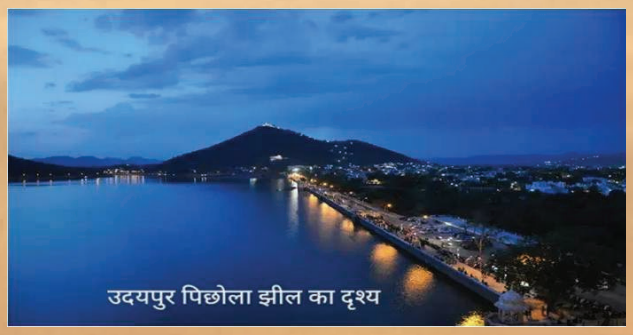

उदयपुर पिछोला झील का दृश्य

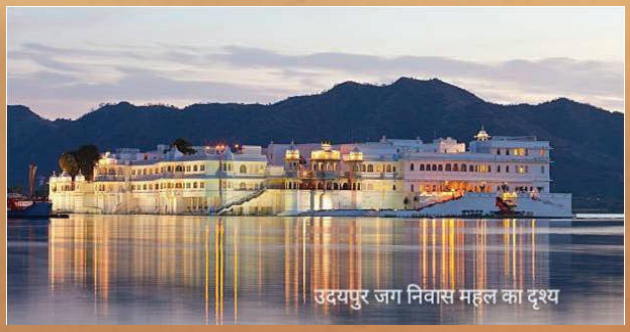

उदयपुर जग निवास महल का दृश्य

जगनिवास द्वीप - पिछोला झील पर बने द्वीप पैलेस में से एक यह महल, जो अब एक सुविधा जनक होटल का रूप ले चुका है। कोर्टयार्ड, कमल के तालाब और आम के पेड़ों की छाँव में बना स्विमिंग-पूल मौज-मस्ती करने वालों के लिए एक आदर्श स्थान है। आप यहाँ आएं और यहाँ रहने तथा खाने का आनंद लें, किंतु आप इस के भीतरी हिस्सों में नहीं जा सकते।

जगमंदिर द्वीप - पिछोला झील पर बना यह एक अन्य द्वीप पैलेस है। यह महल महाराजा करणसिंह द्वारा बनवाया गया था, किंतु महाराजा जगत सिंह ने इसका विस्तार कराया। महल से बहुत शानदार दृश्य दिखाई देते हैं, गोल्डन महल की सुंदरता दुर्लभ और भव्य है। यहँ पर मोटर बोट के द्वारा जाना पडता है। यहँ पर शाम के समय भव्य नज़ारा देखने को मिलता है।

उदयपुर सिटी महल का दृश्य

उदयपुर जग मंदिर का दृश्य

उदयपुर सिटी महल - प्रसिद्ध और शानदार सिटी महल उदयपुर के जीवन का अभिन्न अंग है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा महल है। इस महल का निर्माण शहर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह द्वितीय ने करवाया था। उनके बाद आने वाले राजाओं ने इस में विस्तार कार्य किए। इस महल को बनाने में 22 राजाओं का योगदान रहा जिसे पूरा बनने में लगभग 4०० साल लग गये। फिर भी इसके निर्माण में आश्चर्यजनक समानताएं भली-भँति देखने को मिलती हैं। इस व्रहद महल में उत्तरी ओर से बड़ी पोल से और त्रिपोलिया द्वार से प्रवेश किया जा सकता है।

सज्जनगढ़ (मानसून पैलेस) - उदयपुर शहर के दक्षिण में अरावली पर्वत माला के एक पहाड़ का निर्माण महाराजा सज्जनसिंह ने करवाया था। यहाँ गर्मियों में भी अच्छी ठंडी हवा चलती है। सज्जनगढ़ से उदयपुर शहर और इसकी झीलों का सुंदर नज़ारा दिखता है। पहाड़ की तलहटी में अभयारण्य है। सायंकाल में यह महल रोशनी से जगमगा उठता है, जो देखने में बहुत सुंदर दिखाई पड़ता है।

फतेहसागर - महाराणा जयसिंह द्वारा निर्मित यह झील बाढ़ के कारण नष्ट हो गई थी, बाद में महाराणा फतेहसिंह ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। झील के बीचों-बीच एक बगीचा है जिसका नाम नेहरु गार्डन है। आप ऑटो द्वारा झील तक पहुँच सकते हैं। इस के बाद मोटर बोट के द्वारा नेह रुगार्ड न पहुंच कर वहॉ पर आनंद ले सकते हैं।

मोतीमगरी - यहाँ सिसोदिया राजपूत वंश के विश्व प्रसिद्ध महाप्रतापी राजा महाराणा प्रताप की मूर्ति है। मोतीमगरी फतेह सागर के पास की पहाड़ी पर स्थित है। मूर्ति तक जाने वाले रास्तों के आसपास सुंदर बगीचे हैं, विशेष कर जापानी रॉक गार्डन दर्शनीय हैं।

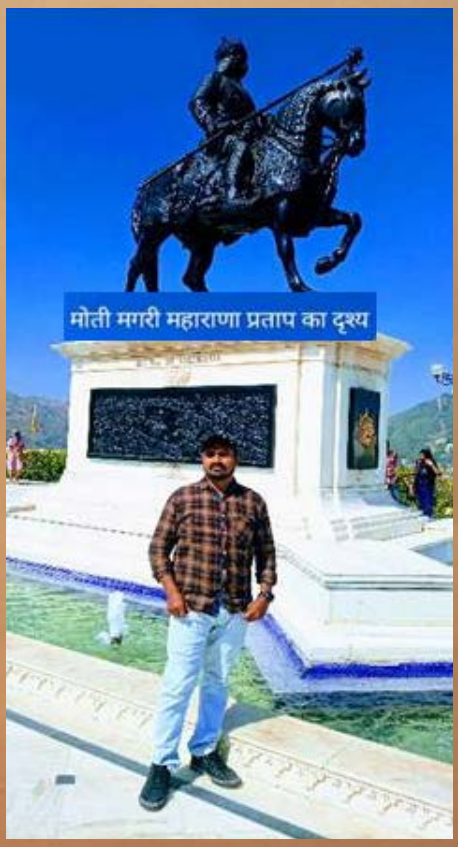
मोती मगरी महाराणा प्रताप का दृश्य

स्वतंत्रता संग्राम की सबसे छोटी सेनानी " मैना "

हितेश बाबू

स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर भाग लेने वाली इन वीरांगनाओं की आहुति को जान कर वो कौन होगा जो इन वीरांगनाओं की दशा के बारे में सोचने को मजबूर नहीं हो जायेगा। कैसे मान लें की आज़ादी किसी एक ही की देन है, बाकी सब खामोश रहे होंगे। ये वो प्रमाण हैं जो आँखों में आंसू के साथ भुजाओं में एक अजीब सी हलचल पैदा करते हैं और आज समाज में बचा शौर्य और साहस इन्हीं के खून से सींचे गए शौर्य के बाग़ की देन है।

ये उस समय की बात है जब प्रथम स्वाधीनता संघर्ष समग्र भारत में 1857 में प्रारम्भ हुआ। भारतीय पक्ष की जीत हुई; पर फिर अंग्रेजों का पलड़ा भारी होने लगा और वे चारों और तबाही मचाने लगे। अंग्रेजी हुकूमत का प्रकोप हावी होने लगा। भारतीय सेनानियों का नेतृत्व नाना साहब पेशवा कर रहे थे। उन्होंने अपने सहयोगियों के आग्रह पर बिठूर का महल छोड़ने का निर्णय कर लिया। उनकी योजना थी कि किसी सुरक्षित स्थान पर जाकर फिर से सेना एकत्र करें और अंग्रेजों के साथ नये सिरे से मोर्चा चलाएं।

मैना नाना साहब की दत्तक पुत्री थी। वह उस समय केवल 13 वर्ष की थी। नानासाहब बड़े असमंजस में थे कि उसका क्या करें? नये स्थान पर पहुंचने में न जाने कितने दिन लगें और मार्ग में न जाने कैसी कठिनाइयां आयें।

अतः उसे साथ रखना खतरे से खाली नहीं था; पर महल में छोड़ना भी कठिन था। ऐसे में मैना ने स्वयं महल में रुकने की इच्छा प्रकट की। नानासाहब ने उसे समझाया कि अंग्रेज अपने बन्दियों से बहुत दुष्टता का व्यवहार करते हैं। फिर, मैना तो एक कन्या था। अतः उसके साथ दुराचार भी हो सकता था, पर मैना एक साहसी लड़की थी। उसने अस्त्र-शस्त्र चलाना भी सीखा था। उसने कहा कि मैं क्रांतिकारी की पुत्री होने के साथ ही एक हिन्दू ललना भी हूं। मुझे अपने शरीर और नारी धर्म की रक्षा करना आता है।

अतः नानासाहब ने विवश होकर कुछ विश्वस्त सैनिकों के साथ उसे वहीं छोड़ दिया। पर कुछ दिन बाद ही अंग्रेज सेनापति ने गुप्तचरों से सूचना पाकर महल को घेर लिया और तोपों से गोले दागने लगा। इस पर मैना बाहर आ गयी। सेनापति हेय नाना साहब के दरबार में प्रायः आता था। अतः उसकी बेटी मेरी से मैना की अच्छी मित्रता हो गयी थी। मैना ने यह संदर्भ देकर उसे महल गिराने से रोका; पर जनरल आउटरम के आदेश के कारण सेनापति हेय विवश था। अतः उसने मैना को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

मैना को महल के सब गुप्त रास्ते और तहखानों की जानकारी थी। जैसे ही सैनिक उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़े, वह वहां से गायब हो गयी। सेनापति के आदेश पर फिर से तोपें आग उगलने लगीं और कुछ ही घंटों में वह महल ध्वस्त हो गया। सेनापति ने सोचा कि मैना भी उस महल में दब कर मर गयी होगी। अतः वह वापस अपने निवास पर लौट आया। पर मैना जीवित थी। रात में वह अपने गुप्त ठिकाने से बाहर आकर यह विचार करने लगी कि उसे अब क्या करना चाहिए?

उसे मालूम नहीं था कि महल ध्वस्त होने के बाद भी

कुछ सैनिक वहां तैनात हैं। ऐसे दो सैनिकों ने उसे पकड़ कर जनरल आउटरम के सामने प्रस्तुत कर दिया। नाना साहब पर एक लाख रूपए का पुरस्कार घोषित किया गया था। जनरल आउटरम उन्हें पकड़ कर आंदोलन को पूरी तरह कुचलना तथा ब्रिटेन में बैठे शासकों से बड़ा पुरस्कार पाना चाहता था। उसने सोचा कि मैना छोटी सी बच्ची है। अतः पहले उसे प्यार से समझाया गया; पर मैना चुप रही। यह देखकर उसे जिन्दा जला देने की धमकी दी गयी; पर मैना इससे भी विचलित नहीं हुई।

अंततः आउटरम ने उसे पेड़ से बांधकर जलाने का आदेश दे दिया। निर्दयी सैनिकों ने ऐसा ही किया। तीन सितम्बर, 1857 की रात में 13 वर्षीय मैना चुपचाप आग में जल गयी। इस प्रकार उसने देश के लिए बलिदान होने वाले बच्चों की सूची में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखवा लिया। ऐसी वीरांगना के चरणों में आज यह देश बारम्बार नमन और वंदन करता है साथ ही उनके बलिदान की गौरव गाथा को दुनिया के आगे समय-समय पर लाने के संकल्प को भी दोहराता है। देवी मैना अमर रहें।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर के एक प्रसिद्ध गीत की पंक्तियाँ एकदम सटीक प्रतीत होती हैं:

"जब घायल हुआ हिमालय,
खतरे में पड़ी आजादी।
जब तक थी साँस लड़े वो
फिर अपनी लाश बिछा दी।"

हौंसलों की उड़ान

नम्या गुप्ता

मेरा जुनून है उड़ना
ऊंचाईयों को चीरना
मुश्किलों से लडना
मंज़िलों को पार करना, सीख़ना और सिख़ाना
रफ़्तार है मेरी पहचान
मेरा अंदाज़ मैं हू वेगवान
ज़िंदगी की कभी तेज, कभी धीमी है रफ़्तार
बस मेरी चाल हमेशा तेज तर्रार
सही सलामत लाऊंगा सबको मैं साथ
होगा डि-ब्रीफिंग के बाद जाम सबके हाथ
मिग 21 हो या सुखोइ 30 एमकेआई,
मुश्किल कोई क्यों ना आ जाये
भरोसा और मित्रता, खुद पर भरोसा

प्राण जाए पर वचन ना जाए
कभी जो मैं ना लौटू
तुम बहाना ना एक भी आँसू
सुबह सूरज के साथ तुम भी उड़ना
फिर वही जोश पीछे ना मुडना
याद रहे मैं भी यही करता
दोस्ती हमारी कभी ना टूटेगी
तेरी याद में, मैं भी फर्राटे से उड़ान भरता
दोस्ती हमारी कभी ना टूटेगी
यारी ये कभी ना छूटेगी
बस इतना याद रखना
रफ्तार है मेरी पहचान
मेरा अंदाज़ मैं हूँ वेगवान

परमात्मा का साथ

अनुप कुमार गुप्ता

एक भक्त था वह परमात्मा को बहुत मानता था, बड़े प्रेम और भाव से उनकी सेवा किया करता था। एक दिन भगवान से कहने लगा -"मैं आपकी इतनी भक्ति करता हूँ, पर आज तक मुझे आपकी अनुभूति नहीं हुई। मैं चाहता हूँ कि आप भले ही मुझे दर्शन ना दें, पर ऐसा कुछ कीजिए की मुझे ये अनुभव हो कि आप हैं।"

भगवान ने कहा-"ठीक है। तुम रोज सुबह समुद्र के किनारे सैर पर जाते हो, जब तुम रेत पर चलोगे तो तुम्हें दो पैरों की जगह चार पैर दिखाई देंगे, दो तुम्हारे पैर होंगे और दो पैरो के निशान मेरे होंगे। इस तरह तुम्हें मेरी अनुभूति होगी।"

अगले दिन वह सैर पर गया। जब वह रेत पर चलने लगा तो उसे अपने पैरों के साथ-साथ दो पैर और भी दिखाई दिए। वह बड़ा खुश हुआ। अब रोज ऐसा होने लगा।

एक बार उसे व्यापार में बहुत घाटा हुआ, सब कुछ चला गया, वह सड़क पर आ गया और उसके अपनों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। देखो यही इस दुनिया की रीत है, मुसीबत के समय सब साथ छोड़ देते हैं। अब वह सैर पर गया तो उसे चार पैरों की जगह सिर्फ दो पैर ही दिखाई दिए। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बुरे वक्त में भगवान ने भी साथ छोड़ दिया।

धीरे-धीरे सब कुछ ठीक होने लगा, फिर सब लोग उसके पास वापस आने लगे। एक दिन जब वह सैर पर गया तो उसने देखा कि चार पैर फिर से दिखाई देने लगे। उससे अब रहा नहीं गया। वह बोला- "भगवान जब मेरा बुरा वक्त था तो सबने मेरा साथ छोड़ दिया था पर मुझे इस बात का गम नहीं था, क्यों कि इस दुनिया में ऐसा ही होता है, पर आप ने भी उस समय मेरा साथ छोड़ दिया था, ऐसा क्यों किया ?"

भगवान ने कहा, "तुमने ये कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हारा साथ छोड़ दूँगा, तुम्हारे बुरे वक्त में रेत पर तुमने दो पैर के जो निशान देखें, वे तुम्हारे पैरों के नहीं, मेरे पैरों के थे। उस समय मैं तुम्हें अपनी गोद मे उठाकर चलता था और आज जब तुम्हारा बुरा वक्त समाप्त हो गया तो मैंने तुम्हें नीचे उतार दिया है। इसीलिए तुम्हें फिर से चार पैर दिखाई दे रहे हैं

"तो कहानी का सारांश यह है कि हमेशा भगवान पर विश्वास रखो और भगवान सदा आपकी देखभाल करेंगे।

अनोखी शक्ति

शिप्रा प्रसाद
पत्नी श्री रमेश चंद्र प्रसाद

किसी गाँव के एक किनारे जहाँ एक नदी की धारा बहती थी, वहाँ पर एक बूढ़ी माँ अपनी छोटी सी कुटिया में रहती थी। उसकी उम्र लगभग 80 वर्ष के आस- पास थी। वह अपने में मस्त रहती थी और अपना हर कार्य बड़ी लगन और आस्था के साथ करती थी और हमेशा दूसरो की भलाई के बारे में ही सोचती थी। इसके लिए गाँव में सब उसे जानते ही थे, दूसरे गाँव के लोग भी इससे मिलने आया करते थे। उसकी टूटी-फूटी झोपड़ी में अक्सर बरसात के मौसम में अलग ही वातावरण होता था। जैसे घर के बाहर पानी बरसता था वैसे ही छत से घर के भीतर भी बरसात का मौसम घर के हर कोने में नजर आता था। एक दिन बूढ़ी माँ ने अपने गाँव में देखा कि किसी का मकान पत्थरों से बनाया जा रहा है, पता करने पर जाना कि यह मकान इस गाँव के सेठ का है जो बहुत ही अमीर था। मकान बना रहे राजमिस्त्री के पास जाकर बूढ़ी माँ बोली, "क्या आप मेरे घर की छत को थोड़ा ठीक कर सकते है, जिससे मेरे घर में बरसात का पानी नहीं आये"। ये सुनकर राजमिस्त्री बोला, जितनी देर में हम तुम्हारी छत ठीक करेंगे, उतनी देर में हम एक तरफ की पूरी दीवार खड़ी कर देंगे। चली जाओ यहां से, हमारा समय बर्बाद न करो। यह सुनकर बूढ़ी माँ बहुत दुखी हुई और उसके मुख से बददुआ निकल गई, "तेरी बनाई दीवार टेढ़ी हो जाए"। सचमुच दीवार टेढ़ी हो गई, यह देखकर राजमिस्त्री अंचभित हो गया। राजमिस्त्री को लगा कि उसके मजदूरों ने ठीक से काम नहीं किया है लेकिन सेठ टेढ़ी दीवार देखकर नाराज होगा अतः उसने फिर से दीवार बनाई, मगर यह क्या वह फिर टेढ़ी हो गई। इसी प्रकार पूरे दिन वह एक ही दीवार को ठीक करने के लिए उसे तोड़ने और बनाने में ही लगा रहा, पर वह जब भी बनाता, वह टेढ़ी हो जाती। ऐसा करते-करते पूरा दिन लग गया। जब शाम का सेठ अपने नए घर को देखने आया तो यह देखकर उसे बहुत गुस्सा आया कि पूरे दिन में एक दीवार खड़ी नहीं हो पाई और जो बनी है वह भी टेढ़ी है। उसने गुस्से से राजमिस्त्री को बुलाया और पूछा, यह क्या है? तब राजमिस्त्री ने बताया कि एक बूढ़ी माँ आयी थी और जो हुआ वह सब उसने सेठ को बता दिया। पहले तो उसे राजमिस्त्री की बात पर यकीन ही नहीं हुआ

लेकिन जब मजदूरों ने उसकी बात की पुष्टि की तो वह बड़ा हैरान हुआ। यह सुन कर वह बूढ़ी माँ के घर गया और बूढ़ी माँ से बोला, "मैं आपकी छत को ठीक करवा दूंगा और घर की भी मरम्मत करवा दूंगा, पर आपकी बद्दुआ के कारण मेरा काम रुका हुआ है और मैं परेशान हो रहा हूं। मैं आपसे विनती करता हूं माँ, कृपया कुछ कीजिए, आपने जो बददुआ दी है, वह आप वापस ले लें ताकि मेरा काम समय पर पूरा हो सके। यह देखकर बूढ़ी माँ को सेठ पर दया आ गई और उसने अपना आर्शीवाद सेठ को दिया। साथ ही उसने अपनी बद्दुआ वापिस भी ले ली। कुछ ही देर में दीवार अपने आप सीधी हो गई। यह देखकर सेठ और राजमिस्त्री दोनों बहुत हैरान हुए मगर खुश भी बहुत हुए।

इसलिए कहा जाता है कि किसी भी इंसान का दिल नहीं दुखाना चाहिए, क्योंकि कब दिल से निकली किसकी दुआ, बददुआ बन जाए और बददुआ दुआ बन जाए, हमें नहीं पता। किसी का दिल दुखा कर अपना काम करने वालों को कभी सफलता नहीं मिलती है।

"मगर"

चिंगाखम प्रताप सिंह

बारिश का मौसम चल रहा था। हर दिन की तरह दामोदर भीगते हुए दफ्तर पहुंचा। एक चपरासी की जिंदगी में क्या-क्या सपने नहीं होते अक्सर सपने, सपने ही रहे जाते हैं। एक शादी के एक लायक बेटी, एक नौजवान बेटा और एक छोटी सी बेटी की जरुरतें पूरी करते-करते दामोदर और उनकी पत्नी ने क्या-क्या बलिदान दिए हैं। एक दिन उनके भीगते हुए कपड़े को देखकर, उनके अधिकारी ने पूछा - "दामोदरजी, आप एक छाता क्यों नहीं खरीद लेते। रोज-रोज ऐसे भीगने से आप बीमार पड़ जाओगे।" मुस्कुराते हुए दामोदर ने जवाब दिया - "अब तो आदत सी हो गयी है सर। बहुत जल्द एक छाता खरीद लूंगा।" फिर अधिकारी बोला - "यही बात तो हम पिछले कई सालों से सुन रहे हैं, **मगर...**" अगले दिन रोज की तरह दामोदर जल्दी उठा, पूजा-पाठ करने के बाद घरवालों के साथ नाश्ता किया। फिर तैयार हो गये दफ्तर जाने के लिये। अपना टिफिन लेते हुए घर से निकलने वाला ही था, तभी रसोई से एक आवाज आई - "सुनते हो...थोड़ी देर रुक जाईए नहीं तो फिर से भीग जाओगे।" दामोदर ने कहा - " इतनी तेज बारिश भी तो नहीं है और देर हुई तो बस भी छूट जायेगी, मैं निकलता हूँ।" उनकी पत्नी बोली- "आप भी हद करते हैं। एक छाता क्यों नहीं खरीद लेते हो? रोज कहते हो कि खरीदता हूँ, **मगर...**"

फिर क्या...वही पुरानी कहानी। फिर से दामोदर भीगते हुए दफ्तर पहुंचा। उस दिन शाम को जब दामोदर दफ्तर से वापस आ रहा था, तब उनके घरवाले उनको घर की ओर आते हुए देख रहे थे। सभी घरवाले उनको ही देख कर मुस्कुरा रहे थे। सभी घरवाले मिलकर उनका इंतजार कर रहे थे, दामोदर ने ऐसा नजारा पहले कभी देखा नहीं था। कुछ तो छुपा रहे हैं उनके घरवाले, यह बात दामोदर समझ गया था। रात को सभी मिलकर खाना खा रहे थे, तब उनकी पत्नी रसोई गयी और हाथ में एक चीज लेकर बाहर आई। वह चीज था, एक नया छाता जो उनके घरवालों ने उनके लिए खरिदा है। छाता देखकर दामोदर की आंखें भर आईं। वो पल एक यादगार पल रहा...दामोदर के लिए और उनके घरवालों के लिए भी। कभी-कभी एहसास इंसान को सोने नहीं देता है...कोई एक चीज जिसके लिए बरसों तरसते रहे मगर मजबूरी के कारण उसे पाने का ख्याल भी मन में नहीं आया। अचानक जब वह चीज मिल जाती है तो उसकी खुशी कुछ अलग ही होती है। ऐसी ही खुशी उस रात दामोदर ने महसूस की। उस रात दामोदर सोचता रहा कि अब दफ्तर में लोग उनका मजाक नहीं उड़ाएंगे, उनके अधिकारी फिर से सवाल नहीं पूछेंगे, बिना भीगे हुए वे दफ्तर जाएंगे...यह सब सोचते-सोचते दामोदर को रात भर नींद नहीं आयी। दामोदर की खूशी का ठिकाना न रहा। वह इसी इंतजार में था कि यह रात जल्दी से खत्म हो जाए और अगले दिन वह दफ्तर के लिए अपनी नई छतरी लेकर निकल जाए। अगले दिन दामोदर कुछ ज्यादा ही जल्दी नहा धोकर नाश्ता करके तैयार हो गया। उसने अपना टिफिन लिया और एकदम मुस्कुराते हुए नया छाता लेकर घर से बहर निकला। फिर क्या! कुदरत का खेल देखो, उस दिन बारिश ही नहीं हुई। आसमान की तरफ देखा और दामोदर के चेहरे की रौनक अचानक से उतर गयी। मन ही मन दामोदर ने सोचा - "कितना खुश था मैं कुछ पल पहले। रात भर यह सोचकर सोया नहीं कि आज तो मैं छाता लेकर काम पर जाऊंगा और भीगूंगा भी नहीं, **मगर...**"

दृष्टिकोण

सीएच गायत्री

भारत एक रुढिवादी देश है। इस देश में अनेक प्रकार के शास्त्रों का उदय हुआ है। कई चीज़ें जो विज्ञान के लिए उपलब्ध नहीं थी, विज्ञान से पहले हमारे देश के ऋषियों ने खोज ली थीं। जैसे कि ऋषि धन्वंतरि ने आयुर्वेद शास्त्र एवं ऋषि भारद्वाज ने वायुयान का आविष्कार किया था। ऋषि विश्वामित्र ने आज के युग में प्रचलित प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल प्रणाली) हज़ारों साल पहले ही खोज निकाले थे। गर्ग मुनि नक्षत्रों के ख़ोजकर्ता माने जाते हैं। ऋषि सुश्रुत ने त्वचारोपण (प्लास्टिक सर्जरी), ऋषि भास्करचार्य गुरुत्वाकर्षण शक्ति के खोजकर्ता हैं। ऋषि आर्यभट्ट ने खगोलशास्त्र की खोज की हैं। इस तरह हमारे देश के ऋषि मुनियों ने हजारों साल पहले ही किसी भी तरह के विज्ञान की मदद के बिना अनेक प्रकार के शास्त्रों का आविष्कार किया है।

इस धरती पर जन्म लेने वाला प्रत्येक मनुष्य किसी ना किसी धर्म का है और उस धर्म के देवताओं की पूजा करता है। चाहे कोई भी रूप में हो, लेकिन एक अदृश्य शक्ति के रूप में भगवान है, यह मानते हुए पूजा और प्रार्थना करना आम बात है। लेकिन इनमें से कुछ नास्तिक दावा करते हैं कि ईश्वर मौजूद नहीं है, जब कि आस्तिक दावा करते हें कि ईश्वर मौजूद है। लेकिन भगवान हैं या नहीं, कैसे और कहॉ हैं, इस सवाल का कोई जवाब नहीं है। हर कोई अपनी भावनाओं के अनुसार भगवान के रूप की कल्पना करके पूजा करते हैं। वेद-पुराणो के अनुसार देवता प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करते हैं। लक्ष्मी देवी धन देती हैं, गणपति विघ्नों का नाश करते हैं, हनुमान हिम्मत देते हैं और सूर्य देव स्वास्थ्य के प्रधान हैं। दुनिया भर में सूर्य के कई बड़े- बड़े प्राचीन मंदिर भी बने है। जैसे कि कोणार्क सूर्य मंदिर,मार्तंड सूर्य मंदिर, रनकपुर सूर्य मंदिर।

विज्ञान के अनुसार भी यह कहा जाता है कि सूर्य गर्मी और विटामिन डी का स्त्रोत है। सूर्य के अभाव में धरती पर किसी भी प्रकार का जीवन सम्भव नहीं है। मानव तथा अन्य जीव-जंतुओं का जीवन पेड़ों के बिना असम्भव है और पेड़ों का सूरज के बिना। अतः धरती पर जीवन का मुख्य आधार सूरज ही है। पेड़-पौधे सूरज की ऊर्जा का उपयोग करके अपना खाना बनाते है। पेड़ों द्वारा ही मनुष्य को ऑक्सीजन प्राप्त होती है, जिस कारण हम सांस ले पाते हैं। सूरज की गर्मी से समुद्र, सरोवर, झील आदि का पानी वाष्प बनकर वायुमण्डल में बादल के रूप में जमा होता है और यह बादल हमें वर्षा प्रदान करते हैं। यदि सूरज ही न हो तो यह चक्र चलना असम्भव है और पानी के बिना यह धरती निर्जर ग्रह बनकर रह जायेगी।

वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य की उम्र लगभग नौ बिलियन वर्ष मानी जाती है। सूरज अनेक गैसो से बना एक प्रज्वलित गोला है। सूरज का खुद का एक परिवार भी है, जिसे सौर मंडल कहते है। सौर मंडल में विभिन्न ग्रहों, धूमकेतुओं, उल्का पिंडो और तारों का समावेश है। ये सभी सूर्य के आसपास निश्चित कक्षाओ में घूमते है।

सूर्य ऊर्जा का भंडार है तभी तो आज सौर ऊर्जा का इस्तेमाल करके कई क्षेत्रों में बिजली उत्पन्न की जाती है। दुनिया में आज कई जगहों पर सोलर कार और सोलर ट्रेन भी चलती है। सोलर कुकर का उपयोग करके उसमें खाना भी बनाया जाता है। यदि सूर्य की सिर्फ एक घंटे की पूरी ऊर्जा को एकत्रित कर लिया जाए तो पूरे विश्व के लिए साल भर की बिजली उत्पन्न की जा सकती है।

प्रसिध्द अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स ने एक साक्षात्कार में यह भी कहा है कि अंतरिक्ष में कुछ ऊर्जा है और 'ओम' की ध्वनि सुनाई देती है। अतः आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दोनों रूपों से इस सृष्टि के मूलाधार "सूर्य" को भगवान कह सकते है और अगर कोई पूछे तो बता सकते है कि ' हॉ, मैंने भगवान को देखा है वो है प्रत्यक्ष दैव "सूर्य देव"।

रमेश चंद्र प्रसाद

हमारी विरासत

भारतीय संस्कृति जो पूरे विश्व में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है क्योंकि यह हमारी सदियों पुरानी सनातन संस्कृति है जिसे धरोहर की तरह हमारे पूर्वजों ने सहेजा है और अब इस संस्कृति को सहेजना नई पीढ़ी के हाथ में है। इस संस्कृति को जानने एवं विस्तार से समझने के लिए विश्व भर के लोग लालायित रहते हैं। कुछ विदेशी हमारी संस्कृति से आकर्षित होकर ही हमारे देश में घुसे लेकिन कुछ सोने की चिड़िया कहे जाने वाले इस देश में उपलब्ध समृद्ध संसाधनों का लाभ उठाने के लिए व्यापार की दृष्टि से यहां घुसे। विदेशों में भारतीय संस्कृति को बहुत ही उच्च स्तर का समझा जाता है, क्योंकि इसकी जैसी और कोई भी संस्कृति पूरे विश्व में नहीं है। हमारे देश में अनेक सम्प्रदाय के राजाओं नें राज्य किया और इन्होंने अपनी विरासत के साथ कोई छेड़-छाड़ नहीं की, बल्कि अपनी संस्कृति को और आगे बढ़ाया ताकि भविष्य में ये कभी मिट न सके।

हमारी संस्कृति की मिसाल पूरी दूनिया में दी जाती है क्योंकि ये सबसे ज्यादा संपन्न एवं समृद्ध है और हमारी विशेषता"अनेकता में एकता" है जो इस देश की मूल पहचान है। हमारा देश भारत ही पूरे विश्व में एकमात्र ऐसा देश है जहाँ पर अनेक धर्मों के लोग एक साथ मिल -जुल कर रहते है और अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुए स्वतंत्र रूप से अपना जीवन-यापन करते है। जिसके कारण हम इसे धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में जानते है।

हमारी सभ्यता को पूरे विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति माना गया है जो अन्य देशों को हमारी ओर आकर्षित करती है। वो इसके बारे में जानने के लिए हमेशा आतुर रहते हैं। इसे सभी संस्कृतियों से ऊपर एवं सर्वोच्च माना जाता है, वो या जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र हो, सभी का हमेशा विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृति या तो समय की धारा के साथ -साथ खत्म हो गई या इसे मानने वाले कम होते गए, परन्तु हमारे भारत देश की संस्कृति आदि काल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर -अमर बनी हुई है।

किसी भी देश की आस्था इसकी संस्कृति से जुड़ी होती है जो उसकी जाति एवं समुदाय की आत्मा होती है, ये संस्कृति ही होती है जिससे उस देश के संस्कारों का बोध होता है, ये संस्कृति ही होती है जिसके सहारे हम अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों का निर्धारण करते है। इसका एक साधारण सा अर्थे यह है कि जिस संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि एव सजावट आदि में भारत के लोग विश्वास रखते है।आज उसी संस्कृति को विश्व पटल पर भी स्वीकारा जा रहा है। हमारे यहाँ धरती को ही परिवार ("वसुधैव कंटुबकम") माना गया है। हमारे यहाँ अतिथि को भगवान का दर्जा दिया गया है इसलिए हम "अतिथि देवो भवः" का पालन करते हैं। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि हमारे देश में किसी भी धर्म, समुदाय के सभी लोग मिल जुल कर रहते हैं, चाहे वो गोरा हो, काला हो या भाषाएँ भिन्न- भिन्न हो परंतु हम सभी एक है और यही हमारी संस्कृति की पहचान व विशेषता है।

भारत के सभी राज्य और क्षेत्रों के अलग-अलग रहन-सहन और भाषाओं की विभिन्नता के कारण हमारी संस्कृति को इस धरती की सबसे बड़ी और सबसे अलग संस्कृति माना गया है। भारत में कोई भी व्यक्ति एक राज्य से दूसरे राज्य में जाकर अपना कार्य कर सकता है, वहाँ रह सकता है, वहाँ की बोली सीख सकता है, लोगों से मिल-जुल कर रह सकता है। उनके व्यवहार, त्यौहार सभी अपना सकता है। यही हमारी संस्कृति की पहचान है। हमारे देश में अनेक कथाएँ प्रचलित है जिसमें रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ यह सिद्ध करते हैं कि हमारी संस्कृति कितनी प्राचीन है। हमारे देश में बहुत से प्राचीन स्थल है जैसे- कोणार्क मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, तिरूपति बालाजी आदि अपनी प्राचीन विशेषताओं के कारण आज भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

हमारे देश के लोगों की आस्था इन पर बनी हुई है। यहां लोग वैष्णो माता को पूजते हैं तो अजमेर शरीफ के दर्शन के लिए भी लालायित रहते हैं। क्रिसमस मनाते हैं तो महावीर जयन्ती का भी विशेष महत्व है। इसी प्रकार कुंभ मेला जो 12 साल में एक बार हमारे देश में लगता है वह भी इस सनातन संस्कृति का एक रूप है। इस कुंभ मेले को देखने और समझने के लिए लाखों विदेशी पर्यटक हमारे देश आते है और इस संस्कृति से रूबरू होते है और ये जानने की कोशिश करते हैं कि ये इतना खास क्यों है। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हम एक भारतीय है और भारत जैसे पावन देश में हमने जन्म लिया।

इस संस्कृति को अन्य संस्कृतियों से जो बात अलग करती है वो "हमारे देश की भाषा, वेशभूषा, भारतीय पर्व एवं लोगों को सम्मान देना" है। भारत में कई सारी भाषाएँ बोली जाती है , यहाँ पर हर राज्य की अपनी एक भाषा है जो उस राज्य के लोग अपने सामान्य जीवन में बोलते है। भारत की मुख्य भाषा हिंदी है और भारत में लगभग 22 भाषाएं हैं जो बोली जाती है। इन 22 भाषाओं में तमिल भाषा को सबसे प्राचीन भाषा माना जाता है। संस्कृत जिसे हर भारतीय भाषा की जननी माना जाता है, का उपयोग रामायण एवं महाभारत को लिखने के लिए किया गया।

हर राज्य की नागरिकों की वेशभूषा अलग- अलग है जो हर राज्य की अलग पहचान बनाती है जैसे - गुजरात की महिलाएं चनिया चोली एवं पुरूष क्रोनो एवं केडियू, हिमाचल प्रदेश की कुर्ता एवं ठेठ हिमाचल की टोपी, पंजाब की महिलाएँ सलवार सूट एवं पुरूष कुर्ती पायजामा पहनते हैं। भारत की सबसे प्रसिद्ध वेशभूषा स्त्रियों के लिए साड़ी एवं पुरूषों के लिए धोती एवं कुर्ता को माना जाता है।

भारत में साल भर कोई न कोई पर्व-त्योहार मनाया जाता है। हर राज्य की पहचान उनके त्योहारों से होती है जो उनकी पुरानी संस्कृति के बारे में बताती है। जैसे - गुजरात का गर्बा, महाराष्ट्र की गणेश पूजा, बंगाल की दुर्गा पूजा, बिहार का छठ पर्व । ईंद, मकर संक्राति, क्रिसमस जैसे पर्व भी हमारे देश की संस्कृति को दर्शाते हैं कि यहाँ कई सारे धर्म

के लोग रहते है और इनके कई सारे पर्व भी होते है जिसे सभी धर्मों के लोग मिल-जुल कर एक साथ मनाते है ।

अपने माता- पिता का सम्मान करना, गुरूओं को सम्मान देना यहाँ बचपन से सिखाया जाता है। हमारे जीवन को सही दिशा एक गुरू ही देता है। जब गुरू द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरू दक्षिणा के रूप में उसके अंगूठे की माँग की तो एकलव्य ने हँसते हुए अपने हाथ के अंगूठे को काटकर गुरू के चरणों में रख दिया था। इसी प्रकार श्रीराम ने अपने पिता के वचनों का पालन करते हुए 14 वर्षों का बनवास काटा था।

इस संस्कृति के बारे में हम जितना बताएं, वो कम ही है क्योंकि यह एक ऐसी सभ्यता व संस्कृति है जो बहुत ही पूरानी और कई सदियों से ये आगे बढ़ती जा रही है। इस विरासत को हमें संभाल कर रखना है और आने वाली पीढ़ी से भी इसकी पहचान करवानी है ।

पानी

संतोष तुपसेंदर
सुपुत्र
श्री प्रवीण कुमार नामदेव

पानी है कितना अनमोल
आओ जाने इसके मोल

प्यासों की यह प्यास बुझाए
सबके लिए अमृत बन जाए...

जीव जंतु और इंसान
इसमें बसती सबकी जान

नदियों में यह बहकर आए
अंत में सागर में मिल जाए

आसमान में भाप बन उड़ कर
वापस आए बारिश बन कर

आओ मिलकर जल को बचाए
व्यर्थ इसे ना हम बहाए।।

डॉ. अतुल कुमार दुबे

हमने देखा

जो न कहीं थे उनको भी कुछ होते देखा,
खुली हुई आँखों को हमने सोते देखा

जिनके पाँव पेट से ज्यादा नहीं खुले थे,
उनको हमने बोझ देह का ढ़ोते देखा।

आँखें नम हो जाती कोई बात नहीं थी,
हमने नरकंकालों को भी रोते देखा

जो न हुए थे कभी किसी के उन लोगों को,
अंधी यादों के कुहरे में खोते देखा ।

जला रहे थे औरों के घर हमने उनको,
अपने घर मे अग्निकणों को बोते देखा

जो कहते थे साथ चलेंगे हम जीवन भर,
जब पड़ी जरूरत उनको पीछे होते देखा

अपने सुख से सुखी नहीं हैं कुछ इस जग में,
दूसरों के दुःख में हमने उनको हँसते देखा |

अजगर जैसे लेटे बाहर फैल पसर कर,
उनको साँपों के भीतर तार पिरोते देखा

सजे हुए थे निर्माणों के नीड़ जहाँ पर,
उस बस्ती को मुर्दाघर भी होते देखा ।

सुविचार

रमा देवी दूड़ला

1. आलसी का वर्तमान और भविष्य नहीं होता। ...चाणक्य

2. उठो, जागो और तब तक नहीं रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। ...स्वामी विवेकानंद

3. मुखर होना आसान है जब आप पूर्ण सत्य बोलने की प्रतीक्षा नहीं करते। ...रबींद्रनाथ टैगोर

4. एक मकान तब तक घर नहीं बन सकता जब तक उसमें दिमाग और शरीर दोनों के लिए भोजन और आग ना हो। ...बेंजमिन फ्रैंक्लिन

5. जीवन लंबा होने के बजाए महान होना चाहिए। ...डॉ बी.आर.अंबेडकर

6. एक सिद्धांत को वास्तविकता के साथ संतुलित किया जाना चाहिए। ...जवाहरलाल नेहरू

7. महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं। ...अब्दुल कलाम

8. एक सज्जन व्यक्ति वह है जो अनजाने में भी किसी की भावनाओं को ठेस न पहुँचाए। ...आस्कर वाइल्ड

9. कुछ लोग जहाँ जाते हैं वहाँ खुशियाँ लाते हैं, और कुछ लोग जब जाते हैं, तब। ...आस्कर वाइल्ड

10. अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है जितना कि सीखने की इच्छा ना रखना। ...बेंजमिन फ्रैंक्लिन

11. अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है, जो धरातल को चमकदार और साफ़ कर देती है। ...महात्मा गाँधी

एक कप चाय

मीनाक्षी सक्सेना

दया, संवेदनशीलता मानव का पहला लक्षण है। थोड़ी सी संवेदना किसी की वेदना को कम कर सकती है या उसे ठीक कर सकती है। अक्सर हम कुछ ऐसी घटनाओं के रूबरू होते हैं जहां प्यासे पक्षियों को पानी पिलाते लोग दिखते हैं। प्यासे कोबरा के आगे पानी रखने वाले लोग भी नजर आते हैं। किसी भी जीव के प्रति सहानुभूति या संवेदनशीलता हर मनुष्य में नहीं होती लेकिन ऐसे लोग विरले ही मिल जाते हैं जो जाने अनजाने किसी के दुख कम करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। मैं जब शार आयी तो यहां पर मौजूद हरियाली और जंगल को देख उसके जीवों का खयाल आया और जैसे ही मैंने अपने क्वार्टर का चार्ज लिया तो चारो ओर पक्षियों व गिलहरियों की आवाजों से मन प्रफुल्लित हो उठा क्योंकि हैदराबाद में यह नजारा यदा कदा ही देखने को मिला करता था।

हमारे घर की खिड़की पर हर रोज एक कौवा मेहमान बनकर आता है। लेकिन पहले दिन जब वह खिड़की पर आकर बैठा तो हमने ध्यान नहीं दिया। अगले दिन देखा कि वह फिर आया मगर उसका एक पैर नहीं है। वह अलग-अलग आवाजें निकाल कर मुझे खिड़की पर बुलाता और पास जाने के बाद वह अजीब निगाहों से मुझे देखता जैसे पूछ रहा हो "अरे मूर्ख मेहमान हूँ कुछ खातिरदारी करो"। उस दिन मैंने उसे थोड़े से चावल दिए जिन्हें खाकर वह संतुष्ट हुआ और फिर उड़ कर चला गया। तबसे यह क्रम रोज के लिए शुरू हुआ और अब तक जारी है वह कौवा सबकुछ खा लेता है मगर ओट्स डालने पर मुझे कुछ देर घूरता है और फिर चला जाता है। लिहाजा मै समझ गई कि उसे वजन कम थोड़े न करना है जो ओट्स खाएगा...

मैंने यह घटना आपको इसलिए बताई कि हर जीव में प्राण होते हैं और हर जीव में संवेदना भी होती है। हम नहीं जानते कि किस रूप में और किस तरह हमारे संपर्क में कौन आता है? हर किसी के प्रति दया, ईमानदारी एवं प्रेम की भावना ही हमें लोगों से जोड़ती है स्वयं से भी हमें बांधकर रखती है। इसी संदर्भ में एक कहानी याद आती है जिसे मैं अपने पाठकों के साथ बांटना चाहती हूँ।

हमारे देश के सैनिक विषम परिस्थितियों में भी सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं। ऐसे ही 15 जवानों की एक टुकड़ी हिमालय के रास्ते सीमाओं की रक्षा के लिए अपना प्रयाण आरंभ करती है। कड़कती ठंड जिसमें तापमान कपड़ों के बीच हाथ की अंगुलियों को भी सुन्न कर दे, ऐसी ठंड जिसे आम आदमी झेल न सके... फिर भी हमारे सैनिक अपने कर्तव्य निर्वहन के लिए चले जा रहे थे और मन ही मन दुआ कर रहे थे कि किसी तरह उन्हें एक कप चाय का प्याला नसीब हो जाए मगर ऐसी कोई जगह नहीं दिख रही थी जहां उनको एक कप चाय का नसीब होता। लगभग दो से तीन घंटे चलते-चलते सभी सैनिक बुरी तरह थक गए थे और ठंड से परेशान भी हो गए थे अचानक उन्हें दूर एक छोटी सी चाय की टपरी दिखी। उत्साह से वे सभी तेज कदमों से वहां पहुँचे तो उस पर लटकते बंद ताले को देख निराश हो गए। मेजर अधिकारी ने कहा "सॉरी लड़को यहां तो ताला है" वे सभी निढाल से वहाँ बैठ गए तभी एक जवान बोला कि मालिक तो है नहीं और क्या पता वो वापिस आए या न आए मगर अंदर चाय बनाने का सामान

होगा तो हम सभी चाय स्वयं भी बना सकते हैं। अधिकारी इस बात से सहमत नहीं हुआ। वह सोचने लगा कि देश के रक्षक ऐसा करेंगे तो लूटपाट लगेगा, लेकिन ठंड से परेशान अपने जवानों की हालत देखकर उसने ताला तोड़ने का आदेश दिया। सभी जवान अंदर पहुँचे और चाय बनाकर पी साथ ही वहां रखे बिस्कुट भी खाए इस तरह जवानों ने अपनी ऊर्जा बढ़ाकर आगे चलने की तैयारी की। अधिकारी ने सोचा कि हमने इस चाय की टपरी के मालिक की अनुपस्थिति में उसका सारा सामान इस्तेमाल किया और दूध भी खत्म कर दिया है। यदि वह होता तो उसे पैसे दिए ही जाते लिहाज़ा उसने पर्स से कुछ हजार के नोट निकाले और चीनी के मर्तबान के नीचे रख दिए ताकि मालिक की नज़र उस पर पड़े और वह उन्हें रख ले। इसके बाद वे सभी वहां से चले गए।

समय गुजरता गया और लगभग 6 महीने बाद वही 15 जवानों की टुकड़ी उसी रास्ते से गुजरी तो देखा कि वही दुकान खुली है और मालिक भी मौजूद है। उन्होंने थोड़ा आराम करने के लिए दुकानदार से सभी के लिए चाय और बिस्कुट लाने को कहा। दुकान का मालिक 15 सैनिकों के रूप में आए ग्राहकों की आवभगत बड़े उत्साह के साथ करने लगा। सैनिक भी उससे बात करते हुए पूछने लगे कि इस वीराने में उसे इस छोटी सी दुकान से कितनी कमाई होती है और घर में कौन-कौन है? उसने कहा कि साब वीराना है मगर ऊपर वाले की दया से गुजर-बसर हो जाती है। सैनिक हंसने लगे और बोले फिर तेरा ऊपर वाला तुझे एक ही बार में अमीर क्यों नहीं बना देता क्यों तू हर रोज पैसों के लिए दुकान खोलकर ठंड में परेशान फिरता है। टपरी के बूढ़े मालिक ने कहा कि साब "ऊपर वाला उतना ही देता है जितने की हमें जरूरत होती है और मुसीबत के समय वही हमारे लिए इंतजाम भी कर देता है। सैनिक उसकी ये बातें सुनकर हंसने लगे और बोले कि क्या तेरा ऊपर वाला तेरी हर बात सुन लेता है, इस पर उस बूढ़े ने कहा कि साब मेरी तो सुन ही लेता है वर्ना कुछ दिनों पहले मैं अपने बेटे को न बचा पाता। एक जिज्ञासु सैनिक ने पूछा, ऐसा क्या हुआ भाई हमें भी सुनाओ, इस पर वह बूढ़ा कहने लगा कि 6 महीने पहले कुछ लोगों ने मेरे बेटे को पकड़ लिया और उसे खबरी समझ कर उससे कुछ सूचना निकलवाने के लिए बहुत मारा जबकि मेरे बेटे के पास कोई खबर थी ही नहीं, वह तो केवल जंगल तक जाकर लकड़िया चुन कर लाता ताकि हम चूल्हा जला सकें, वे लोग मेरे बेटे को मारपीट कर भाग गए। मुझे दुकान बंद करके उसे अस्पताल ले जाना पड़ा। मेरे पास बस 20 रुपए थे। अस्पताल में डॉक्टर ने कुछ दवाइयां और इंजेक्शन लाने के लिए जब मुझे भेजा तो मैं चिंतित अपने घर की तरफ यही सोचते आ रहा था कि मेरे पास तो पैसे है ही नहीं। अब क्या करूंगा, जैसे ही घर के पास पहुंचा तो क्या देखता हूं कि घर का ताला टूटा हुआ है। मैं परेशान हो गया कि शायद वे लोग मेरी दुकान भी लूट कर ले गए लेकिन भीतर घुसते ही मेरी नजर चीनी की बरनी पर पड़ी जिसके नीचे 1000 के कई नोट रखे थे। कोई फरिश्ता आया तो था वो उस ऊपर वाले का दूत बन कर ही तो आया था और मेरी मदद के लिए पैसे रखकर चला गया। यह सुनते ही सबने कमांडर की तरफ देखा मगर उसकी आंखों के इशारे ने उन सब को चुप कर दिया था। कमांडर के दिए हुए पैसों से उसके बेटे की जान बच गई। बूढ़ा मालिक बोला कि ऐसे ही फरिश्ते आकर हमारी मदद करते हैं साब इसलिए उस पर हमें भरोसा है। सैनिकों की टुकड़ी ने अपनी चाय खत्म की और बोले कि तुम्हारा फरिश्ता बड़ा चालाक है वह कभी तुम्हारे साथ तो कभी हमारे साथ रहता है। वहां से निकलते समय उन्होंने अपने कमांडर की नम आंखे देख कर जान लिया कि वह कितना संवेदनशील है और उस स्थिति में भी उसे इस चाय की टपरी के इस बूढ़े का ख्याल रहा। बिना किसी से कुछ कहे ही उसने अपनी जेब से इतने सारे पैसे उस बूढ़े के लिए रख दिए। एक कप चाय की कीमत चाहे जितनी भी हो लेकिन उस बूढ़े के बेटे की जान से अधिक तो नहीं थी। कमांडर के इस व्यवहार से सैनिक उसका और भी सम्मान करने लगे। ऊपर से सख्त और कटुभाषी कमांडर वास्तव में कितना ईमानदार एवं संवेदनशील है। यह एक कप चाय उन सभी सैनिकों के लिए अविस्मरणीय हो गयी। उस ठंड में ठिठुरते हुए ताला तोड़कर उस बूढ़े की टपरी में घुस कर चाय बनाने और उस शरारत को याद करके वे सभी हंसते-हंसते वहां से चले गए..."

सकारात्मकता - सफलता की कुंजी

डॉ. ए रामलिंगेश्वर राव

सृष्टि की सभी जीवराशियों में मनुष्य का एक विशेष स्थान और अस्तित्व है। अन्य जीवराशियों की तुलना में वह बहुत अच्छी तरह सोच- विचार करके अपने जीवन को सुखमय बनाने के आवश्यक निर्णय ले सकता है। अपनी मानसिक स्थिति, ज्ञान, सांगत्य, स्वस्थ्य और बुद्धि कुशलता के आधार पर सोच-विचार करके अपने जीवन की राह तय कर लेता है। वह अपनी क्षमता और मानसिक स्थिति के अनुसार सकारात्मक और नकारात्मक सोच-विचार भी कर सकता है। मनुष्य की तरक्की और उत्थान उसके सोच-विचारों की श्रेणी के अनुसार प्रगति के मार्ग पर चलते रहते हैं। हर व्यक्ति के जीवन में सकारात्मकता का बहुत योगदान होता है। यह सफलता की कुंजी है। जो व्यक्ति सकारात्मकता को अपनाता है वही जीवन में आगे बढ़ सकता है और जीवन के हर पल सफलतापूर्वक निर्णय ले सकता है। जीवन में सामने आने वाली हर एक घटना या स्थिति को सकारात्मक रूप में लेने से जीवन में अद्भुत बदलाव हम देख सकते हैं। चाहे वह लाभ हो या नुकसान, दुःख हो या सुख, कष्ट हो या आनंद हर स्थिति को समान रुप से देखना और समान रूप से उन स्थितियों को जीवन में आह्वान करना सकारात्मक व्यक्ति के लिए बाएँ हाथ का काम बन जाता है। सकारात्मकता जीवन में उत्साह भरती है तो नकारात्मकता जीवन को निस्तेज और निस्सार बना देती है।

सकारात्मक और नकारात्मक व्यक्ति का स्वभाव और उसके सोच - विचार इस उदाहरण से बता सकते हैं। चित्र में जो दिख रहा है उस प्रकार के गिलास को दिखाने से नकारात्मक व्यक्ति कहता है कि गिलास में आधा ही पानी है। वही गिलास को देखकर सकारात्मक व्यक्ति बहुत संतृप्ति के साथ बताता है कि आधा गिलास पानी से भरा है। एक महान व्यक्ति ने बताया कि आज के लोग अपने दुःख से दुःखी नहीं दूसरों के सुख से दुःखी है। इसका कारण लोगों में व्याप्त नकारात्मक भावनाएँ है। नकारात्मकता मनुष्य को लोभी, स्वार्थी, कंजूस और ईर्ष्यालु बना देता है। उसकी बुद्धि का नाश करने के साथ - साथ उसकी सृजनात्कता, आशा और सपनों पर पानी फेर देता है। सकारात्मक व्यक्ति हर एक घटना या स्थिति को अपनी भलाई के लिए प्राप्त एक मौका मानकर स्वीकारता है उसे अनुकूल बनाकर उससे लाभ पाने के लिए प्रयत्न करता है।

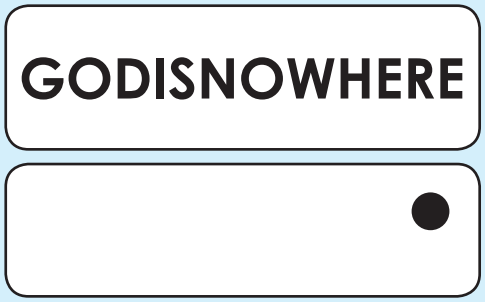

अपनी दृष्टि के अनुसार ही दुनिया दिखाई देती है। इसलिए ही कहा गया है कि आपकी दृष्टि ही आपकी सृष्टि है। इस चित्र को देखिए। वह आपकी दृष्टि के अनुसार दिखाई देता है। सकारात्मक व्यक्ति को वह GOD IS NOW HERE और नकारात्मक व्यक्ति को वह GOD IS NO WHERE के रूप में दिखाई देता है। एक ही वाक्य दो रूपों में दिखाई देना, दृष्टि के अनुसार ही हमारी सृष्टि होती है.. सत्य साबित करने के लिए एक प्रशस्त उदाहरण बनता है।

अकसर हम व्यक्तित्व विकास का शिक्षण देते समय यह चित्र सभी को दिखाते हैं और पूछते हैं कि उसमें आपको क्या दिखाई दे रहा है? तुरंत नकारात्मक व्यक्ति बताता है कि एक काला स्पॉट दिख रहा है। उसी समय सकारात्मक व्यक्ति बताता है कि काले स्पॉट के पीछे विस्तार रूप से फैला सफेद क्षेत्र ही दिखाई दे रहा है। नकारात्मक व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति में रहने वाली छोटी सी बुराई को उजागर करके व्यक्ति को मानसिक तौर पर सताने की और व्यक्तित्व का हनन करने की कोशिश करता है। सकारात्मक व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति में रहने वाली बुराई को न देखकर उसके साथ रहने वाली अच्छाई को उजागर करने की कोशिश करता है। व्यक्ति की सकारात्मकता समाज में व्यक्ति का सम्मान बढ़ाता है और मैत्री भाव फैलाता है। सच्चा इंसान और अच्छा नागरिक बनने के लिए सबको सकारात्मक बनना अत्यंत आवश्यक है। सकारात्मकता से समाज में शांति की स्थापना होती है। लोगों के बीच सद्भावना फैलती है और सदाचार व्याप्त होता है। सकारात्मक व्यक्ति को हर जगह सच्चाई ही दिखती है और एसा इनसान हर व्यक्ति के साथ मानवता दिखाता है। सकारात्मकता सफलता की कुंजी है। समाज की प्रगति और उन्नति के लिए हम सबको नकारात्मकता को छोड़कर सकारात्मकता को अपनाना चाहिए।

याद आता है बचपन

तेजस
सुपुत्र
श्री कमल दीप रस्तोगी

आज जब लिखने बैठा मैं जिंदगी का तजुर्बा
तो चेहरे पर मुस्कान सी आ गयी।
याद आयी जब वो बचपन की बातें
तो मानो बेजान शरीर में जान सी आ गयी।।

वो भी क्या दिन थे जब स्कूल में बस खेलना था,
आज की तरह थोड़ी न किताबों को झेलना था।
है माना सवेरे उठने में संघर्ष बड़ा तगड़ा था,
स्कूल नही जाऊंगा, पापा से यही झगड़ा था।।

ना जाने कब वो पांच साल का बच्चा इतना बड़ा हो गया,
उसके अंदर का बचपना न जाने कहाँ खो गया,
पहले रो दिया करता था माँ के आंचल से लिपट कर,
अब तो सिर्फ एक बेजान तकिये का सहारा है।
ए बचपन तू लौट आ, तेरे संग बहुत कम वक्त गुजारा है।।

बाप की उंगली पकड़े कई साल हो गए,
सिर पर बैठकर जो काले पकड़ता था
वो सफेद बाल हो गए।
एक बार फिर से घोड़ा बन जाओ पापा,
नटखट राजकुमार बनें हम
यूँ तो बड़े बेहाल हो गए॥

पानी में चाँद दिखा देती थी माँ
अब तो दिन में तारे हैं दिखाई पड़ते।
लाड़ बहुत किया करती थी दादी
दादा कभी-कभी बेबात जड़ दिया करते॥
उन सुनहरी यादों को कहाँ ले जाऊंगा
मैं मासूम बचपन न भूल पाऊंगा॥

अपना देश-भारत

पंकज आनंद

अपना देश-भारत है महान,
बढ़ती ही जाये, इसकी शान,
कोई कहता भारत, कोई कहता हिन्दुस्तान।

यहाँ चार धर्म हैं, होते,
हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
सभी एक-दूसरे से मिलजुल के रहते।
कभी किसी से भेदभाव नहीं करते।

अपना देश-भारत है निराला,
यहाँ गिरजाघर, गुरुद्वारा, मस्जिद और शिवाला।

अपना देश कृषि प्रधान,
अन्नपूर्णा है, यहाँ के किसान,
किसान यहाँ के हैं देवता,
कोई नहीं इनके जैसा मेहनती होता।

बहुत ही आकर्षक है, भारतीय संस्कृति,
जो सभी को अपनी ओर खींचती,
सभी को प्रीत है सिखलाती,
आनेवाले सैलानियों को अतिथि देवो है कहती।

आर्यभट्ट, विवेकानंद जैसे कई महापुरुष हैं, जन्मे,
जिनके बिना गणित है, अधूरा।
अपना-देश-भारत है महान,
जिसने दिया शून्य का ज्ञान।

देशमलब का खोज यहाँ ही होता,
तभी चाँद पर जाना संभव हो पाता,
इसलिए तो अपना देश सोने की चिड़िया कहलाता।
और अंत में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ-

अपना देश-भारत है महान,
बढ़ती ही जाए इसकी शान।
जय हिंद!

माँ का प्यार

पी. यशश्विनी
सुपुत्री
श्री पी लक्ष्मण कुमार

माँ का प्यार अविस्मरणीय और पवित्र है। हमारे जीवन में कई लोग हमें प्यार देते हैं लेकिन यह माँ के प्यार के बराबर नहीं होता है। मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मुझे ऐसी माँ मिली है। मेरे लिए माँ एक अच्छी दोस्त की तरह है। जब मैं खुश होती हूँ तो मेरी माँ मेरे साथ खुशियाँ बाँटती है और जब मैं दुखी होती हूँ तब मेरे दुख को बाँटती है और मुझे सांत्वना देती है। मेरी माँ हर चीज में मेरा साथ देती है। मेरी माँ हमेशा मुझे अपनी संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, बड़ों का आदर करना, सदाचार, शिष्टता आदि विषयों पर जोर देती है। मेरे व्यक्तित्व को निखारने में सदा प्रयत्नशील रहती है। मेरी माँ मुझे बहुत प्यार करती है इसलिए मैं अपनी माँ को बहुत पसंद करती हूँ। मेरी माँ के बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ। इस दुनिया में अगर कोई दिलदारी पसंद और विशिष्ट अंग कोई है तो वह केवल मेरी माँ का प्यार ही है।

इस दुनिया में माँ से बढ़कर और कोई व्यक्तित्व नहीं होता है। माँ से मैं तहेदिल से प्यार करती हूँ। आप भी माँ से प्यार कीजिए और माँ का आशीर्वाद पाइये।

एक खूबसूरत शहर हैदराबाद की मेरी यात्रा

दीपशिखा पात्र
सुपुत्री
श्री स्वपन कुमार पात्र

हैदराबाद शहर भारत के तेलंगाना राज्य में स्थित है। मैं यहाँ अपने परिवार के साथ घूमने गयी थी। मैंने कई खूबसूरत जगहें देखीं, तरह-तरह के खाने खाए और खूब मस्ती की। सबसे पहले हमने महान स्मारक चारमीनार की यात्रा की लेकिन दुर्भाग्य से यह बंद था क्योंकि हम देर से आए इसलिए हमने इसे सिर्फ बाहर से देखा। वहाँ पर कई सारे स्टॉल थे जहाँ से हमने बहुत सारी चीजें खरीदीं।

अगले दिन हमने गोलकोंडा किले की यात्रा की। यह एक अद्भुत ऐतिहासिक स्मारक है। किले के ऊपर तक पहुँचने के लिए बहुत सारी सीढ़ियाँ थीं, जहाँ से पूरे हैदराबाद शहर का विहंगम दृश्य देख सकते हैं। बाद में हम एनटीआर गार्डन गए। इस गार्डन में कई सारे रंग बिरंगे फूल, पेड़ झाड़ियाँ और कुछ फव्वारे थे हमने यहाँ कई तस्वीरें लीं। वहाँ पर हॉरर हाउस, टॉय ट्रेन जैसी कई सवारियां थीं।

फिर हमने हुसैन सागर झील के नाम से जानी जाने वाली झील को भी देखा। यह झील के बीच में बनी गौतम बुद्ध की प्रतिमा बहुत सुंदर लग रही थी।

हैदराबाद की मेरी पूरी यात्रा का सबसे अच्छा हिस्सा गोलकोंडा किला था।

मुझे अपनी हैदराबाद की यात्रा बहुत अच्छी लगी और जीवनकाल में, मैं एक बार फिर हैदराबाद जाना चाहती हूँ।

ताजमहल की सैर

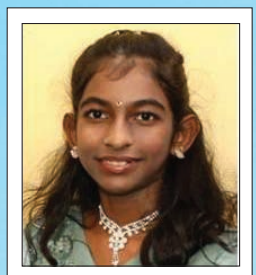

अभिलाषिनी के सुपुत्री
श्री कार्तिगई सेल्वम

किसी ऐतिहासिक स्थल की सैर करना एक मनोहारी अनुभव है। पिछली सर्दियों में हमने ताजमहल देखने की योजना बनायी। कुछ लोगों के अनुसार यह पत्थर पर लिखी कविता है। आगरा पहुँचते ही मैंने ताजमहल देखने का मन बनाया और उस ओर चल पड़ी। कला एवं वास्तुशिल्प का यह नमूना प्रसिद्ध मुगल शासक शाहजहाँ द्वारा अपनी बेगम मुमताज महल की याद में बनाया गया।

यह ऐतिहासिक स्मारक शाहजहाँ एवं मुमताज के प्यार की निशानी है। जैसे ही इस इमारत के प्रांगण में प्रवेश करते हैं मुख्य मार्ग के दोनों ओर लगे सरू के लम्बे-लम्बे वृक्ष स्वागत में खड़े दिखते हैं। यह मार्ग प्रसिद्ध मुगल शासक शाहजहाँ द्वारा अपनी बेगम मुमताज महल की याद में बनाया गया। चांदनी रात में यमुना नदी के पानी में ताजमहल का प्रतिबिम्ब देखते ही बनता है। हजारों लोग इस कलाकृति को देखने देश-विदेश से आते हैं।

इन सैकड़ों वर्षों में ताजमहल समय एवं मौसम की सभी परीक्षाओं की कसौटी पर खरा उतरा है। इसका सौन्दर्य एवं गरिमा अभी भी बरकरार है। बहुत से कवियों विचारकों एवं लेखकों ने ताजमहल की प्रशंसा में गुणगान किये हैं। ऐसी आशा की जाती है कि आने वाले वर्षों में भी यह विश्व के महान आश्चर्यों में अपना स्थान बनाये हुए है।

आभार

शेक ज़रीना

आभार प्रकट करने का कार्य सिर्फ इंसान ही कर सकता है। इस सृष्टी में ना जाने कितने ही जीवों को बनाकर जीने के लिए छोड़ा गया है, लेकिन सब से अत्युत्तम जीव हम मनुष्य जाति ही हैं। कहने का मतलब है, सिर्फ एक इंसान को ही अपने भाव व्यक्त करने की आज़ादी मिली है। हम इनसानों को, चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, सभी को यह वरदान मिला है।

एक बार, एक महाराज अपनी वनयात्रा के दौरान अपने समूह से बिछड़ कर कहीं भटक जाते हैं। धीरे धीरे शाम होने लगती है और उस सुनसान जंगल में खोजने पर एम छोटी सी कुटिया दिखाई देती है। राजा उस में बसे प्रौढ़ व्यक्तियों की अनुमति से अंदर जाता है और वे लोग राजा की वेश-भूषा देखकर पहचान कर, उनको अपनी कुटिया मे उपस्थित सभी सुविधाओं का प्रबन्ध करते है। थोड़ा समय बीतने के बाद वे लोग राजा को खाना भी परोसते हैं। भूख व प्यास के कारण राजा जल्दी-जल्दी खालेता है, ठीक उसी समय उन प्रौढ़ व्यक्तियों का काम राजा को चकित कर देता है। वे लोग अपने हाथ आसमान की ओर उठाकर प्रार्थना करने लगते हैं, जिसमें सारी चीज़ों का धन्यवाद प्रकट होता है और वह आभार यह होता है कि,

1. ज़िंदगी में एक और रोज़ देकर जीवित उठाने का,
2. शरीर का प्रत्येक अंग जैसे, ऑंख, नाक, मुह से लेकर पैरों तक सही सलामत रखने का,
3. उस दिन उन्हे प्राप्त प्रत्येक वस्तु जैसे हवा से लेकर भोजन तक, ऐसे न जाने किन किन बातों की और अंत में,
4. एक मेहमान को खाना खिलाने की क्षमता दिलाने की।

अंततः वह यह भी विनती किए बिना नही रहता कि, ठीक, उसी तरह अगले दिन भी ज़िंदगी में चलने का भाग्य मिले। राजा यह सब देख कर शर्मिंदा हो जाता है और सोचने लगता है कि अपने आप को सब से ऊंचा मान कर मैं जिस गर्व का एहसास करता हूं वह व्यर्थ है। उसी पल से वह अपने आप को इस सृष्टि का सबसे छोटा प्राणी मानने लगता है तथा प्रत्येक दीन के लिए अपना आभार प्रकाट करते हुए जीवन देने वाले का आभार प्रकट करते हुए जीवन की नई शुरूआत करता है।

सीख: ज़िंदगी का हर एक लम्हा भगवान की देन है और उसके लिए हमें हर पल आभारी होना चाहिए।

गणतंत्र दिवस

स्वच्छता प्रतिज्ञा

स्वच्छता रैली

आजादी का अमृत महोत्सव - स्पेस ऑन व्हील्स

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस/सप्ताह

राष्ट्रीय अग्नि सुरक्षा दिवस

अंबेडकर जयंती

युवा विज्ञानी कार्यक्रम (युविका)

स्कूल के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के विविध पहलुओं को समझने के लिए इसरो ने वार्षिक युवा विज्ञानी कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम के दौरान स्कूल के बच्चों को अंतरिक्ष अन्वेषण की गतिविधियों के क्षेत्र में आधारभूत जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार किया। ये बच्चे हमारे राष्ट्र के भावी निर्माता हैं। युवा विज्ञानी कार्यक्रम उन बच्चों के लिए है जिन्होंने आठवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी कर ली है तथा ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में पढ़ रहे हैं। वर्ष 2022 में 28 राज्यों एवं 8 संघ शासित क्षेत्रों से कुल 153 छात्रों ने इसमें भाग लिया। दो सप्ताह के इस कार्यक्रम में बच्चों को इसरो के पांच केन्द्रों में वितरित किया गया जैसे उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र (एनई-सैक), राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र (एनआरएससी), हैदराबाद, अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र (सैक), यू आर राव उपग्रह केन्द्र (यूआरएससी), बेंगलुरू एवं विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र (वीएसएससी), तिरूवनंतपुरम। सभी छात्रों को अंततः भारत के स्पेसपोर्ट कहे जाने वाले केन्द्र सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र (एसडीएससी), श्रीहरिकोटा में उपग्रह प्रक्षेपण से जुड़े क्रियाकलापों के बारे में जानकारी जुटाने का अवसर भी दिया गया। यह कार्यक्रम 16 मई से 28 मई 2022 तक आयोजित किया गया जिसका समापन एसडीएससी शार परिसर में हुआ।

विश्व पर्यावरण दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

स्वतंत्रता दिवस

अध्यापक दिवस

सतीश धवन मेमोरियल दिवस

गांधी जयंती

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह

एसडीएससी शार

पुट्टपर्ति

करैकाल

कटक

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह

गुंटूर

वेल्लूर

विजयनगरम

चेन्नै

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह में पहियों पर अंतरिक्ष (स्पेस ऑन वील्स) का प्रदर्शन

राष्ट्रीय एकता दिवस

बाल दिवस

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

स्वच्छता पखवाड़ा पुरस्कार

अंतरिक्ष विभाग ने एसडीएससी शार परिसर वर्ष 2021 के लिए सर्वश्रेष्ठ केन्द्र का पुरस्कार दिया।

दक्षिण भारत मोटर साइकिल अभियान

प्रज्वल के प्रवेशांक के श्रेष्ठ 3 पुरस्कृत लेख

एक रोमांचक अनुभव

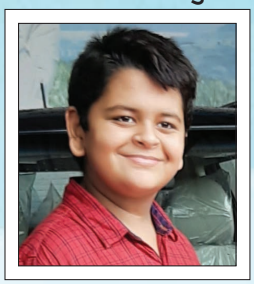

श्रेयान सक्सेना
सुपुत्र
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना

मेरी मौत के बाद (कविता)

श्री सदानंद हरिभाऊ पाटील
पीसीआर रासायनी

कदम बढ़ाते जाना है

डॉ. अतुल कुमार दूबे
अध्यापक, अंतरिक्ष
केन्द्रीय विद्यालय शार

वार्षिक हिंदी प्रोत्साहन योजना (सोलिस)

सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र शार में वर्ष 2021-22 के दौरान सोलिस के अंतर्गत वार्षिक हिंदी प्रोत्साहन योजना में भाग लेने वाले विजेता।

वार्षिक हिंदी प्रोत्साहन योजना 2021-2022
Annual Hindi Incentive Scheme 2021-2022

प्रथम पुरस्कार
विभांशु कुमार
कनि.वै.सहायक

प्रथम पुरस्कार
कुलदीप शाक्य
तकनीशियन-डी

प्रथम पुरस्कार
विकास कुमार
वैज्ञा./अभि.-एसडी

द्वितीय पुरस्कार
दिवेश कुमार देवेंद्र
सहायक

द्वितीय पुरस्कार
टी अनिल कुमार
वरि. सहायक

तृतीय पुरस्कार
विकास कुमार शर्मा
वरि. सहायक

तृतीय पुरस्कार
संजय बास्के
सहायक

तृतीय पुरस्कार
दुंपा वी आर रेड्डी
सहायक

तृतीय पुरस्कार
टी एम कविता
वरि. सहायक

तृतीय पुरस्कार
समीर कुमार प्रधान
सहायक

तृतीय पुरस्कार
श्रावंती मेजुरू
सहायक

तृतीय पुरस्कार
जी. बालसुब्रमणियन
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

प्रथम पुरस्कार / First Prize - Rs. 5000/-
द्वितीय पुरस्कार / Second Prize - Rs. 3000/-
तृतीय पुरस्कार / Third Prize - Rs. 2000/-

पात्रता / Eligibility:-
हिंदी में न्यूनतम 10,000 शब्द
Minimum 10,000 words in Hindi

सायोनारा

डॉ. बी मुनिरतिनम
20.11.87 - 31.01.22

श्री वीर्राजु ए
26.12.83 - 31.01.22

श्रीमती अत्च्युता कुमारी एन
30.12.19 - 31.01.22

श्री श्रीनिवास राव एन
06.04.84 - 28.02.22

श्री मुजीबुर रहमान शेक
31.05.99 - 28.02.22

श्री मंगपति कामेश्वर राव
17.04.13 - 28.02.22

श्री एन कुमार स्वामी
01.12.83 - 30.04.21

श्री पेज्जै गोविंद स्वामी
19.04.13 - 28.02.22

श्रीमती अनसूया एम आर
16.03.87 - 30.04.22

श्री गोपाल चंद्र सेन
03.09.82 - 31.03.22

श्री सुब्बा राव एन
03.05.93 - 31.03.22

श्री कृष्णकुमार पी
04.05.84 - 30.04.22

श्री नारायणन के ए
05.09.88 - 30.04.22

श्रीमती रेवती एल
05.01.84 - 30.04.22

श्री मुरुगन एम
14.08.87 - 30.04.22

श्री बालैय्या पी
17.07.97 - 30.04.22

श्री पोंगिनन के
03.03.86 - 31.05.22

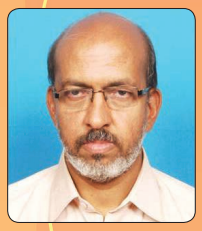

श्री जोस सी एल
16.04.84 - 31.05.22

श्री राममोहन यू एल
24.04.85 - 31.05.22

श्री मृत्युंजय राजु पी
17.02.87 - 31.05.22

श्री दयालन वी
28.12.87 - 31.05.22

श्री वेंकटेश्वर्लु जी
01.06.99 - 31.05.22

श्री मुथुसामी एच
09.03.84 - 31.05.22

श्री राधा रेड्डी चित्तडि
08.11.88 - 31.05.22

श्री सैयद मसूद हुस्सैन खादरे
27.09.93 - 30.06.22

श्री पद्मनाभम टी जी
14.03.88 - 30.06.22

श्री दग्गुमल्लि चंद प्रकाश
21.05.08 - 30.06.22

श्रीमती जयम्मा एस
20.01.87 - 30.06.22

श्री नारायण रेड्डी एम
06.08.99 - 30.06.22

श्रीमती बेबी सरला एम
31.07.85 - 31.07.22

सायोनारा

श्री बाबू राव पी
13.07.87 - 31.07.22

श्री भरत विराट चौधरी
01.04.18 - 31.07.22

श्री गुनपति गंगैय्या
17.04.13 - 31.07.22

श्री सुब्बा राव बी वी
22.01.87 - 31.08.22

श्री वुल्ची श्रीधर
10.05.85 - 31.08.22

श्री वेंकटा रामजोगी ई
17.05.85 - 31.08.22

श्री शेषु एस
24.04.85 - 31.08.22

श्री पुरुषोत्तम बाबु जी
08.03.94 - 31.08.22

श्री संजय काशीनाथ घोदिंदे
01.04.18 - 31.08.22

श्रीमती पद्मा बी
30.03.00 - 31.08.22

श्री अप्पा राव यू
18.02.82 - 30.09.22

श्रीमती पुलिमि पद्मावतम्मा
27.09.95 - 30.09.22

श्री राम प्रसाद पी
30.06.88 - 31.10.22

श्रीमती फातिमाबी शेक
06.06.94 - 31.10.22

श्री मुनुस्वामि रेड्डी ए
06.08.99 - 31.10.22

श्री वेंकटेश्वरा प्रकाश आर
22.03.89 - 30.11.22

श्री वर्गीस एन जे
06.04.87 - 30.11.22

श्री वेंकटैय्या के
09.01.84 - 31.12.22

श्री ए रामलिंगेश्वर राव
01.04.85 - 31.12.22

आप सभी के भावी दिन शुभ एवं मंगलमय हो

" नव वर्ष की शुभकामनाएं "

हमारे प्रशंसक..

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
आंबावाड़ी विस्तार डाकघर
अहमदाबाद - 380015 (भारत)
ई-मेल E-mail:neelu@sac.isro.gov.in

Government of India
Department of Space
Space Applications Center
Ambawadi Vistar Post Office
Ahmedabad – 380 015 (India)
फोन Phone: 079-26913280

अंउकें/हिं.पु./पावती/7.9/22 — 20 जुलाई, 2022

सेवा में,
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना
उप निदेशक (रा.भा.)
सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार
श्रीहरिकोटा, आं.प्र. - 524124

विषयः एसडीएससी शार की गृह पत्रिका 'प्रज्वल' के प्रवेशांक की प्राप्ति - के संबंध में।

महोदय/ महोदया,
आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'प्रज्वल' का प्रवेशांक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्यान्वयन और अन्य समाचारों की पत्रिका में सुंदर प्रस्तुति की गई है। आशा करते हैं कि आपके कार्यालय की पत्रिका; राजभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन को इसी प्रकार नया आयाम देती रहेगी। पत्रिका का मुद्रण अत्यंत आकर्षक एवं मनोरम है।

'मेरी मौत के बाद', एक 'रोमांचक अनुभव-स्कूबा डाइविंग', 'मौन', 'रेल गाड़ी की शान', तथा 'आंख का तारा' आदि रचनाएं रुचिकर एवं सराहनीय हैं।

हिंदी गृह-पत्रिका के प्रवेशांक के सफल प्रकाशन हेतु बधाई। आशा है इसके आगामी अंक पाठकों को लाभान्वित करते रहेंगे।

धन्यवाद,

भवदीया,
(नीलू सेठ)
उप निदेशक (रा.भा.)

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन — Indian Space Research Organisation

---

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
बालानगर, हैदराबाद – 500037,तेलंगाना, भारत
टेलिफोन : 04023879572-23879573-23879686
फैक्स : 04023878648

Government of India
Department of Space
National Remote Sensing Centre
Balanagar, Hyderabad - 500037, Telangana, India,
Telephone: 04023879572-23879573-23879686
Fax: 04023878648

सं एनआरएससी5.9 (विविध) — दिनांक-25.10.2022

सेवा में,
समूह निदेशक,
एमएसजी एवं अध्यक्ष, प्रज्वल
सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र , शार
श्रीहरिकोटा रेंज डाक घर – 524124
एसपीएसआर नेल्लोर जिला, आं.प्र.

महोदय,
विषय: एसडीएससी, शार की हिंदी गृह पत्रिका 'प्रज्वल' के प्रवेशांक की पावती-के संबंध में...

आपके पत्रांक एसएसीएफ/पीजीए/हिं.अ.12-2022, दिनांक 08.07.2022 के माध्यम से प्रेषित गृह पत्रिका 'प्रज्वल' के प्रवेशांक प्राप्त कर मन प्रफुल्लित हुआ, जिसका इंतजार मुझे भी वर्षों से था। यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि 'प्रज्वल' पत्रिका के प्रवेशांक का विमोचन श्री एस सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव अंतरिक्ष विभाग के कर-कमलों द्वारा किया गया। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख तथा कविताएं सूचनाप्रद एवं रोचक हैं। विशेष कर- प्रेक्षेपण परिसर तंत्र, अंतरिक्ष का निवास- कितना आम कितना खास, आइये घूमें येरकाड, एक रोमांचक अनुभव-स्कूबा डाइविंग, मौन, जापान - एक अद्भुत देश आदि लेख उल्लेखनीय हैं।

आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान भारतीय स्पेसपोर्ट से प्रकाशित 'प्रज्वल' निरंतर प्रज्वलित रहे और अपने अंतरिक्ष-ज्ञान के प्रकाश से भारतीय जनमानस को प्रकाशित करती रहे...। 'प्रज्वल' संपादक मंडल को भगीरथ प्रयास के लिए बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं...

सादर,

भवदीय
(राम-प्रकाश यादव)
सहायक निदेशक (रा.भा.)

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन — Indian Space Research Organisation

---

सं. 8/1/2/2022-हिं.
भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
***

अंतरिक्ष भवन,
न्यू बी.ई.एल. रोड,
बेंगलुरु - 560 094
दिनांक : 27 जुलाई 2022

सेवा में,
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना
उप निदेशक (रा.भा.)
सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार
श्रीहरिकोटा – 524 124

महोदया,
विषय : एस.डी.एस.सी. शार की गृह पत्रिका 'प्रज्वल' के प्रवेशांक की पावती एवं प्रतिक्रिया के संबंध में।

*****

दिनांक 11 जुलाई 2022 के पत्र सं.एसडीएससी/हिं.अ./प्रज्वल/2022 द्वारा प्रेषित एस.डी.एस.सी. शार की गृह-पत्रिका **"प्रज्वल"** के प्रवेशांक की एक प्रति विभाग में प्राप्त हुई है। पत्रिका के पहले प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं लेखकगण को बहुत-बहुत बधाई।

इस पत्रिका में विविध प्रकार की साहित्य विधाओं में सरल एवं बोधगम्य हिंदी का प्रयोग किया गया है। विषयानुरूप तकनीकी, कार्यालयीन एवं राजभाषा से संबंधित गतिविधियां अत्यंत लाभकारी एवं सूचनाप्रद है। पत्रिका की कुछ कृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिनमें **"बिरसा मुंडा – एक महानायक"** लेख, भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के महानायकों की वीरगाथा, **"ई-कचरा"** लेख, इलेक्ट्रॉनिक कचरे के प्रति जागरूकता, तथा **"मौन"** लेख, परिस्थितिवश मौन धारण करने के लाभ के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट करवाते हैं।

कुल मिलाकर, पत्रिका में अनेक विषयरूपी रंगों का उपयोग करके इसे बहुत रोचक बनाया गया है। आशा है कि पत्रिका के आगामी अंक भी पाठकों के ज्ञानार्जन हेतु इसी तरह प्राप्त होंगे।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
27/7
(एम. जी. सीमा शेखरन नायर)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

प्रतिलिपि:
1. अपर सचिव, अं.वि.
2. निदेशक, एस.डी.एस.सी. शार, श्रीहरिकोटा

महोदया,

एस.डी.एस.सी. शार की गृह-पत्रिका 'प्रज्वल' के प्रवेशांक की डिजिटल प्रतिप्राप्त हुई, जिसके लिए आपको एवं आपकी समस्त टीम को हार्दिक बधाई।

"इस पत्रिका में केंद्र की तकनीकी एवं राजभाषा गतिविधियों काउल्लेख करते हुए विभिन्न समारोहों से संबंधित रोचक एवं सूचनाप्रद जानकारीप्रदान की गई है। पत्रिका में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार एवं इसरो केभावी मिशन 'गगनयान'पर रोचक जानकारी दी गई है। कुल मिलाकर, विविध विषयरूपीरंगों को शामिल करते हुए पत्रिका को बहुत रोचक रूप दिया गया है ।पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं सभी लेखकों को बहुत-बहुत बधाई।"

सादर,

शत्रुघ्न
सहायक निदेशक (रा.भा.)
इसरो मुख्यालय

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार, श्रीहरिकोटा

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन